لَكَ خُشَّعُ اِلٰهِی فَاَنْشِرْنِی عَلٰی دِینِ اَحْمَدٍ مُنِیبًا تَقِیًّا قَانِتًا

जब तलक बंदे रहें महवे मुनाजातो दुआ। सहा०rफा अलविया में एक और मनज़ूम मुनाजात

لَكَ اَخْضَعُ وَلَا تَحْرِمَنِّی یَا اِلٰهِی وَسَیِّدِی شَفَاعَتَهُ الْكُبْرٰی

अमीरूल मोमिनीन (अ) से नक़्ल की गई है। जिसका आगाज़ या सामेउद दोआ से होता है

فَذَاكَ الْمُشَفَّعُ وَصَلِّ عَلَیْهِمْ مَا دَعَاكَ مُوَحِّدٌ وَنَاجَاكَ

मगर क्योंकि इसमे कुछ मुश्किल शब्द और दूश्वारे लुगात हैं लेहाज़ा बिना बर इख़्तेसार इस

اَخْیَارٌ بِبَابِكَ رُكَّع

स्थान पर उनका ज़िक्र नहीं किया जा रहा है।

अमीरूल मोमिनीन (अ) की मुनाजात के तीन कलेमात

اِلٰهِی كَفٰی بِیْ عِزًّا اَنْ اَكُونَ لَكَ عَبْدًا وَ كَفٰی بِیْ فَخْرًا اَنْ

ख़ुदाया मेरी इज़्ज़त के लिए ये काफ़ी है के मै तेरा बंदा हूँ। और मेरे फ़क्र के लिए ये काफ़ी है तू

تَكُونَ لِیَ رَبًّا اَنْتَ كَمَا اُحِبُّ فَاجْعَلْنِی كَمَا تُحِبُّ

मेरा रब है। मालिक तू ऐसा है जैसा मै चाहता हूँ। अब मुझे भी वैसा ही बना दे जैसा तू चाहता है।

भाग - 2

महीनों के आमाल

महीनों के आमाल और फ़ज़ाएल, नौरोज़ के आमाल और रूमी महीनों के आमाल। इस अध्याय में कुछ वर्ग हैं।

वर्ग1-

रजब

वाज़ेह रहे के रजब शाबान इन्तेहाई बाबरकत महीने हैं और उनके फ़ज़ाएल में बेशुमार रिवायात वारिद हुई हैं। रसूले अक्रम (स) से यहाँ तक नक़्ल किया गया है के माहे रजब ख़ुदा का अज़ीम महीना है और यह वो महीना है जिसकी फ़ज़ीलत को कोई महीन नहीं पा सकता है।

और जिसमें काफ़िरों से जेहाद को भी हराम कर दिया है।

रजब ख़ुदा का महीना है, शाबान मेरा महीना है और माहे रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। अगर कोई व्यक्ति माहे रजब में रोज़ा रखे तो परवरदिगार की ख़ुशनूदी का हक़दार होगा और उसके गज़ब से महफ़ूज़ हो जाएगा और उसके लिए जहन्नम के दरवाज़े बंद हो जाएंगे।

इमामे मूसा काज़म (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति माहे रजब में एक दिन रोज़ा रखेगा जहन्नम की आग उससे एक साल के फ़ासले तक दूर हो जाएगी। और जो व्यक्ति तीन दिन रोज़ा रखेगा उसके लिए जन्नत लाज़म हो जाएगी। उसके अलावा फ़रमाया के रजब जन्नत में एक नहर का नाम है जो दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा- माहे रजब में एक दीन रोज़ा रखने वाला भी उस नहर से सैराब किया जाएगा।

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल किया गया है के रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया है के माहे रजब मेरी उम्मत के इस्तेग़फ़ार का महीना है। लेहाज़ा इस महीने में खुदा से ज़्याया से ज़्यादा मग़फ़ेरत मांगो के ख़ुदा बहुत बख़्शनेवाला और मेहेरबान है। और रजब को असब इस लिए कहा जाता है के इस महीने

में उम्मत पर रहमते परवरदिगार की बारिश होती है। लेहाज़ा मुसलसल कहे: मै अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ और मेरी तौबा क़ुबूल होने की दुआ माँगता हूँ। इब्ने बाबवय ने मोतबर सनद के साथ इब्ने सालिम से रिवायत की है के मैं आख़िरे माहे रजब में इमाम जाफ़र सादिक़ (अ) की ख़िदमत में हाज़र हुआ। जबके सिर्फ़ चंद दिन बाकी रह गए थे। तो हज़रत ने मुझे देखकर फ़रमाया के क्या तुमने इस महीने में रोज़ा रखा है? मैंने कहा नहीं। आपने कहा: कितना सवाब तुमने खो दिया जिसकी मिक़दार को ख़ुदा के अलावा और कोई नहीं जानता है। यक़ीनन यह महीना वह है जिसको अल्लाह ने दूसरे महीनों पर फ़ज़ीलत दी है। उसकी हुरमत को अज़ीम बनाया है और इस माह में रोज़ा रखनेवालों की करामत को अपने लिए वाजिब क़रार दिया है। तो मैंने कहा: ऐ फ़रज़ंदे रसूल, अगर बाक़ी दिनों में रोज़ा रख लिया जाए तो क्या इसमें से कोई सवाब हासिल हो जाएगा? फ़रमाया सालिम जो व्यक्ति माहे रजब के आख़र में एक दिन रोज़ा रखेगा परवरदिगारे आलम उसको सकराते मौत से नजात दे देगा। और मरने के बाद क़ब्र के हौल से महफ़ूज़ रखेगा। और अगर कोई महीने के अंत में दो दिन रोज़ा रख लेगा तो वह सिरात से बा आसानी गुज़र जाएगा और अगर तीन दिन रोज़ा रखेगा तो क़यामत के ख़ौफ़ से महफ़ूज़ हो जाएगा। और उस दिन की शिद्दत और हौल से अमन में रहेगा। और ख़ुदा उसे जहन्नम से नजात का परवाना अता फ़रमा देगा।

याद रखो के रोज़ा माहे रजब के लिए बेशुमार फ़ज़ीलत वारिद हुई है। और यहाँ तक के रिवायत में है के अगर कोई व्यक्ति रोज़ा रखने के क़ाबिल न हो तो रोज़ाना सौ बार यह तसबीह पढ़े ताके उसे रोज़े का सवाब मिल जाए: पाकीज़ा है वो ख़ुदाए जलील। पाकीज़ा है वो जिसके अलावा किसी के लिए तसबीह नही है। पाकीज़ा है वो ख़ुदाए अज़ीज़ो करीम। पाकीज़ा है वो जिसका लिबास इज़्ज़त है। और वो उस लिबास के लाएक है।

आमाले माहे रजब की दो किसमें हैं

पहली किस्म: मुश्तरेका आमाल जो पूरे महीने के लिए हैं और किसी दिन से मख़सूस नहीं हैं। और वह चंद चीज़ें हैं।

रजब के आमाल

1. तमाम माहे रजब में यह दुआ पढ़े जो रजब की पहली तारीख़ को इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) ने पढ़ी थी:

يَا مَنْ يَّمْلِكُ حَوَائِجَ السَّائِلِيْنَ، وَ يَعْلَمُ ضَمِيْرَ الصَّامِتِيْنَ، لِكُلِّ

ऐ वो जो मांगने वालों की ज़रूरतों का जिम्मेदार और ख़ामोश लोगों के हाले दिल का जाननेवाला

مَسْأَلَةٍ مِنْكَ سَمْعٌ حَاضِرٌ، وَجَوَابٌ عَتِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ وَمَوَاعِيْدُكَ

है। हर सवाल के लिए तेरी समाअत हाज़र और तेरा जवाब आमादा है। ख़ुदाया तेरे वादे सच्चे

الصَّادِقَةُ، وَاَيَادِيْكَ الْفَاضِلَةُ، وَ رَحْمَتُكَ الْوَاسِعَةُ فَاَسْأَلُكَ اَنْ

तेरी नेमतें बहुत ज़्यादा और तेरी रहमत बहुत फैली हुई है। मेरा सवाल ये है के मुहम्मद व आले

تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَقْضِيَ حَوَائِجِيَ لِلدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ،

मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और मेरी दुनिया व आाख़िरत की हाजतों को पूरा फ़रमा दे के

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

तू हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है।

2. हर दिन रजब के महीने में इस दुआ को पढ़े जो इमाम जफ़रे सादिक़ (अ) से नक़्ल की गई है:

خَابَ الْوَافِدُوْنَ عَلٰى غَيْرِكَ، وَخَسِرَ الْمُتَعَرِّضُوْنَ اِلَّا لَكَ،

ख़ुदाया तेरे ग़ैर के दरवाज़े पर आनेवाले नाकाम हैं। और तेरे अलावा किसी से माँगनेवाले घाटे मे

وَضَاعَ الْمُلِمُّوْنَ اِلَّا بِكَ وَ اَجْدَبَ الْمُنْتَجِعُوْنَ اِلَّا مَنِ انْتَجَعَ

हैं। जो किसी और के दरवाज़े पर वारिद हो जाए वो बरबाद है। और जो किसी और के फ़ज़्ल की

فَضْلَكَ بَابُكَ مَفْتُوْحٌ لِلرَّاغِبِيْنَ وَ خَيْرُكَ مَبْذُوْلٌ لِلطَّالِبِيْنَ،

उम्मीद करे वो क़हत का शिकार हो जाएदा। तेरा दरवाज़ा राग़िबों के लिए खुला हुआ है। और तेरा

وَ فَضْلُكَ مُبَاحٌ لِلسَّائِلِيْنَ، وَ نَيْلُكَ مُتَاحٌ لِلْآمِلِيْنَ، وَ

ख़ैर तालिबों के लिए मुसलसल अता हो रहा है। तेरा फ़ज़्ल सवाल करनेवालों के लिए आम है।

رِزْقُكَ مَبْسُوْطٌ لِمَنْ عَصَاكَ وَحِلْمُكَ مُعْتَرِضٌ لِمَنْ نَاوَاكَ

और तेरी अता उम्मीदवारों के लिए हमेशा आमादा है। तेरा रिज़्क़ गुनाहगारों के लिए भी वसी है।

عَادَتُكَ الْاِحْسَانُ اِلَى الْمُسِيْئِيْنَ وَ سَبِيْلُكَ الْاِبْقَاءُ عَلَى

और तेरा हिल्म दूर हो जानेवालों के लिए भी आमादा है। तेरी आदत है के तू गुनाहगारों के साथ भी

الْمُعْتَدِيْنَ اَللّٰهُمَّ فَاهْدِنِيْ هُدَى الْمُهْتَدِيْنَ وَ ارْزُقْنِيْ اِجْتِهَادَ

अहसान करता है। और ज़ालिमों को भी मोहलत देता है। ख़ुदाया मुझे हिदायत याफ़्ता लोगों जैसी

الْمُجْتَهِدِيْنَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ الْمُبْعَدِيْنَ، وَ اغْفِرْ لِيْ

हिदायत दे। और कोशिश करनेवालों जैसी कोशिश की हिम्मत अता फ़रमा। मुझे उन ग़ाफ़लों मे

يَوْمَ الدِّيْنِ.

न क़रार देना जो तेरी बारगाह से दूर हो गए हैं। और क़यामत के दिन मुझे माफ़ कर देना।

3. शेख ने मिसबाह में मोअल्ला बिन खुनैस के हवाले से इमामे सादिक़ (अ) से रिवायत की है के रजब के महीने में इसको पढ़ना चाहिए।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡاَلُكَ صَبۡرَ الشَّاكِرِيۡنَ لَكَ، وَعَمَلَ الۡخَائِفِيۡنَ مِنۡكَ،

पर्वरदिगार मै तुझ से शाकिरीन जैसे सब्र ख़ाएफ़ीन जैसे अमल और आबिदीन जैसे यक़ीन का

وَ يَقِيۡنَ الۡعَابِدِيۡنَ لَكَ اَللّٰهُمَّ اَنۡتَ الۡعَلِيُّ الۡعَظِيۡمُ وَ اَنَا عَبۡدُكَ

तलबगार हूँ। ख़ुदाया तू अली व अज़ीम है। और मै तेरा बंदा ए मोहताज व फ़क़ीर हूँ। तू ग़नी

الۡبَائِسُ الۡفَقِيۡرُ اَنۡتَ الۡغَنِيُّ الۡحَمِيۡدُ وَ اَنَا الۡعَبۡدُ الذَّلِيۡلُ اَللّٰهُمَّ

व हमीद है और मै तेरा बंद ए ज़लील हूँ। ख़ुदाया मुहम्मदो आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَ امۡنُنۡ بِغِنَاكَ عَلٰى فَقۡرِیۡ، وَ بِحِلۡمِكَ عَلٰى

फ़रमा। और अपनी ग़िना से मेरी फ़क़ीरी पर और अपने हिल्म से मेरी जेहालत पर अपनी

جَهۡلِیۡ وَ بِقُوَّتِكَ عَلٰى ضَعۡفِیۡ يَا قَوِیُّ يَا عَزِيۡزُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

ताक़त से मेरी कमज़ोरी पर रहम फ़रमा। ऐ साहेबे क़ुव्वतो इज़्ज़त। ख़ुदाया हज़रत मुहम्मद और

وَّ آلِهِ الۡاَوۡصِيَاءِ الۡمَرۡضِيِّيۡنَ وَاكۡفِنِیۡ مَا اَهَمَّنِیۡ مِنۡ اَمۡرِ الدُّنۡيَا

उनकी आल पर रहमत नाज़ल फ़रमा। जो पसंदीदा वसी हैं। और मेरे लिए दुनिया व आाख़िरत

وَالۡاٰخِرَةِ يَا اَرۡحَمَ الرَّاحِمِيۡنَ.

के तमाम अहम उमूर मे काफ़ी हो जा ऐ बेहतरीन मेहेरबानी करने वाले।

लेखक के अनुसार सय्यद बिन ताऊस ने भी इस दुआ को इक़्बालुल आमाल में नक़्ल किया है। और उनकी रिवायत से यह ज़ाहिर होता है के यह जामे तरीन दुआ है जो रजब के अलावा भी पढ़ी जा सकती है।

4. शेख तूसी ने फ़रमाया है के रजब के महीने में हर रोज़ इस दुआ का पढ़ना मुस्तहब है:

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمِنَنِ السَّابِغَةِ وَالْآلَاءِ الْوَازِعَةِ وَالرَّحْمَةِ الْوَاسِعَةِ،

ख़ुदाया ऐ कामिल एहसानात वाले ऐ वाफ़र नेमतों वाले। ऐ वसी रहमतवाले। ऐ जामे क़ुदरत वाले। ऐ

وَالْقُدْرَةِ الْجَامِعَةِ وَ النِّعَمِ الْجَسِيْمَةِ وَ الْمَوَاهِبِ الْعَظِيْمَةِ وَ

अज़ीम नेमतों और बुज़ुर्ग अताया अज़ीम बख़शिशों और कसीर अतियों के मालिक। ऐ वो ख़ुदा जिसकी

الْآيَادِى الْجَمِيْلَةِ وَ الْعَطَايَا الْجَزِيْلَةِ يَا مَنْ لَا يُنْعَتُ بِتَمْثِيْلٍ وَلَا

किसी मिसाल से तौसीफ़ या किसी नज़ीर से तमसील नही हो सकती है। और किसी मददगार द्वारा उसपर

يُمَثَّلُ بِنَظِيْرٍ وَلَا يُغْلَبُ بِظَهِيْرٍ يَا مَنْ خَلَقَ فَرَزَقَ وَاَلْهَمَ فَاَنْطَقَ

कोई ग़लबा नही पा सकता है। ऐ वो जिसने पैदा करके रिज़्क दिया। इलहाम करके गोयाई दी। ईजाद करके

وَ ابْتَدَعَ فَشَرَعَ، وَعَلَا فَارْتَفَعَ، وَقَدَّرَ فَاَحْسَنَ، وَصَوَّرَ فَاَتْقَنَ، وَ

क़ानून दे दिया। और बुलंदियों मे रफ़ी है। तक़दीर मे अच्छा है। जो तस्वीर बनाई वो मोहकम बानई दलाएल

احْتَجَّ فَاَبْلَغَ، وَاَنْعَمَ فَاَسْبَغَ، وَاَعْطٰى فَاَجْزَلَ، وَمَنَحَ فَاَفْضَلَ يَا مَنْ

को मुकम्मल किया है। नेमतों को तमाम किया है। अतियों को कसीर बनाया है। मेहेरबानियों को ज़्यादा

سَمَا فِي الْعِزِّ فَفَاتَ نَوَاظِرَ الْاَبْصَارِ، وَدَنَا فِي اللُّطْفِ فَجَازَ هَوَاجِسَ

किया है। ऐ वो ख़ुदा जो अपनी इज़्ज़त मे इतना बुलंद है के निगाहें वहाँ तक पहुँच नही सकती हैं। और अपने

الْاَفْكَارِ يَا مَنْ تَوَحَّدَ بِالْمُلْكِ فَلَا نِدَّ لَهٗ فِيْ مَلَكُوْتِ سُلْطَانِهٖ وَتَفَرَّدَ

लुत्फ़ मे इतना क़रीब है के अफ़कार व ख़यालात की उड़ान से भी आगे निकल गया है। ऐ वो ख़ुदा जो अपनी

بِالْآلَاءِ وَ الْكِبْرِيَاءِ فَلَا ضِدَّ لَهٗ فِيْ جَبَرُوْتِ شَأْنِهٖ يَا مَنْ حَارَتْ فِيْ

सलतनत मे भी अकेला है। और उसके राज मे कोई उसका जैसा नही। अपने अहसानो बुज़ुर्गा मे तन्हा है।

كِبْرِيَاءِ هَيْبَتِهٖ دَقَائِقُ لَطَائِفِ الْاَوْهَامِ، وَانْحَسَرَتْ دُوْنَ اِدْرَاكِ

और उसकी जबरूतियत मे कोई उसका जैसा नही। ऐ वो ख़ुदा जिसकी हैबत की किब्राई मे दक़ीक़ ख़यालात

عَظَمَتِهٖ خَطَائِفُ اَبْصَارِ الْاَنَامِ. يَا مَنْ عَنَتِ الْوُجُوْهُ لِهَيْبَتِهٖ،

भी मुतहय्यर हो गए हैं। और उसकी अज़मत के समझने मे निगाहें भी थक कर रह गई हैं। ऐ वो ख़ुदा जिसकी

وَ خَضَعَتِ الرِّقَابُ لِعَظَمَتِهٖ، وَ وَجِلَتِ الْقُلُوْبُ مِنْ خِيْفَتِهٖ

हैबत के लिए तमाम चेहरे झुके हैं। और जिसकी अज़मत के लिए तमाम गर्दने झुक गई हैं। उसके भय से

اَسْاَلُكَ بِهٰذِهِ الْمِدْحَةِ الَّتِيْ لَا تَنْبَغِيْ اِلَّا لَكَ وَبِمَا وَاَيْتَ بِهٖ عَلٰى

तमाम दिल काँप रहे हैं। मै तुझसे उसी मिदहत के वसीले से जिसका तेरे अलावा कोई अहल नही है। और

نَفْسِكَ لِدَاعِيْكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَبِمَا ضَمِنْتَ الْاِجَابَةَ فِيْهِ عَلٰى

उस वास्ते से के तूने अपने तलबगार मोमिनीन के हक़ मे तै कर लिया है। और अपने नफ़्स पर उनकी

نَفْسِكَ لِلدَّاعِيْنَ يَا اَسْمَعَ السَّامِعِيْنَ، وَ اَبْصَرَ النَّاظِرِيْنَ، وَ اَسْرَعَ

दुआओं की क़ुबूलियत को लाज़म क़रार दे दिया है। दुआ कर रहा हूँ ऐ बेहतरीन सुन्ने वाले। ऐ बेहतरीन

الْحَاسِبِيْنَ، يَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِيْنَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ

देखनेवाले। बहुत तेज़ हिसाब करनेवाले। ऐ साहेबे क़ुव्वते मुस्तहकम हज़रत मुहम्मद ख़ातिमुन नबीय्यीन पर

وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ وَ اقْسِمْ لِيْ فِيْ شَهْرِنَا هٰذَا خَيْرَ مَا قَسَمْتَ وَاحْتِمْ

रहमत नाज़िल कर। और इस महीने मे बेहतरीन नेमत का हिस्सा अता कर। और अपनी क़ज़ा व क़दर मे मेरे

لِيْ فِيْ قَضَائِكَ خَيْرَ مَا حَتَمْتَ، وَاخْتِمْ لِيْ بِالسَّعَادَةِ فِيْمَنْ خَتَمْتَ

लिए बेहतरीन फ़ैसला करदे। मेरा अंजाम नेक बख़्ती व साआदत पर क़रार दे। जब तक मुझे ज़िंदा रखना तो

وَاَحْيِنِيْ مَا اَحْيَيْتَنِيْ مَوْفُوْرًا وَ اَمِتْنِيْ مَسْرُوْرًا وَ مَغْفُوْرًا وَ تَوَلَّ

नेमतों की फरावानी के साथ। और जब ऊठाना तो मसरूर और बख़्शा हुआ। तू ख़ुद इस बात के ज़िम्मेदार

اَنْتَ نَجَاتِيْ مِنْ مُسَائَلَةِ الْبَرْزَخِ وَادْرَاْ عَنِّيْ مُنْكَرًا وَنَكِيْرًا، وَ اَرِ

होज़ा के मुझे बरज़ख़ के सवाल से नजात देदेगा। मुनकिरो नकीर के अज़ाब को हटा देगा और मुझे मुबश्शिरो

عَيْنِيْ مُبَشِّرًا وَّبَشِيْرًا، وَّ اجْعَلْ لِيْ اِلٰى رِضْوَانِكَ وَجِنَانِكَ مَصِيْرًا

बशीर की ज़ियारत नसीब करेगा। अपनी रिज़ा और अपनी जन्नत तक रास्ता बना देगा और वहाँ पुरसकून

وَعَيْشًا قَرِيْرًا، وَمُلْكًا كَبِيْرًا، وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ كَثِيْرًا.

ज़िंदगी और अज़ीम मुल्क अता फ़रमाएगा। ख़ुदाया मुहम्मदो आले मुहम्मद पर बेशुमार रहमत भेज।

ये दुआ मस्जिदे सासा मे भी पढ़ी जा सकती है।
5. शेख़ तूसी ने रिवायत की है के इमामे अस्र (अ) की तरफ़ से शेख़ कबीर अबु जाफ़र मोहम्मद बिन उसमान बिन सईद के ज़रिए यह तौक़ी बरामद हुई है जिसको रजब के महीने में हर रोज़ पढ़ना चाहिए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِمَعَانِیْ جَمِيْعِ مَا

ख़ुदा के नाम से जो रहमानो रहीम है। ख़ुदाया मै तुझसे उन दुआओं के मानी का तलबगार हूँ जो तेरे

يَدْعُوْكَ بِهٖ وُلَاةُ اَمْرِكَ الْمَاْمُوْنُوْنَ عَلٰى سِرِّكَ الْمُسْتَبْشِرُوْنَ

साहिबाने अम्र ने की हैं। जिनको तूने अपने राज़ का अमानतदार और अपने हुक्म के लिए बशीर

بِاَمْرِكَ، الْوَاصِفُوْنَ لِقُدْرَتِكَ، الْمُعْلِنُوْنَ لِعَظَمَتِكَ، اَسْاَلُكَ بِمَا

बनया। वो तेरी क़ुदरत की तौसा०rफ करनेवाले और तेरी अज़मत का एलान करने वाले हैं। मेरा

نَطَقَ فِيْهِمْ مِنْ مَّشِيْئَتِكَ فَجَعَلْتَهُمْ مَعَادِنَ لِكَلِمَاتِكَ وَ اَرْكَانًا

सवाल उन चीज़ों के बारे मे है जिनहे तेरी मशीयत ने तै किया है। जिसके ज़रिए उनको तूने अपने

لِتَوْحِيْدِكَ وَ آيَاتِكَ وَ مَقَامَاتِكَ الَّتِیْ لَا تَعْطِيْلَ لَهَا فِیْ كُلِّ مَكَانٍ

मादने कलेमात अपनी तौहीद आयात और उन मक़ामात का रूकुन क़रार दिया है। जिनके लिए कोई

يَعْرِفُكَ بِهَا مَنْ عَرَفَكَ، لَا فَرْقَ بَيْنَكَ وَ بَيْنَهَا اِلَّا اَنَّهُمْ عِبَادُكَ

तातील किसी जगह पर नही है। और पहचान्ने वाला तुझे उन्ही आयात से पहचानता है। और उनके

وَ خَلْقُكَ، فَتْقُهَا وَ رَتْقُهَا بِيَدِكَ، بَدْؤُهَا مِنْكَ وَ عَوْدُهَا اِلَيْكَ،

दरमियान और तेरे दरमियान फ़र्क सिर्फ़ ये है के ये तेरे बंदे और तेरी मख़लूक़ हैं। उनका बस्त व

اَعْضَادٌ وَ اَشْهَادٌ وَ مُنَاةٌ وَاَذْوَادٌ وَحَفَظَةٌ وَ رُوَّادٌ، فَبِهِمْ مَلَأْتَ

कुशाद तेरे हाथों मे है। उनका प्रारंभ व अंत तेरी बारगाह मे है। ये तेरे दीन के पासबान व गवाह हैं।

سَمَائَكَ وَ اَرْضَكَ حَتّٰى ظَهَرَ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، فَبِذٰلِكَ اَسْاَلُكَ وَ

और रफ़ा करने वाले मुहाफ़िज़ व मुबल्लिग़ हैं। उनही द्वारा आसमानो ज़मीन को भर दिया है। यहाँ तक

بِمَوَاقِعِ الْعِزِّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَ بِمَقَامَاتِكَ وَ عَلَامَاتِكَ، اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى

के ला इलाहा इल्लल्लाह का कलेमा नुमाया हो गया। उन्ही के ज़रिए तो तेरी रहमत और तेरे मक़ामात

مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَ اَنْ تَزِيْدَنِيْ اِيْمَانًا وَ تَثْبِيْتًا يَا بَاطِنًا فِيْ ظُهُوْرِهٖ وَ ظَاهِرًا

व अलामात की इज़्ज़त के मवाक़े के ज़रिए मेरा सवाल है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत

فِيْ بُطُوْنِهٖ وَ مَكْنُوْنِهٖ يَا مُفَرِّقًا بَيْنَ النُّوْرِ وَ الدَّيْجُوْرِ، يَا مَوْصُوْفًا

नाज़ल फ़रमा मेरे ईमान और सबात मे इज़ाफ़ा फ़र्मा ऐ अपने जहूर मे पोशीदा और अपनी पोशीदगी

بِغَيْرِ كُنْهٍ، وَ مَعْرُوْفًا بِغَيْرِ شِبْهٍ، حَادَّ كُلِّ مَحْدُوْدٍ، وَ شَاهِدَ كُلِّ

मे जाहिर। ऐ प्रकाश व अंधेरे मे जुदाई डालनेवाले। ऐ हक़ीक़ते ज़ात के बग़ैर क़ाबिले तौसीफ़ और

مَشْهُوْدٍ وَ مُوْجِدَ كُلِّ مَوْجُوْدٍ وَمُحْصِيَ كُلِّ مَعْدُوْدٍ وَ فَاقِدَ كُلِّ

किसी शबाहत के बग़ैर मारूफ़। हर हद के मुताअय्यन करनेवाले। हर मश्हूर के शाहिद हर मौजूद

مَفْقُوْدٍ لَيْسَ دُوْنَكَ مِنْ مَعْبُوْدٍ، اَهْلَ الْكِبْرِيَاءِ وَالْجُوْدِ، يَا مَنْ لَا

के मौजिद। हर क़ाबिले शुमार के शुमार करने वाले। हर खोई हुई चीज़ के तलाश करनेवाले। तेरे

يُكَيَّفُ بِكَيْفٍ، وَلَا يُؤَيَّنُ بِاَيْنٍ، يَا مُحْتَجِبًا عَنْ كُلِّ عَيْنٍ، يَا دَيْمُوْمُ

अलावा कोई ख़ुदा नही है। के तू साहिबे किब्रियाई व जूद है। ऐ वो जिसकी कोई कैफ़ियत और कोई

يَا قَيُّوْمُ وَعَالِمَ كُلِّ مَعْلُوْمٍ، صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَ عَلٰى عِبَادِكَ

जगह नही है। और निगाह से पोशीदा हमेशाँ रहने वाला। सबको क़ायम रखने वाला। हर मालूम

الْمُنْتَجَبِيْنَ وَ بَشَرِكَ الْمُحْتَجِبِيْنَ، وَ مَلَائِكَتِكَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ

का जानने वाला। मुहम्मद व आले मुहम्मद और अपने चुने हुए बंदों पर और परदेदार इन्सानों और

الْبُهَمِ الصَّافِّيْنَ الْحَافِّيْنَ وَ بَارِكْ لَنَا فِيْ شَهْرِنَا هٰذَا الْمُرَجَّبِ

लातादाद मख़लूकात पर मलाएका मुकर्रबीन पर ख़ामूशी से सफ़ बस्ता अपनी बारगाह मे हाज़र

الْمُكَرَّمِ وَمَا بَعْدَهٗ مِنَ الْاَشْهُرِ الْحُرُمِ وَاَسْبِغْ عَلَيْنَا فِيْهِ النِّعَمَ

रहनेवालों पर रहमत नाज़ल कर। हमे इस मोहतरम रजब के बाबरकत महीने की और उसके बाद

وَاَجْزِلْ لَنَا فِيْهِ الْقِسَمَ وَاَبْرِزْ لَنَا فِيْهِ الْقَسَمَ بِاسْمِكَ الْاَعْظَمِ

मोहतरम महीनो की बरकत इनायत कर। हम पर अपनी नेमतों को तमाम करदे और बेहतरीन इस्मत

الْاَعْظَمِ الْاَجَلِّ الْاَكْرَمِ، الَّذِيْ وَضَعْتَهٗ عَلَى النَّهَارِ فَاَضَاءَ وَعَلَى

इनायत कर। हमारी क़स्मों को मुकम्मल कर दे। तुझे अपने इस्मे आज़म आज़म अजले अक्रम का

اللَّيْلِ فَأَظْلَمَ وَاغْفِرْ لَنَا مَا تَعْلَمُ مِنَّا وَمَا لَا نَعْلَمُ، وَاعْصِمْنَا

वास्ता जिसको दीन पर रख दिया तो रौशन हो गया और रात मे रख दिया तो तारीक हो गई। हमारे

مِنَ الذُّنُوْبِ خَيْرَ الْعِصَمِ، وَاكْفِنَا كَوَافِيَ قَدَرِكَ، وَامْنُنْ عَلَيْنَا

तमाम गुनाहों को माफ़ कर जिनको तू जानता है और हम नही जानते। हमे गुनाहों से बेहतरीन तरीके

بِحُسْنِ نَظَرِكَ، وَلَا تَكِلْنَا إِلَى غَيْرِكَ، وَلَا تَمْنَعْنَا مِنْ خَيْرِكَ، وَ

से महफ़ूज रखना और अपनी क़ज़ा व क़दर के मामलात मे हमारे लिए काफ़ी हो जा। मेरी मदद कर

بَارِكْ لَنَا فِيمَا كَتَبْتَهُ لَنَا مِنْ أَعْمَارِنَا، وَأَصْلِحْ لَنَا خَبِيئَةَ أَسْرَارِنَا

और हमे किसी ग़ैर के हवाले न करना और अपने ग़ैर से हमरू न कर देना जो हमारी ज़िन्दगी मे लिख

وَ أَعْطِنَا مِنْكَ الْأَمَانَ، وَ اسْتَعْمِلْنَا بِحُسْنِ الْإِيمَانِ، وَ بَلِّغْنَا

दिया है। उसमे बरकत अता फ़र्मा। और हमारे बातिन के असरार को दुरूस्त कर और हमे अम्नो

شَهْرَ الصِّيَامِ، وَ مَا بَعْدَهُ مِنَ الْأَيَّامِ وَ الْأَعْوَامِ، يَا ذَا الْجَلَالِ

अमान दे। और बेहतरीन ईमान की राह पर लगा दे। और माहे सियाम और उसके बाद के अय्याम

وَالْإِكْرَامِ.

और बरसों तक पहुँचा दे ऐ साहेबे जलालो इक्राम।

6. शेख़ तूसी ने रिवायत की है के इमामे अस्र (अ) के नाहिये मुक़द्देसा से शेख़ अबुल क़ासिम के ज़रिए यह दुआए मुबारक वारिद हुई है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُكَ بِالۡمَوۡلُوۡدَيۡنِ فِیۡ رَجَبٍ مُحَمَّدِ بۡنِ عَلِیٍّ

ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ उन दो अफ़राद के वास्ते से जो माहे रजब मे पैदा हुए हैं। याने हज़रत

الثَّانِیۡ وَابۡنِهٖ عَلِیِّ بۡنِ مُحَمَّدٍ الۡمُنۡتَجَبِ، وَ اَتَقَرَّبُ بِهِمَا

मुहम्मद बिन अली सानी इमाम जवाद और हज़रत अली बिन मुहम्मद इमाम नक़ी और उनही के

اِلَيۡكَ خَيۡرَ الۡقُرَبِ، يَا مَنۡ اِلَيۡهِ الۡمَعۡرُوۡفُ طُلِبَ، وَ فِيۡمَا

ज़रिए तेरी बारगाह मे बेहतरीन नज़दीकी चाहता हूँ। ऐ वो ख़ुदा जिससे नेकियों को तलब किया जाता

لَدَيۡهِ رُغِبَ، اَسۡاَلُكَ سُؤَالَ مُقۡتَرِفٍ مُذۡنِبٍ قَدۡ اَوۡبَقَتۡهُ

है। और जिसके सवाब की रग़बत पैदा की जाती है। और जिस्से उस बंदे की तरह सवाल कर रहा हूँ

ذُنُوۡبُهٗ، وَ اَوۡثَقَتۡهُ عُيُوۡبُهٗ، فَطَالَ عَلَى الۡخَطَايَا دُؤُوۡبُهٗ، وَمِنَ

जो गुनहगार है और जिसको गुनाहों ने हलाक कर दिया है। और कमज़ोरियों ने गिरफ़्तार कर लिया

الرَّزَايَا خُطُوۡبُهٗ، يَسۡاَلُكَ التَّوۡبَةَ وَحُسۡنَ الۡاَوۡبَةِ وَ النُّزُوۡعَ

है। अब मुसलसल ख़ताएं किए जा रहा है। और उसके मसाएब बढ़ते जा रहे हैं। तेरा बंदा तुझसे माफ़ी

عَنِ الۡحَوۡبَةِ وَمِنَ النَّارِ فَكَاكَ رَقَبَتِهٖ وَالۡعَفۡوَ عَمَّا فِیۡ رِبۡقَتِهٖ،

माँग रहा है। और हुस्ने कुबूल का उम्मीदवार है। और चाहता है के गुनाहों से निकल आए और उसकी

فَاَنۡتَ مَوۡلَایَ اَعۡظَمُ اَمَلِهٖ وَثِقَتِهٖ. اَللّٰهُمَّ وَ اَسۡاَلُكَ

गर्दन जहन्नम से आज़ाद हो जाए। और जो भी गुनाह उसके ज़िम्मे हैं वो माफ़ हो जाएँ। इस लिए के तू

بِمَسَائِلِكَ الشَّرِيْفَةِ وَ وَسَائِلِكَ الْمُنِيْفَةِ اَنْ تَتَغَمَّدَنِيْ فِيْ

मेरे मालिक अज़ीम तरीन उम्मीद और क़ाबिले एतेबार है। ख़ुदाया मै तुझसे शरीफ़ तरीन वसाएल और

هٰذَا الشَّهْرِ بِرَحْمَةٍ مِّنْكَ وَاسِعَةٍ وَ نِعْمَةٍ وَازِعَةٍ، وَ نَفْسٍ

बुलंद तरीन असबाब के ज़रिए सवाल कर रहा हूँ के मुझे इस महीने मे अपनी रहमत से ढाँक ले और बे

بِمَا رَزَقْتَهَا قَانِعَةٍ، اِلٰى نُزُوْلِ الْحَافِرَةِ، وَمَحَلِّ الْآخِرَةِ، وَمَا

पायाँ नेमत अता कर। वो नफ़्स दे जो तेरे रिज़्क़ से राज़ी रहे। जबतक ये क़ब्र के गढ़े और आख़िरत की

هِيَ اِلَيْهِ صَائِرَةٌ.

मा़ज़िल तक न पहुँच जाए। जहाँ तक बहर हाल सबको जाना है।

7. शेख़ तूसी ने जनाब अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह - इमाम ज़माना (अ) के नाएबे ख़ास - से यह रिवायात की है के रजब के महीने में मशाहिदे मुशरफ़ा में जहाँ भी रहो यह ज़ियारत पढ़ो:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَشْهَدَنَا مَشْهَدَ اَوْ لِيَائِهٖ فِيْ رَجَبٍ، وَ

सारी तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जिसने रजबके महीने मे हमे अपने औलिया के मशहद पर हाज़री की

اَوْجَبَ عَلَيْنَا مِنْ حَقِّهِمْ مَا قَدْ وَجَبَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

तौफ़ीक दी और उनके हूकूक को हमपर वाजिब क़रार दिया। अल्लाह की रहमत हो हज़रत मुहम्मद पर

الْمُنْتَجَبِ، وَ عَلٰى اَوْصِيَائِهِ الْحُجُبِ. اَللّٰهُمَّ فَكَمَا اَشْهَدْتَنَا

जो मुंताख़िब हैं और उनके औलिया पर जो बारगाहे अहदियत के परदेदार हैं। ख़ुदाया जिस तरह तूने

مَشْهَدَهُمْ فَاَ نْجِزْ لَنَا مَوْعِدَهُمْ، وَ اَوْرِدْنَا مَوْرِدَهُمْ،

हमे उनके मशाहिद तक पहुँचा दिया है। अब उनके वादे को भी पूरा फ़रमा दे और हमे उनकी मंज़ल

غَيْرَ مُحَلَّئِيْنَ عَنْ وِرْدٍ فِي دَارِ الْمُقَامَةِ وَ الْخُلْدِ وَ السَّلَامُ

मे वारिद करदे। और हमेशाँ रहनेवाले घर मे वारिद होने से कोई रूकावट न हो। सलाम हो तुम पर

عَلَيْكُمْ، اِنِّيْ قَدْ قَصَدْتُكُمْ وَ اعْتَمَدْتُكُمْ بِمَسْاَلَتِيْ وَ

ऐ औलिया ए ख़ुदा मै तुम्हारी इस बारगाह मे हाज़िर हुआ हूँ। और अपने किये सवालात और अपनी

حَاجَتِيْ وَ هِيَ فَكَاكُ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ، وَ الْمَقَرُّ مَعَكُمْ فِيْ

हाजत मे आप पर एतेमाद किया है। और वो हाजत ये है के मेरी गर्दन आतिशे जहन्नम से आज़ाद हो

دَارِ الْقَرَارِ، مَعَ شِيْعَتِكُمُ الْاَبْرَارِ، وَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ

जाए और मुझे आपके साथ जन्नत मे जगह मिल जाए आप के नेक शियों की रिफ़ाक़त मे। सलाम हो

بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ، اَنَا سَائِلُكُمْ وَ آمِلُكُمْ

आप पर के आप ने सब्र किया जिसक अंजाम बेहतरीन है। मै आपका साएल आपका उम्मीदवार हूँ

فِيْمَا اِلَيْكُمُ التَّفْوِيْضُ، وَ عَلَيْكُمُ التَّعْوِيْضُ، فَبِكُمْ

उन मामलात मे जो आपके हवाले कर दिए गए। और जिनके मारि०ज़े की ज़िम्मेदारी भी आप ही पर

يُجْبَرُ الْمَهِيْضُ، وَ يُشْفَى الْمَرِيْضُ، وَ مَا تَزْدَادُ الْاَرْحَامُ وَ

है। आप ही से शिकसतिगी का इलाज़ होता है। मरीज़ों को शिफ़ा दी जाती है और अरहाम मे कमी व

مَا تَغِيْضُ، اِنِّيْ بِسِرِّكُمْ مُؤْمِنٌ، وَلِقَوْلِكُمْ مُسَلِّمٌ، وَعَلَى

ज़्यादती होती है। मै आप के असरार पर ईमान लाने वाला आपके क़ौल का तसलीम करनेवाला और

اللهِ بِكُمْ مُقْسِمٌ فِيْ رَجْعِيْ بِحَوَائِجِيْ وَقَضَائِهَا وَاِمْضَائِهَا

अल्लाह को आपके हक़ की क़सम देने वाला हूँ के वो मेरी हाजतों को पूरा करदे और उनके बारे मे

وَ اِنْجَاحِهَا وَ اِبْرَاحِهَا وَ بِشُؤُوْنِيْ لَدَيْكُمْ وَصَلَاحِهَا وَ

फ़ैसला करके मुझे कामयाबी दे और मुश्किलात को जाएल करदे। मेरे उमूर की इसलाह करदे। सलाम

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ سَلَامَ مُوَدِّعٍ وَ لَكُمْ حَوَائِجَهٗ مُوْدِعٌ

हो आप पर उस चाहने वाले का जो आप को रूख़सत कर रहा है और आप से रूख़सत हो रहा है। और

يَسْاَلُ اللهَ اِلَيْكُمُ الْمَرْجِعَ وَسَعْيُهٗ اِلَيْكُمْ غَيْرَ مُنْقَطِعٍ

अपनी हाजतों को आपके पास छोड़ कर जा रहा है। अल्लाह से सवाल है के आपकी बारगाह मे फिर

وَ اَنْ يَرْجِعَنِيْ مِنْ حَضْرَتِكُمْ خَيْرَ مَرْجِعٍ اِلٰى جَنَابٍ مُمْرِعٍ

पलट कर आऊँ और उसकी कोशिश ख़त्म न होने पाए। और जब भी आप की बारगाह से पलटूँ तो

وَخَفْضٍ مُوَسَّعٍ وَدَعَةٍ وَمَهَلٍ اِلٰى حِيْنِ الْاَجَلِ وَخَيْرِ

बेहतरीन वापसी हो। बा बरकत आसताने तक वसी ऐशोसुकून तक। और बेहतरीन राहत तक। यहाँ

مَصِيْرٍ وَمَحَلٍّ فِي النَّعِيْمِ الْاَزَلِ، وَ الْعَيْشِ الْمُقْتَبَلِ، وَ

तक के मौत का समय आ जाए। और उसके बाद बेहतरीन वापसी और बेहतरीन मंजिल मिले जहाँ

دَوَامِ الْاُكُلِ، وَ شُرْبِ الرَّحِيْقِ وَالسَّلْسَلِ وَعَلٍّ وَنَهَلٍ لَا

दाएमी नेमत हो। पसंदीदा ज़िन्दगी हो। खाने पीने का मुसलसल सामान हो और बराबर उस चश्मए

سَاَمَ مِنْهُ وَلَا مَلَلَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ وَ تَحِيَّاتُهٗ عَلَيْكُمْ

रहमत पर नुज़ूल होता रहे। जहाँ न किसी तरह की ख़सतिगी हो और न किसी तरह का रंज। अल्लाह की

حَتَّى الْعَوْدِ اِلٰى حَضْرَتِكُمْ، وَالْفَوْزِ فِيْ كَرَّتِكُمْ، وَالْحَشْرِ

रहमतो बरकातो तहयात आप अहलेबैत पर है। यहाँ तक के मै आपकी बारगाह मे पलट जाऊँ और

فِيْ زُمْرَتِكُمْ، وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ عَلَيْكُمْ وَصَلَوَاتُهٗ وَ

फिर उस वापसी की कामयाबी हासिल करूँ और आपके ज़ुम्रे मे महशूर हूँ। अल्लाह की रहमतो बरकातो

تَحِيَّاتُهٗ، وَ هُوَ حَسْبُنَا وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ.

सलवातो तहयात आप हज़रात पर। वही ख़ुदा हमारे लिए काफ़ी है वही हमारा बेहतरीन वकील है।

8. सय्यद बिन ताऊस ने मोहम्मद बिन ज़क्वान से रिवायत की है, जिन्हे सज्जाद कहा जाता है। उन्होंने सजदे में इतना गिरया किया के आंखों की रौश्नी चली गई। वह कहते हैं के मैंने इमामे जाफ़र सादिक़ (अ) से गुज़ारिश की यह रजब का महीना है आप मुझे कोई दुआ सिखाईये जो मेरे लिए फ़ायदेमंद हो मैं आप पर क़ुरबान। तो आप (अ) ने कहा के अच्छा लिखो:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत मेहेरबान और निहायत रहमवाला है

يَا مَنْ اَرْجُوْهُ لِكُلِّ خَيْرٍ، وَآمَنُ سَخَطَهٗ عِنْدَ كُلِّ شَرٍّ، يَا مَنْ

और हर रोज़ रजब के महीने में सुब्हो शाम और हर नमाज़ के बाद दिन और रात में यह दुआ पढ़ते रहना।

يُّعْطِي الْكَثِيْرَ بِالْقَلِيْلِ، يَا مَنْ يُّعْطِيْ مَنْ سَاَلَهٗ، يَا مَنْ يُّعْطِيْ

ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत ही मेहेरबान निहायत रहमवाला है। ऐ जिस्से हर ख़ैर की उम्मीद

مَنْ لَّمْ يَسْاَلْهُ وَ مَنْ لَّمْ يَعْرِفْهُ تَحَنُّنًا مِنْهُ وَرَحْمَةً اَعْطِنِيْ

रखता हूँ। ऐ वो ख़ुदा और हर शर के मौक़े पर उसकी नाराज़गी से अमान चाहता हूँ। ऐ वो ख़ुदा जो कम

بِمَسْاَلَتِيْ اِيَّاكَ جَمِيْعَ خَيْرِ الدُّنْيَا وَ جَمِيْعَ خَيْرِ الْاٰخِرَةِ

अमल पर ज़्यादा सवाब देता है। ऐ वो ख़ुदा जो अपने तमाम साएलों को देता है। ऐ वो ख़ुदा जो उसे भी

وَاصْرِفْ عَنِّيْ بِمَسْاَلَتِيْ اِيَّاكَ جَمِيْعَ شَرِّ الدُّنْيَا وَشَرِّ الْاٰخِرَةِ،

देता है जो उससे सवाल करे और उसे भी देता है जो सवाल नही करता। बलके उसे पहचानता भी नही है।

فَاِنَّهٗ غَيْرُ مَنْقُوْصٍ مَّا اَعْطَيْتَ، وَ زِدْنِيْ مِنْ فَضْلِكَ يَا

अपनी रहमत और मेहेरबानी की बिना पर तू मेरे सवाल की बिना पर मुझे दुनिया व आख़िरत की तमाम

كَرِيْمُ.

नेकियाँ देदे और दुनिया व आाख़िरत की तमाम बुराईयों को मझसे मोड़ दे के तू जिसको अता करेगा उसमे

रावी कहता है के इस दुआ के बाद हज़रत ने अपने बाएं हाथ से महासीने शरीफ (दाढ़ी) को पकड़ा और निहायत ख़ुशू ओ ख़ुज़ू के साथ दाहिने हाथ के कलमे की ऊंगली को हरकत देते हुए यह कलेमात ज़बान पर जारी किए:

يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَاذَاالنَّعْمَاءِ وَالْجُوْدِ يَاذَاالْمَنِّ وَالطَّوْلِ

कमी नही होगी और फिर अपने फ़ज़्लसे और इज़ाफ़ा करदे। ऐ ख़ुदए करीम। ऐ साहेबे जलाल व इक्राम

حَرِّمْ شَيْبَتِيْ عَلَى النَّارِ.

ऐ साहेबे नेमत व करम। ऐ साहेबे एसान व अता। मेरे इन महासिन को जहन्नम की आग पर हराम करदे।

9. रसूले अक्रम (स) से रिवायत है के जो व्यक्ति रजब के महीने में सौ बार कहे:
और इसके बाद सदक़ा दे तो परवरदिगार उसकी नजात राहतो मग़फ़ेरत पर करेगा और अगर चार सौ बार इस ज़िक्र को दोहराएगा तो परवरदिगार उसके लिए सौ शहीदों का सवाब लिख देगा।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِيْ لَااِلٰهَ اِلَّاهُوَ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَتُوْبُ

मै अल्लाह से माफ़ी की भीक मागंता हूँ, उसके अलावा कोई माबूद नही। एक अकेला उसका कोई

اِلَيْهِ

शरीक नही और मै उससे तौबा करता हूँ।

10. इनही इमाम (अ) से रिवायत है के जो व्यक्ति पूरे रजब के महीने में हज़ार बार ये कहेगा परवरदिगार उसके लिए एक लाख हसनात लिख देगा और जन्नत में उसके लिए सौ शहर आबाद कर देगा:

لَااِلٰهَ اِلَّااللهُ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही

11. रिवायत में है के जो व्यक्ति रजब के महीने में सुबह के समय सत्तर बार और ज़ोहर के समय भी सत्तर बार कहेगा:

اَسْتَغْفِرُ اللهَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهَ

मै अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ और उसकी तरफ़ पलटता हूँ।

और उसके हाथों को उठाकर कहेगा: तो अगर वह रजब के महीने में मर जाएगा तो ख़ुदा उससे राज़ी रहेगा और आतिशे जहन्नम उसे छू भी नहीं सकती।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَ تُبْ عَلَيَّ

ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर और मेरी तौबा क़ुबूल कर।

12. पूरे रजब के महीने में हज़ार बार कहे: ताके परवरदिगार उसे माफ़ कर दे।

اَسْتَغْفِرُ اللهَ ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ مِنْ جَمِيْعِ الذُّنُوْبِ وَ الْاٰثَامِ

मै अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ जो ज़ुल जलाल वल इक्राम है, के मेरे सब गुनाह माफ़ करदे।

13. सय्यद ने इक़्बाल में सूरह तौहीद के दस हज़ार या एक हज़ार बार या पूरे रजब के महीने में सौ बार पढ़ने की बेशुमार फ़ज़ीलत नक़्ल की है और रिवायत की है के जो शख़्स रजब वे महीने के जुमा के दिन सौ बार सूरह तौहीद पढ़ लेगा उसके लिए क़यामत के दिन ऐसा नूर होगा जो उसे जन्नत तक खींच कर ले जाएगा।

14. सय्यद ने रिवायत की है के जो शख़्स रजब के महीने में एक दिन रोज़ा रखेगा और चार रकत नमाज़ पढ़ेगा जिसकी पहली रकत में सौ बार आयतल

कुर्सा और दूसरी रकत में दो सौ बार सूरह तौहीद पढ़ेगा तो दुनिया से जाने से पहले जन्नत में अपनी जगह को ख़ुद देख लेगा या उसे जन्नत में दिखाया जाएगा।

15. सय्यद बिन ताऊस ने रसूले अक्रम (स) से रिवायत की है के जो व्यक्ति रजब के महीने में जुमा के दिन चार रकत नमाज़ ज़ोहर और अस्र के बीच में पढ़ेगा और हर रकत में सूरह हम्द के बाद सात बार आयतल कुर्सा और पाँच बार सूरह तौहीद पढ़ेगा और अंत में दस बार कहेगा:

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَاَسْئَلُهُ التَّوْبَةَ

मै अल्लाह से माफ़ी की भीक मागंता हूँ और मेरी तौबा क़ुबूल करने की दुआ मागंता हूँ।

परवरदिगारे आलम उसके लिए जिस दिन नमाज़ पढ़ी है उस दिन से मरने के दिन तक हज़ार हसनात लिखता रहेगा। और जो भी आयत पढ़ी है उसके बदले जन्नत में एक सुर्ख़ याक़ूत का शहर और हर हर्फ के बदले एक सफ़ेद मोती का महल बनाएगा और उसकी शादी हूरूल ईन से कर देगा। और उससे राज़ी रहेगा। और उसका नाम इबादत गुज़ारों में लिख देगा। और उसका अंजाम नेकबख़्ती और मग़फ़ेरत पर होगा।

16. रजब के तीन दिन जुमेरात, जुमा और सनीचर को रोज़ा रखे के रिवायत में है के जो व्यक्ति इन मोहतरम महीनों में तीन दिन रोज़ा रखेगा परवरदिगार उसको नौ साल की इबादतों का सवाब इनायत फ़रमाएगा।

17. रजब के महीने में साठ रकत नमाज़ पढ़े इस तरह के हर रात में दो रकत नमाज़ अदा करे और हर रकत में सूरह हम्द के बाद तीन बार सूरह काफ़ेरून और एक बार सूरह तौहीद पढ़े और नमाज़ के बाद हाथों को बुलंद कर के कहे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِيْ

उसके अलावा कोई ख़ुदा नही व उसका कोई शरीक नही। उसीके लिए मुल्क है और उसी के लिए

وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَ

तारीफ़। वही ज़िनदगी देनेवाला है और वही मौत। वो ज़िंदा है जिसके लिए मौत नही। सारा ख़ैर उसीके

اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، اَللّٰهُمَّ

हाथ मे है।और वो हर शै पर क़ादिर है। उसीकी तरफ़ सबको लौटना है। कोई कोव्वतो ताक़त ख़ुदाए

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَآلِهٖ،

अली व अज़ीम के अलावा नही। ख़ुदा हज़रत मुहम्मद नबी उम्मी व उनकी आल पर रहमत नाज़ल कर।

यह कहकर हाथों को अपने चेहरे पर फेरे के रसूले अक्रम (स) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति भी यह आमाल अंजाम देगा उसकी दुआ मुस्तजाब होगी। और साठ हज और साठ उमरों का सवाब दिया जाएगा।

18. रसूले अक्रम (स) से रिवायत है के जो व्यक्ति रजब के महीन की एक रात में सौ बार सूरह तौहीद दो रकत नमाज़ मे पढ़ेगा गोया उसने सौ साल रोज़े रखे हैं। और ख़ुदा उसे बेहिश्त मे महल इनायत करेगा और हर महल किसी न किसी पैग़ंबर के पड़ोस मे होगा।

19. इनही हज़रत से रिवायत है के जो व्यक्ति रजब के महीने मे दस रकत नमाज़ पढ़ेगा और हर रकत में सूरह हम्द के बाद एक बार सूरह काफ़ेरून और तीन बार सूरह तौहीद पढ़ेगा परवरदिगार उसके हर गुनाह को माफ़ कर देगा।

20. अल्लामा मजलिसी ने ज़ादुल माद में लिखा है के अमीरूल मोमिनीन (अ) से नक़्ल किया गया है के रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति भी रजब, शाबान और रमज़ान के महीनों में हर रात में तीन तीन बार सूरह हम्द, आयतल कुर्सा और चारों क़ुल पढ़ेगा और तीन बार कहेगा:

سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ، وَ لَا حَوْلَ وَ

अल्लाह की ज़ात पाक व पाकीज़ा है। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद

और तीन बार कहेगा: لَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

नही है। और अल्लाह सब से बड़ा है। कोई ताक़त और तावानाई नही सिवाए अल्लाह के।

और तीन बार कहेगा: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ.

ऐ अल्लाह मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत भेज।

और चार सौ बार कहेगा: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ

ऐ अल्लाह मोमिनीनो मोमिनात की मग़िफ़रत करदे।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْه

मै अल्लाह से मग़ाफ़िरत मागंता हूँ और उससे माफ़ी चाहता हूँ।

तो परवरदिगार उसके तमाम गुनाहों को माफ़ कर देगा। चाहे वह बारिश के क़तरे, दरख्त के पत्ते और दरिया के झाग के बराबर हां।
नीज़ अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया के रजब के महीने की रात में एक हज़ार बार कहे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

ख़ुदाके सिवा कोई माबूद नही।

रजब की पहली शबे जुमा

वाज़ेह रहे के रजब के महीने की पहली शबे जुमा को लैलतुल रगाएब कहा जाता है और उसके लिए रसूले अक्रम (स) से बेशुमार फ़ज़ीलत के साथ एक अमल वारिद हुआ है। जिसको इबने ताऊस ने इक़्बाल में और अल्लामा हिल्ली ने इज़ाज़ा बनी ज़ोहरा से नक़्ल किया है। जिसकी फ़ज़ीलतों में यह भी है के उसकी वजेह से बहुत से गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। और जो व्यक्ति इस नमाज़ को अदा करेगा जब क़ब्र की पहली रात होगी तो परवरदिगार उसके सवाब को हसीन तरीन शक्ल और नूरानी चेहरे के साथ फ़सीह ज़बान देकर भेज देगा और वह उससे कहेगा के मेरे महबूब तुझे बशारत हो के तूने हर सख़्ती और हर ग़म से नजात हासिल कर ली है तो वह घबरा कर पूछेगा के मैंने तुझ जैसा हसीन तो कोई नहीं देखा है और न ऐसा शीरीन कलाम कभी सुना है और न ऐसी ख़ुशबू महसूस की है। तो तू है कौन? वह कहेगा के मैं उस नमाज़ का सवाब हूँ जो तूने फुलाँ साल रजब के महीने की फुलाँ रात में अंजाम दी थी अब मैं आया हूँ के तेरे हक़ को अदा करूँ और तेरी तनहाई का मूनिस बनूँ। तेरी वहशत मिटा दूँ और जब क़यामत के दिन सूर फूंका जाए तो तेरे सर पर साया फ़िगन रहूँ। ख़ुशहाल होजा के अब कोई ख़ैर तुझसे ज़ाएल न होगा। इस नमाज़ की कैफ़ियत यह है के रजब के महीने की पहली जुमेरात को रोज़ा रखे और जब शबे जुमा हो जाए तो नमाज़े मग़रिब और ईशा के बीच बारह रकत नमाज़ पढ़े और हर दो रकत पर सलाम पढ़े और हर रकत में सूरह हम्द के बाद तीन बार सूरह क़द्र और बारह बार सूरह तौहीद पढ़े। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सत्तर बार कहे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى آلِهٖ.

ऐ ख़ुदा रहमत नाज़िल कर नबीए उम्मी मोहम्मद और उनकी आल पर।

उसके बाद सजदे में जाए और सत्तर बार कहे:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَآئِكَةِ وَالرُّوحِ

पाक है क़ुद्दूस है मलाएका और रूह का मालिक।

फिर सजदे से सर उठा कर सत्तर बार कहे:

رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ تَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيُّ

ऐ रब माफ़ कर और रहम कर और दरगुज़र कर जो तू जानता है। बेशक तू सबसे आला और

और दोबारा सजदे में जाकर फिर सत्तर बार कहे: الْاَعْظَمُ

बड़ा है।

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَآئِكَةِ وَالرُّوحِ

पाक है क़ुद्दूस है मलाएका और रूह का मालिक।

और फिर अपनी हाजत को तलब करे जो इन्शाअल्लाह पूरी होगी। यह भी मालूम रहे के रजब के महीने में ज़ियारते इमाम रेज़ा (अ) मुस्तहब भी है और ख़ुसूसियत भी रखती है जिस तरह के इस महीने में उमरे की फ़ज़ीलत भी वारिद हुई है। और उसे हज के बराबर क़रार दिया गया है। और नक़्ल किया गया है के रजब के महीने में इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ) ने उमरा किया तो रोज़ाना ख़ाने काबा के पास नमाज़ अदा फ़रमाते थे। और दिन रात सजदा किया करते थे। और सजदे में यह ज़िक्र किया करते थे:

عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ فَلْيَحْسُنِ الْعَفْوُ مِنْ عِنْدِكَ

तेरे बंदे की ख़ता बहुत बड़ी है तो तेरी तरफ़ से माफ़ी को अच्छा बना दे।

दूसरी क़िस्म: रजब के दिन रात के मख़सूस आमाल

पहली रात जो इन्तेहाई मोहतरम रात है उसमे चंद आमाल हैं:

1. जब चांद देखे तो पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيمَانِ وَالسَّلاَمَةِ وَالْاِسْلاَمِ رَبِّي

पर्वर्दिगार इस चाँद को हमारे लिए अम्नो ईमान व सलामाती व इसलाम का चाँद कर देना। ऐ चाँद

وَرَبُّكَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ

मेरे और तेरा दोनो का पर्वर्दिगार वही ख़ुदा ए इज़ व जल है।

और हज़रते रसूल (स) से मनक़ूल है के जब रजब का चाँद देखे तो पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي رَجَبٍ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا شَهْرَ رَمَضَانَ وَاَعِنَّا

ख़ुदाया हमे रजब व शाबान के महीने की बरकत इनायत फ़रमा व हमे रमज़ान के महीने तक पहुँचा

عَلَى الصِّيَامِ وَالْقِيَامِ وَحِفْظِ اللِّسَانِ وَغَضِّ الْبَصَرِ وَلَا تَجْعَلْ

दे। और उसके राज़े व नमाज़ और उसके ज़माने मे अपनी ज़बान को महफ़ूज़ रखने और निगाहों को

حَظَّنَا مِنْهُ الْجُوعَ وَالْعَطَشَ

नीचे रखने मे हमारी मदद कर। और हमारा हिस्सा रमज़ान के महीने मे केवल भूको प्यास न होने पाए।

2. इस शब में ग़ुस्ल करे के बाज़ ओलमा ने फ़रमाया है और रसूले अक्रम (स) से रिवायत है के जो व्यक्ति रजब के महीन को हासिल कर ले और उसकी पहली और पंद्रह और आख़री रात में ग़ुस्ल करे तो वह गुनाहों से यूँ निकल आता है जैसे शिकमे मादर से पैदा हुआ हो।
3. ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) पढ़े।
4. नमाज़े मग़रिब के बाद बीस रकत नमाज़ पढ़े और सूरह हम्द और सूरह तौहीद के साथ हर दो रकत के बाद सलाम पढ़े ताके ख़ुद और उसके अहलो अयात मालो औलाद सब महफ़ूज़ रहें। और अज़ाबे क़ब्र से भी पनाह में रहे और सिरात से बिजली की तरह गुज़र जाए।
5. नमाज़े इशा के बाद दो रकत नमाज़ पढ़े जिसकी पहली रकत में सूरह हम्द और सूरह अलम नशरह एक बार और सूरह तौहीद तीन बार और दूसरी रकत में सूरह हम्द अलम नशरह और सूरह तौहीद और सूरह नास और सूरह फ़लक पढ़े सलाम के बाद तीस बार कहे:
नही है माबूद ख़ुदा के सिवा।
और तीस बार सलवात पढ़े ताके परवरदिगार उसके गुनाहों को माफ़ कर के इतना पाकीज़ा बना दे जैसे आज ही पैदा हुआ है। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ और तीस बार सलवात पढ़े ताके परवरदिगार उसके गुनाहों को माफ़ कर के इतना पाकीज़ा बना दे जैसे आज ही पैदा हुआ है। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ6. तीस रकत नमाज़ पढ़े जिसकी हर रकत में सूरह हम्द और सूरह क़ाफ़िरून एक बार और सूरह तौहीद तीन बार।
???7. वह अमल बजा लाए जिसे शेख़ ने मिसबाहे मुतहज्जिद में लिखा है। (शबे अव्वले रजब के आमाल में) अबुल बख़तरी वहब बिन वहब के वास्ते से इमामे सादिक़ (अ) से और उन्होंने अपने आबा-ओ-अजदाद के ज़रिए अमीरूल मोमिनीन (अ) से नक़्ल किया है के हज़रत को यह बात पसंद थी के इंसान अपने को साल में चार रात ख़ाली रखे। और उन रातों को इबादते इलाही में गुज़ार दे। शबे अव्वल माहे रजब, शबे नीमए शाबान, शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदे क़ुरबान।

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से रिवायत है के आपने फ़रमाया के जो व्यक्ति नमाज़े इशा के बाद शबे अव्वले रजब इस दुआ को पढ़े उसने गोया एक अच्छा काम किया है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُكَ بِاَنَّكَ مَلِكٌ وَاَنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ مُقۡتَدِرٌ وَاَنَّكَ

ख़ुदाया मै तुझसे विन्ती करता हूँ के तू बादशाह है और तू हर चा०rज पर क़ुदरत रखता है।

مَا تَشَاءُ مِنۡ اَمۡرٍ یَكُوۡنُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَتَوَجَّهُ اِلَیۡكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِیِّ

और जो काम चाहता है वो हो जाता है। मै तेरी तरफ़ मुतवज्ञे हूँ। तेरे नबी ए रहमत हज़रत

الرَّحۡمَةِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ یَا مُحَمَّدُ یَا رَسُوۡلَ اللّٰهِ اِنِّیۡ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰی

मुहम्मद के वास्ते से। ऐ मुहम्मद ऐ रसूले ख़ुदा मै आपके ज़रिए उस ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्ञे

اللّٰهِ رَبِّكَ وَرَبِّیۡ لِیُنۡجِحَ لِیۡ بِكَ طَلِبَتِیۡ اَللّٰهُمَّ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ وَ الۡاَئِمَّةِ

हूँ। जो मेरे और आपका दोनो का पर्वर्दिगार है। ताके आपके वसीले से मेरी हाजतों को पूरा

مِنۡ اَهۡلِ بَیۡتِهٖ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَ عَلَیۡهِمۡ اَنۡجِحۡ طَلِبَتِیۡ

करदे।

और उसके बाद अपनी हाजतें बयान करे।
अली बिन हदीद से रिवायत है के इमाम मूसा काज़म (अ) नमाज़े शब के बाद सजदे में यह दुआ पढ़ा करते थे।

لَكَ الۡمَحۡمَدَةُ اِنۡ اَطَعۡتُكَ وَلَكَ الۡحُجَّةُ اِنۡ عَصَیۡتُكَ لَا صُنۡعَ لِیۡ وَلَا

पर्वर्दिगार अगर मै तेरा कहना मानूँ तो तेरा शुक्र है। और अगर मै मासियत करूँ तो तेरी हुज्जत मुझपर

لِغَيْرِی فِی اِحْسَانٍ اِلَّا بِكَ يَا كَائِنًا قَبْلَ كُلِّ شَیْءٍ وَيَا مُكَوِّنَ كُلِّ

तमाम है। मेरे लिए मेरे ग़ैर के पास कोई नेकी नही है। मगर वो सब तेरा ही अतिया है। ऐ वो जो सबसे

شَیْءٍ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيرٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَدِيلَةِ

पहले था और हर शै का ईजाद करनेवाला है। तूही हर चा०rज पर क़ादिर है। ख़ुदाया मै तेरी पनाह

عِنْدَ الْمَوْتِ وَمِنْ شَرِّ الْمَرْجِعِ فِی الْقُبُورِ وَمِنَ النَّدَامَةِ يَوْمَ

चाहता हूँ। मौत के समय इनहिराफ से और क़बर मे बदतरीन बाज़गश्त से। और क़यामत के दिन की

الآزِفَةِ فَاَسْاَلُكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَجْعَلَ عَيْشِی

शर्मिंदगी से। मेरा सवाल है के मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा। मेरी ज़िंदगी को

عِيشَةً نَقِيَّةً وَمِيتَتِی مِيتَةً سَوِيَّةً وَمُنْقَلَبِی مُنْقَلَبًا كَرِيمًا

पाकीज़ा ज़िंदगी और मौत को मोतदिल मौत। और मेरी वापसी को बाकरामत वापसी क़रार देदे जिसमे

غَيْرَ مُخْزٍ وَلَا فَاضِحٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الاَئِمَّةِ يَنَابِيعِ

न कोई ज़िल्लत हो और न कोइ रूसवाई। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा। जो

الْحِكْمَةِ وَاُولِی النِّعْمَةِ وَمَعَادِنِ الْعِصْمَةِ وَاعْصِمْنِی بِهِمْ مِنْ

आइम्मा हैं। हिकमत से सरचश्मे और औलिया ए नेमत हैं। और इस्मत का मादन हैं। उनके ज़रिए मुझे

كُلِّ سُوءٍ وَلَا تَاخُذْنِی عَلٰی غِرَّةٍ وَلَا عَلٰی غَفْلَةٍ وَلَا تَجْعَلْ عَوَاقِبَ

हर बुरई से महफ़ूज़ रखना और मुझे मेरी ग़फ़लत की हालत मे अपनी गिरफ़्त मे न ले लेना। और न मेरे

اَعْمَالِی حَسْرَةً وَارْضَ عَنِّی فَاِنَّ مَغْفِرَتَكَ لِلظّٰلِمِیْنَ وَاَنَا مِنَ

अनजाने मे मुझे पकड़ लेना। मेरे आमाल का अंजाम हसरत न होने पाए। और तू हम से राज़ी होजा के

الظّٰلِمِیْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِی مَا لَا یَضُرُّكَ وَاَعْطِنِی مَا لَا یَنْقُصُكَ

तेरी मग़ाफ़िरत अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों के लिए ही है। और मै उन्ही मे से हूँ। ख़ुदाया मेरे गुनाह को

فَاِنَّكَ الْوَسِیْعُ رَحْمَتُهُ الْبَدِیْعُ حِكْمَتُهُ وَاَعْطِنِی السَّعَةَ وَالدَّعَةَ

माफ़ करदे के उस्से तेरा कोई नुक़सान नही है। और मुझे वो सब कुछ अता फ़रमा दे जिससे तेरे खज़ाने मे

وَ الْاَمْنَ وَالصِّحَّةَ وَالنُّجُوعَ وَالْقُنُوعَ وَالشُّكْرَ وَالْمُعَافَاةَ

कोई कमी होनेवाली नही है। के तेरी रहमत वसी और तेरी हिकमत निराली है। मुझे वुसअत राहत अमन

وَالتَّقْوٰی وَالصَّبْرَ وَالصِّدْقَ عَلَیْكَ وَعَلٰی اَوْلِیَائِكَ وَالْیُسْرَ

सेहेत ख़ुज़ू क़िनाअत शुक्र आाफ़ियत तक़वा सब्र और सदाक़त की ताफ़ा०rक अता फ़रमा। और अपने

وَالشُّكْرَ وَاَعِمَّ بِذٰلِكَ یَارَبِّ اَهْلِی وَوَلَدِی وَاِخْوَانِی فِیكَ وَمَنْ

और औलिया के बारे मे सहूलत और शुक्र अता फ़रमा और मेरे तमाम अहल व औलाद बिरादराने

اَحْبَبْتُ وَاَحَبَّنِی وَوَلَدْتُ وَوَلَدَنِی مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُؤْمِنِیْنَ

ईमान और जिनसे मै मुहब्बत करता हूँ और मुझसे मुहब्बत करते हैं और मेरी औलाद मे हैं या मेरे आबा

یَارَبَّ الْعَالَمِیْنَ

व अजाद मे मुसलिमीन व मोमिनीन हैं। उन सब को मेरी दुआ मे शामिल करले ऐ रब्बुल आलमीन।

इब्ने अश्याम का बयान है के यह दुआ नमाज़े शब की आठ रकत के बाद नमाज़े वत्र से पहले पढ़ी जाए। उसके बाद तीन रकत नमाज़े शफ्अ और वत्र पढ़कर यह दुआ पढ़े:
वाज़ेह रहे के ओलमा इक्राम ने इस रात के लिए मख़सूस नमाज़ भी नक़्ल की है जिसके ज़िक्र करने की इस मकाम पर गुंजाइश नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَا تَنْفَدُ خَزَائِنُهٗ وَلَا یَخَافُ آمِنُهٗ رَبِّ اِنِ

सारी हम्द उस ख़ुदा के लिए है जिसके ख़ज़ाने ख़त्म नही होते हैं। और उसका मह़फ़ूज़ किया

ارْ تَكَبْتُ الْمَعَاصِیَ فَذٰلِكَ ثِقَةٌ مِنِّیْ بِكَرَمِكَ اِنَّكَ تَقْبَلُ

हुआ ख़ाफ़ज़दा नही होता है। ख़ुदाया अगर मैने गुनाह किया है तो सिर्फ़ इस लिए के तेरे करम

التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِكَ وَتَعْفُو عَنْ سَیِّئَاتِهِمْ وَتَغْفِرُ الزَّلَلَ

पर एतेमाद था के तू तौबा को क़ुबूल कर लेता है। और बुराईयों को माफ़ कर देता है। लगाज़िशों

وَاِنَّكَ مُجِیْبٌ لِدَاعِیْكَ وَمِنْهُ قَرِیْبٌ وَاَنَا تَائِبٌ اِلَیْكَ مِنَ

से दरगुज़र कर देता है। और अपने दुआ करनेवालों की सुनता है। और उनसे क़रीब तर है।

الْخَطَایَا وَرَاغِبٌ اِلَیْكَ فِیْ تَوْفِیْرِ حَظِّیْ مِنَ الْعَطَایَا یَا خَالِقَ

और मै तेरी बारगाह मे अपनी ख़ताओं से तौबा कर रहा हूँ और तुझही से कह रहा हूँ। के अपने

الْبَرَایَا یَا مُنْقِذِیْ مِنْ كُلِّ شَدِیْدَةٍ یَا مُجِیْرِیْ مِنْ كُلِّ مَحْذُوْرٍ

अताया मे से मेरा हिस्से को ज़्यादा करदे। ऐ मख़लूकात के पैदा करनेवाले। ऐ हर मुसीबत से

وَفِّرْ عَلَيَّ السُّرُورَ وَاكْفِنِي شَرَّ عَوَاقِبِ الْأُمُورِ فَأَنْتَ

निकालने वाले। हर बुरई से पनाह देने वाले। मेरे सुरूर मे इज़ाफ़ा करदे। और मुझे बदतरीन

اللهُ عَلَى نَعْمَائِكَ وَجَزِيلِ عَطَائِكَ مَشْكُورٌ وَلِكُلِّ خَيْرٍ

नताएज से महफ़ूज़ रखना। के तू अल्लाह है। और सारी नेमतें तेरी ही हैं। सारे अताया पर तेरा ही

مَذْخُورٌ

शुक्रिया अदा किया जाता है। और हर ख़ैर के लिए तुझ ही को ज़ºखीरा समझा जाता है।

रजब का पहला दिन

रोज़े अव्वल रजब: इन्तेहाई बा शराफ़त दिन है और उसमें चंद आमाल हैं:

1. रोज़ा रखना: रिवायत में है के हज़रते नूह (अ) इसी तारीख़ कश्ती में सवार हुए थे और आपने अपने साथियों से कहा था के रोज़ा रखो के जो व्यक्ति भी इस दिन रोज़ा रखेगा परवरदिगारे आलम जहन्नम को उससे एक साल के फ़ासले तक दूर कर देगा।
2. ग़ुस्ल करना।
3. ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) पढ़ना। के शेख़ ने बशीर दहान से रिवायत की है के इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के जो व्यक्ति ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) रजब के महीने के पहले दिन पढ़े तो ख़ुदा उसको ज़रूर बख़्श देगा।
4. वह लंबी दुआ पढ़े जो सय्यद ने इक़्बाल में नक़्ल किया है।
5. नमाज़े सलमान का सिलसिला शुरू करे। इस तरह के दस रकत नमाज़ पढ़े जिसमें हर दो रकत के बाद सलाम पढ़े और हर रकत में एक बार हम्द और तीन बार सूरह तौहीद और तीन बार सूरह काफ़ेरून पढ़े और हर सलाम के बाद हाथों को उठा कर पढ़े:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي

ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नही है। वह एक है उसका कोई शरीक नही है। उसीकी क़ायनात और

وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

उसी के लिए तारीफ़ है। वह ज़िन्दा करता है और मौत देता है। वह ऐसा ज़िन्दा है जिसे मौत नही

फिर ये दुआ पढ़े: قَدِيرٌ

है। उसके हाथों मे ख़ैर और वह हर चा०rज पर क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا

ख़ुदाया तू जिसे देना चाहे उसे कोई रोक नही सकता और कोई दे नही सकता जिसे तू मना करे

يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

और जिसका तूने फ़ैसला किया उसे कोई रोक नही सकता।

फिर हाथों को अपने चेहरे पर फेरे।
फिर पंद्रह रजब को भी यह नमाज़ इसी तरह पढ़े। लेकिन दुआ के बाद कहे:

اِلٰهًا وَاحِدًا اَحَدًا فَرْدًا صَمَدًا لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا

परवरदिगारे आलम, जो एक व यकता है। अकेला है, बेनियज़ है। न तो उसने पत्नी ली है न बेटा।

फिर महीने के आाख़िर दिन भी यही नमाज़ पढ़े। और पहली दुआ के बाद ये पढ़े:

وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

मुहम्मद (स) व उनकी आले पाक पर ख़ुदा रहमत करे। और कोई ताक़त व क़ुदरत नही है सिवाए

الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

बुज़ुर्ग व बरतर ख़ुदा के।

फिर अपने हाथों को चेहरे पर मलकर अपनी हाजत तलब करे।
और देख इस नमाज़ के फ़ायदों से ग़फ़लत न होनी चाहिए के वह बहुत हैं। और हज़रते सलमान की पहली रजब में एक और नमाज़ भी वारिद हुई है। जो दो रकत है और हर रकत में हम्द और तीन बार सूरह तौहीद है। इसकी बड़ी फ़ज़ीलत है और ख़ुलासा यह है के गुनाहों की मग़िफ़रत फ़ितनए क़ब्र, अज़ाबे क़यामत, जुज़ाम, बुर्स और ज़ातुल जन्ब से हिफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रिया है।
सय्यद ने इस दिन के लिए चार रकत नमाज़ नक़्ल की है जिसे किताबे इक़्बाल में देखा जा सकता है। वाज़ेह रहे के उसी दिन 57 हिजरी में इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ) की विलादत है अगरचे मेरे ख़याल से यह तारीख़ तीन सफ़र है।

दो रजब

उसके अलावा एक क़ौल के अनुसार दूसरी रजब को हिजरी 212 में इमाम अली नकी (अ) की विलादत बा सआदत है। और आपकी शहादत हिजरी 254 में तीन रजब को सुर्रे मन रा में हुई है।

दस रजब

और इब्ने अय्याश के क़ौल के अनुसार दस रजब को इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) की विलादत बा सआदत है।
तेरह रजब की रात
वाज़ेह रहे के रजब, शाबान और रमज़ान में से हर एक महीने में मुस्तहब

है के तेरहवीं रात में दो रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में सूरह हम्द, यासीन, तबारकल मुल्क और तौहीद पढ़े। और चौधवीं की रात में चार रकत नमाज़ दो सलाम के साथ इसी तरह पढ़े। और पंद्रहवीं की रात में छे रकत नमाज़ तीन सलाम के साथ इसी तरीके से अदा करे के इमाम सादिक़ (अ) से मरवी है के जो व्यक्ति ऐसा करेगा वह इन तीनों महीनों की सारी फ़ज़ीलत हासिल कर लेगा और उसके शिर्क के अलावा तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

तेरहवाँ दिन

यह अय्यामुल बैज़ की शुरूआत है। इस दिन और इसके बाद के दो दिनों के रोज़ों का बहुत सवाब वारिद हुआ है। और कोई व्यक्ति आमाले उम्मे दाऊद बजा लाना चाहता है तो उसे इस दिन रोज़ा भी रखना चाहिए।

उस दिन बिनाबर मशहूर तीस आम्मुल फिल में मक्का मोअज़्ज़मा ख़ाने काबा में इमाम अली (अ) की विलादत बा सआदत हुई है।

पंद्रहवीं रात

निहायत दरजा फ़ज़ीलत वाली रात है और इसमें चंद आमाल हैं।

एक: ग़ुस्ल करना।

दो: सारी रात इबादत में बेदार रहना। जैसा के अल्लामा मजलिसी ने फ़रमाया है।

तीन: ज़ियारते इमामे हुसैन (अ) करना।

चार: छ: रकत नमाज़ जो तेरहवीं की रात में ज़िक्र की गई है।

पाँच: तीस रकत नमाज़। हर रकत में हम्द और दस बार सूरह तौहीद। इस नमाज़ को सय्यद ने हज़रत रसूल (स) से बेहद फ़ज़ीलत के साथ नक़्ल किया है।

छे:: बारह रकत नमाज़। हर दो रकत पर सलाम। इसमें हर रकत में सूरह हम्द, तौहीद, फ़लक, नास, आयतल कुर्सी और क़द्र। हर एक को चार दफ़ा पढ़े और सलाम के बाद चार दफ़ा कहे:

اللّٰهُ اللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا وَلَا اَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖ

अल्लाह, अल्लाह मेरा रब है और मै किसी चीज़ को उसका शरीक नही क़रार देता और उसके

وَلِیًّا

अलावा किसी को वली नही मानता।

उसके बाद जो चाहे तलब करे।

इस नमाज़ को इसी तरीके से सय्यद ने इमामे सादिक़ (अ) से रिवायत की है। लेकिन शेख़ ने मिस्बाह में दाऊद बिन सरहान से रिवायत की है के इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के पंद्रहवीं रजब की रात में बारह रकत नमाज़ पढ़े। हर रकत में हम्द और सूरह और जब फ़ारिग़ हो जाए तो हम्द, फ़लक, नास, तौहीद और आयतल कुर्सी, हर एक को चार दफ़ा पढ़े। और उसके बाद चार दफ़ा पढ़े:

फिर पढ़े: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

पाक है अल्लाह ताला तारीफ़ अल्लाह के लिए है और कोई माबूद नही अल्लाह के सिवा और अल्लाह बुज़ुर्ग है।

اللّٰهُ اللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا وَمَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ

अल्लाह, अल्लाह मेरा रब है और मै किसी चीज़को उसका शरीक नही क़रार देता और उसने जो चहा

الْعَظِیْمِ

हुआ।और कोई ताकत व क़ुदरत नही सिवाए बुज़ुर्ग व बरतर ख़ुदा के।

और सत्ताइसवीं की शब में भी इस अमल को बजा लाए।

पंद्रह रजब

नेहायत बरकतवाला दिन है और इसमें चंद आमाल हैं:

पहले: ग़ुस्ल करना
दो: ज़ियारते इमाम हुसैन (अ)। इब्ने अबी नस्र से मनक़ूल है के मैंने हज़रत इमाम रज़ा (अ) से दरयाफ़्त किया के किस महीने में इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करूँ तो आपने फ़रमाया के नीमे रजब और नीमे शाबान में।
तीन: नमाज़े सलमान। इसी तरह जो रोज़े अव्वल में बयान हो चुकी है।
चार: चार रकत नमाज़ पढ़े और सलाम के बाद हाथ को बारगाहे ख़ुदा में उठा कर यूँ कहे:

اَللّٰهُمَّ يَا مُذِلَّ كُلِّ جَبَّارٍ وَيَا مُعِزَّ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْتَ كَهْفِي حِيْنَ

ऐ ख़ुदा ऐ सर कशों के ज़लील करनेवाले। ऐ मोमिनों को इज़्ज़त देने वाले। तू ही मेरी पनाह है जब

تُعْيِينِي الْمَذَاهِبُ وَاَنْتَ بَارِئُ خَلْقِي رَحْمَةً بِي وَقَدْ كُنْتَ عَنْ

रासते मुझको थका दें और तू ही रहमत के साथ मेरा पैदा करने वाला है। जबके तू मेरे पैदा करने से

خَلْقِي غَنِيًّا وَلَوْلَا رَحْمَتُكَ لَكُنْتُ مِنَ الْهَالِكِيْنَ وَاَنْتَ مُؤَيِّدِي

बेनियाज़ था और अगर तेरी रहमत न होती तो मै हलाक होनेवालों मे हो जाता। और तू ही मेरे दुश्मों

بِالنَّصْرِ عَلٰى اَعْدَائِي وَلَوْلَا نَصْرُكَ اِيَّايَ لَكُنْتُ مِنَ الْمَفْضُوحِيْنَ

के मुक़ाबले मे मेरी मदद करने वाले है। वरना तेरी मदद हासिल न होती तो मै रूस्वा हो जानेवालों

يَا مُرْسِلَ الرَّحْمَةِ مِنْ مَعَادِنِهَا وَمُنْشِئَ الْبَرَكَةِ مِنْ مَوَاضِعِهَا يَا

मे हो जाता। ऐ रहमतों के भेजेनेवाले अपने रहमत के ख़ज़ाने से और बरकत के ज़ाहिर करनेवाले

مَنْ خَصَّ نَفْسَهُ بِالشُّمُوخِ وَالرِّفْعَةِ فَاَوْلِيَاؤُهُ بِعِزِّهِ يَتَعَزَّزُونَ

उसके मक़ाम से ऐ वो ज़ात जिसने अपने को बुलंदी के साथ मख़सूस किया है। तो उसके दोस्त

وَيَا مَنْ وَضَعَتْ لَهُ الْمُلُوكُ نِيرَ الْمَذَلَّةِ عَلٰى اَعْنَاقِهِمْ فَهُمْ

भी उसकी इज़्ज़त की वजेह से इज़्ज़त पा रहे हैं। और ऐ वो ज़ात जिसके मुक़ाबले मे दुनिया के

مِنْ سَطَوَاتِهِ خَائِفُونَ اَسْاَلُكَ بِكَيْنُونِيَّتِكَ الَّتِي اشْتَقَقْتَهَا

बादशाहों ने गर्दनों मे ज़िल्लत का तौक पहन लिया है। तो वो उसकी सितवत से डर रहे हैं। मै तुझसे

مِنْ كِبْرِيَائِكَ وَاَسْاَلُكَ بِكِبْرِيَائِكَ الَّتِي اشْتَقَقْتَهَا مِنْ عِزَّتِكَ

सवाल करता हूँ तेरी जात की हक़ा०rकत के वास्ते से जिसको तूने अपनी किब्रिआई से निकाला

وَاَسْاَلُكَ بِعِزَّتِكَ الَّتِي اسْتَوَيْتَ بِهَا عَلٰى عَرْشِكَ فَخَلَقْتَ بِهَا

है। और तेरी किब्रिआई के वास्ते से जिसको तूने अपनी इज़्ज़त से निकाला है। और तेरी इज़्ज़त

جَمِيعَ خَلْقِكَ فَهُمْ لَكَ مُذْعِنُونَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ

के वास्ते से जिसके ज़रिये से तू अर्श पर ग़ालिब है। और तूने तमाम मख़लूक़ात को पैदा किया

بَيْتِهِ

है और वे सब के सब तेरे मुतारिफ़ हैं के तू दुरूद नाज़ल कर मुहम्मद और उनके अहलेबैत पर।

रिवायत में है के जो साहेबे ग़म इस दुआ को पढ़ेगा ख़ुदावंदे आलम उसको ग़म से नजात अता वार देगा।

पाँच: अमले उम्मे दाऊद। इस दिन का बेहतरीन अमल है। तमाम हाजतों के पूरा होने, रंजो ग़म के दफ़ा होने और ज़ालिमों के दूर करने के लिए। इस अमल का तरा०rका मिस्बाहे शेख़ के अनुसार यह है के जब इस अमल को करना चाहे तो पहले तेरह, चौदह और पंद्रह रजब को रोज़ा रखे। फिर पंद्रहवीं को ज़वाल के समय ग़ुस्ल करे और ज़वाल के बाद नमाज़े ज़ोहर और अस्र

को बेहतरीन रूकू और सजदे के साथ तनहाई के मकाम में बजा लाए। कोई चीज़ उसको मशग़ूल न कर सके और कोई उससे बात न करे और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो क़िबले की तरफ़ मूँह कर के सूरह हम्द को सौ बार, सूरह इख़लास को सौ बार और आयतल कुर्सा को दस बार पढ़े। उसके बाद सूरह अनआम, बनी इस्रईल, कहफ़, लुक़मान, यासीन, साफ्फात, सजदा, हा मीम दोख़ान, फत्ह, वाकेआ, मुल्क, क़लम, इनशेक़ाक़ और इसके बाद क़ुरान के आाख़िर तक के तमाम सूरे पढ़े।
उसके बाद क़िबले की ओर मूँह करके यह दुआ भी पढ़े:

صَدَقَ اللهُ الْعَظِيْمُ الَّذِىْ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ ذُوْ

सच्चा है वो ख़ुदा ए बुज़ुर्ग जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। वो ज़िंदा और पाईदा है। साहेबे

الْجَلاَلِ وَالْاِكْرَامِ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ الَّذِىْ

जलालत और बुजुर्गा है। रहमान व रहीम है। और बरदुबार व हलीम है। उसकी जैसी कोई चीज़

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْئٌ وَّ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ الْبَصِيْرُ الْخَبِيْرُ

नही है। वो सुन्नेवाला जानने वाला वाकिफ़ व बसीर व ख़बीर है। अल्लाह ख़ुद गवाह है के उसके

شَهِدَ اللهُ اَنَّهٗ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَاۤئِمًا

अलावा कोई ख़ुदा नही है। और तमाम मलाएका और साहेबाने इल्म भी गवाह हैं के वो अद्ल के

بِالْقِسْطِ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ وَبَلَّغَتْ رُسُلُهُ الْكِرَامُ

साथ क़ायम है। कोई ख़ुदा नही है सिवाय उसके के ग़ालिब व हकीम है। उसके मुकर्रम रसूलों ने

وَ اَنَا عَلٰی ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الْمَجْدُ

अम्र को पहुँचा दिया। और मै भी उसके गवाहों मे हूँ। ख़ुदाया तेरे ही लिए हम्द है। तेरे लिए बुज़ुर्गा

وَ لَكَ الْعِزُّ وَ لَكَ الْفَخْرُ وَ لَكَ الْقَهْرُ وَ لَكَ النِّعْمَةُ وَ لَكَ

है। और तेरे ही लिए इज़्ज़त है। और तेरे ही लिए फ़०ख्र है। तेरे ही लिए क़हर। और तेरे ही लिए

الْعَظَمَةُ وَلَكَ الرَّحْمَةُ وَلَكَ الْمَهَابَةُ وَلَكَ السُّلْطَانُ وَلَكَ

नेमत। और तेरे ही लिए अज़मत। और तेरे ही लिए रहमत। और तेरे ही लिए हैबत। और तेरे ही

الْبَهَآءُ وَلَكَ الْاِمْتِنَانُ وَلَكَ التَّسْبِيْحُ وَلَكَ التَّقْدِيْسُ وَ

लिए बादशाहत। और तेरे ही लिए जलालत। और तेरे ही लिए बख़शिश। और तेरे ही लिए

لَكَ التَّهْلِيْلُ وَلَكَ التَّكْبِيْرُ وَلَكَ مَا يُرٰى وَلَكَ مَا لَا يُرٰى وَ

तसबीह। और तेरे ही लिए तक़दीस। और तेरे ही लिए तहलील। और तेरे ही लिए तकबीर है।

لَكَ مَا فَوْقَ السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى وَلَكَ مَا تَحْتَ الثَّرٰى وَ لَكَ

और तेरे ही लिए ज़ाहिर और पोशीदा सब कुछ है। और तेरे ही लिए वो सब है जो बुलंद आसमानों

الْاَرْضُوْنَ السُّفْلٰى وَلَكَ الْاٰخِرَةُ وَ الْاُوْلٰى وَلَكَ مَا تَرْضٰى بِهٖ

पर है और ज़मीन के नीचे है। और तेरे लिए निचली ज़मीने हैं। और तेरे लिए दुनिया व आाख़िरत

مِنَ الثَّنَاءِ وَ الْحَمْدِ وَ الشُّكْرِ وَ النَّعْمَآءِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

है। और तेरे ही लिए वो हम्द व सना और शुक्र और नेमत है। जिसको तू पसंद करता है। ख़ुदाया

جِبْرَءِيْلَ اَمِيْنِكَ عَلٰى وَحْيِكَ وَالْقَوِيِّ عَلٰى اَمْرِكَ وَالْمُطَاعِ

दुरूद नाज़िल फ़र्मा जिब्रईल पर जो तेरी वही के अमीन और तेरे अम्र के ज़िम्मेदार और तेरे

فِيْ سَمٰوٰتِكَ وَ مَحَالِّ كَرَامَاتِكَ الْمُتَحَمِّلِ لِكَلِمَاتِكَ النَّاصِرِ

आसमानों मे और तेरी करामातों के मक़ामात पर इताअत के क़ाबिल हैं। व तेरे कलेमात के

لِاَنْبِيَآءِكَ الْمُدَمِّرِ لِاَعْدَآءِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مِيْكَآءِيْلَ

संभालने वाले तेरे अंबिया के मददगार और दुश्मनो के हलाक करनेवाले हैं। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल

مَلَكِ رَحْمَتِكَ وَالْمَخْلُوْقِ لِرَافَتِكَ وَالْمُسْتَغْفِرِ الْمُعِيْنِ

कर मीकाईल पर जो तेरी रहमत का फ़रिश्ता और तेरी मेहेरबानी के लिए मख़लूक और इताअत

لِاَهْلِ طَاعَتِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اِسْرَافِيْلَ حَامِلِ عَرْشِكَ وَ

करने वालों के लिए मदद और इस्तिग़फ़ार करनेवाले हैं। ख़ुदाया दुरूद नाज़िल कर इस्रफ़ील पर

صَاحِبِ الصُّوْرِ الْمُنْتَظِرِ لِاَمْرِكَ الْوَجِلِ الْمُشْفِقِ مِنْ

जो तेरे अर्श को उठानेवाले और साहेबे सूर हैं। तेरे अम्र के मुनतिज़र तेरे ०खौफ़ से डरने वाले हैं।

خِيْفَتِكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى حَمَلَةِ الْعَرْشِ الطَّاهِرِيْنَ وَ عَلٰى

ख़ुदाया दुरूद नाज़िल कर अर्श के पाकीज़ा उठाने वालों पर। और नेकूकार बुज़ुर्ग और पाकीज़ा

السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ الطَّيِّبِيْنَ وَعَلٰى مَلَإِ كَتِكَ الْكِرَامِ

सफ़ीरों पर। और अपने मोहतरम लिखनेवाले फ़रिश्तों पर और उन फ़रिश्तों पर जो जन्नत के

الْكَاتِبِيْنَ وَ عَلٰى مَلٰٓئِكَةِ الْجِنَانِ وَ خَزِيْنَةِ النِّيْرَانِ وَ مَلَكِ

साकिन और जहन्म के निगराँ हैं। और मौत के फ़रिशते और उनके मददगारों पर। ऐ जला-लत

الْمَوْتِ وَالْاَعْوَانِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى

और बुज़ुर्गावाले ख़ुदा दुरूद नाज़िल कर हमारे पिता आदम पर जो तेरी बेनज़ीर मख़लूक थे।

اَبِيْنَا اٰدَمَ بَدِيْعِ فِطْرَتِكَ الَّذِىْ كَرَّمْتَهٗ بِسُجُوْدِ مَلٰٓئِكَتِكَ وَ

जिनको तूने मलाएका के सजदे से मोहतरम बनाया। और उनके लिए जन्नत को मुबाह कर दिया

اَبَحْتَهٗ جَنَّتَكَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اُمِّنَا حَوَّآءَ الْمُطَهَّرَةِ مِنَ

है। ख़ुदाया दुरूद नाज़िल कर हमारी माँ हव्वा पर जो रिज्स से पाकीज़ा और गंदिगी से साफ़ थीं।

الرِّجْسِ الْمُصَفَّاتِ مِنَ الدَّنَسِ الْمُفَضَّلَةِ مِنَ الْاِنْسِ

जिनको इनसानों मे फ़ज़ीलत दी और मक़ामात क़ुद्स मे सैर करने की इजाज़त दी। ख़ुदाया दुरूद

الْمُتَرَدَّدَةِ بَيْنَ مَحَالِّ الْقُدْسِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى هَابِيْلَ وَ

नाज़ल कर हाबील और शीस, इद्रीस, नूह, हूद, सालेह, इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याक़ूब,

شَيْثٍ وَاِدْرِيْسَ وَنُوْحٍ وَّهُوْدٍ وَّصَالِحٍ وَّاِبْرَاهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ

यूसुफ, असबात, लूत, शुऐब. अय्यूब, मूसा, हारून, यूशा, मीका, ख़िज़र, ज़ुलकरनैन, यूनुस,

وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَيُوْسُفَ وَالْاَسْبَاطِ وَلُوْطٍ وَّشُعَيْبٍ وَ

ज़करिया, शाया, यहया, तुरख, मता, इरमिया, हैकूक, दानियाल, उज़ैर, ईसा, शमून, जिरजीस,

اَيُّوْبَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ وَ يُوْشَعَ وَ مِيْشَا وَ الْخِضْرِ وَ ذِىْ

हवारिईन, इत्तेबा करने वाले। ख़ालिद, हनजला, लुक़मान पर ख़ुदाया दुरूद भेज मुहम्मद व आले

الْقَرْنَيْنِ وَيُوْنُسَ وَاِلْيَاسَ وَالْيَسَعَ وَذَاالْكِفْلِ وَطَالُوْتَ وَ

मुहम्मद पर। और बरकत भेज मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। जैसाके तूने दुरूद निज़ल किया

دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَزَكَرِيَّآءَ وَشُعْيَا وَيَحْيٰى وَتُوْرَخَ وَمَتّٰى وَاِرْمِيَا

रहमत नाज़ल की और बरकत नाज़ल की इब्राहीम व आले इब्राहीम पर। और बेशक तू साहेबे

وَحَيْقُوْقَ وَدَانِيَالَ وَعُزَيْرٍ وَّعِيْسٰى وَشَمْعُوْنَ وَجَرْجِيْسَ وَ

हम्द और साहेबे मज्द है। ख़ुदाया दुरूद नाज़िल कर पैग़ंबर के वसीयों और नेक लोगों और शहीदों

الْحَوَارِيِّيْنَ وَالْاَتْبَاعِ وَخَالِدٍ وَّحَنْظَلَةَ وَلُقْمَانَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

और हिदायत के इमामों पर। ख़ुदाया दुरूद नाज़ल कर अब्दाल, औताद, सय्याहे मारेफ़त, इबादत

عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّاٰلَ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ

गुज़ार मुख़लिसीन, ज़ाहिद, कोशिश करनेवालों पर और मुहम्मद और उनके अहलेबैत को

وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَرَحِمْتَ وَبَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَاٰلِ

बेहतरीन सलवात और बुज़ुर्गतरीन करामतों के साथ मख़सूस करदे। और मेरी तरफ़ से उनके रूह

اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى الْاَوْصِيَآءِ وَ

और जिस्म तक सलाम व तहियत पहुचा दे। और उनके फ़ज़्ल व शरफ़ व करम मे बढ़ौती कर।

السُّعَدَآءِ وَالشُّهَدَآءِ وَاَئِمَّةِ الْهُدٰى اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى الْاَبْدَالِ

ताके तू उनको पहुंचा दे नबियों और रसूलों और मुक़र्रबीन के सबसे ऊंचे दरजे तक। ख़ुदाया दुरूद

وَ الْاَوْتَادِ وَ السُّيَاحِ وَ الْعُبَّادِ وَ الْمُخْلِصِيْنَ وَ الزُّهَّادِ وَ اَهْلِ

नाज़िल कर उनपर जिनका मैने नाम लिया है और जिनका नाम नही लिया है तेरे मलाएका अंबिया

الْجِدِّ وَالْاِجْتِهَادِ وَ اخْصُصْ مُحَمَّدً وَّ اَهْلَ بَيْتِهٖ بِاَفْضَلِ

मुरसलीन और इताअत करनेवालों मे से। और मेरी सलवात को उन तक पहुँचा दे और उनकी

صَلَوَاتِكَ وَ اَجْزَلِ كَرَامَاتِكَ وَبَلِّغْ رُوْحَهٗ وَ جَسَدَهٗ مِنِّيْ تَحِيَّةً

रूहों तक मिला दे। और उनको अपने बारे मे मेरा भाई क़रार देदे। और अपनी दुआ करने पर

وَّ سَلَامًا وَ زِدْهُ فَضْلاً وَ شَرَفًا وَّ كَرَمًا حَتّٰى تُبَلِّغَهٗ اَعْلٰى

मददगार बना दे। ख़ुदाया मै तुझसे तेरी बारगाह मे और तेरे करम से तेरे करम की तरफ़ और तेरे

دَرَجَاتِ اَهْلِ الشَّرَفِ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَ

जूद से तेरे जूद की तरफ़ और तेरी रहमत से तरी रहमत की तरफ़ और तेरे अहले इताअत के द्वारा

الْاَفَاضِلِ الْمُقَرَّبِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مَنْ سَمَّيْتُ وَ مَنْ لَّمْ

तेरी ओर तवस्सुल चाहता हूँ। और सवाल करता हूँ तुझसे हर उस चा०rज का जिसका उनमे से

اُسَمِّ مِنْ مَلَآءِ كَتِكَ وَ اَنْبِيَآءِكَ وَ رُسُلِكَ وَاَهْلِ طَاعَتِكَ وَ

किसी एक ने सवाल किया है। अच्छे और मक़बूल सवाल जिनके ज़रिए उनहोंने वो मुस्तजाब

اَوْصِلْ صَلَوَاتِيْ اِلَيْهِمْ وَ اِلٰى اَرْوَاحِهِمْ وَ اجْعَلْهُمْ اِخْوَانِيْ

दुआ की जिसमे नाउम्मीदी न हो। ऐ अल्लाह ऐ बख़्शने वाले ऐ मेहेरबान ऐ बुर्दबार ऐ करम वाले ऐ

فِيْكَ وَ اَعْوَانِيْ عَلٰى دُعَآءِكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَشْفِعُ بِكَ اِلَيْكَ وَ

अज़ीम ऐ साहेबे जलालत। ऐ अता करने वाले। ऐ नेक। ऐ कफ़ील। ऐ वकील। ऐ दरगुज़र

بِكَرَمِكَ اِلٰى كَرَمِكَ وَ بِجُوْدِكَ اِلٰى جُوْدِكَ وَ بِرَحْمَتِكَ اِلٰى

करनेवाले। ऐ पनाह देनेवाले। ऐ जाननेवाले। ऐ रौशन करनेवाले। ऐ हलाक करने वाले। ऐ रोकने

رَحْمَتِكَ وَ بِاَهْلِ طَاعَتِكَ اِلَيْكَ وَ اَسْءَلُكَ اَللّٰهُمَّ بِكُلِّ مَا

वाले। ऐ दौलत बख़्शने वाले। ऐ तदबीर वाले। ऐ बुज़ुर्ग ऐ क़ुदरत वाले। ऐ देखने वाले। ऐ बदला

سَءَلَكَ بِهٖ اَحَدٌ مِّنْهُمْ مِنْ مَسْءَلَةٍ شَرِيْفَةٍ غَيْرِ مَرْدُوْدَةٍ وَّ

देने वाले शाकिरों को। ऐ नेक ऐ पाक ऐ पाकीज़ा। ऐ क़ादिर। ऐ ज़ाहिर। ऐ बातिन। ऐ परदा पोश।

بِمَا دَعَوْكَ بِهٖ مِنْ دَعْوَةٍ مُجَابَةٍ غَيْرِ مُخَيَّبَةٍ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا

ऐ मोहीत। ऐ इक़्तिदार वाले। ऐ निगेहबान। ऐ साहेबे जबरूत। ऐ क़रीब। ऐ महेरबान। ऐ साहेबे

رَحِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ يَا عَظِيْمُ يَا جَلِيْلُ يَا مُنِيْلُ يَا جَمِيْلُ

हम्द। ऐ ब इज़्ज़त। ऐ पैदा करनेवाले। ऐ लौटाने वाले। ऐ गवाह। ऐ अहसान करनेवाले। ऐ

يَا كَفِيْلُ يَا وَكِيْلُ يَا مُقِيْلُ يَا مُجِيْرُ يَا خَبِيْرُ يَا مُنِيْرُ يَا مُبِيْرُ يَا

नेकोकार। ऐ इनाम करने वाले। ऐ ज़्यादा देने वाले। ऐ रोकनेवाले। ऐ वुसअत देने वाले। ऐ हादी।

مَنِيْعُ يَا مُذِيْلُ يَا مُحِيْلُ يَا كَبِيْرُ يَا قَدِيْرُ يَا بَصِيْرُ يَا شَكُوْرُ يَا بَرُّ

ऐ भेजने वाले। ऐ हिदायत करनेवाले। ऐ क़ुव्वत अता करनेवाले। ऐ रोकने वाले। ऐ दफ़ा करने

يَا ظُهْرُ يَا ظَاهِرُ يَا قَاهِرُ يَا ظَاهِرُ يَا بَاطِنُ يَا سَاتِرُ يَا مُحِيْطُ يَا

वाले। ऐ बलंद करने वाले। ऐ बाक़ी। ऐ निगेहबान। ऐ ख़ालिक। ऐ रोजी देने वाले। ऐ तौबा क़ुबूल

مُقْتَدِرُ يَا حَفِيْظُ يَا مُتَجَبِّرُ يَا قَرِيْبُ يَا وَدُوْدُ يَا حَمِيْدُ يَا مَجِيْدُ يَا

करने वाले। ऐ खोलने वाले। ऐ निशात व राहत देने वाले। ऐ वो ज़ात जिसके पास हर चाबी है। ऐ

مُبْدِءُ يَا مُعِيْدُ يَا شَهِيْدُ يَا مُحْسِنُ يَا مُجْمِلُ يَا مُنْعِمُ يَا مُفْضِلُ

मनफ़अत बख़्श। ऐ मेहेरबान। ऐ नरमी करने वाले। ऐ काफ़ी। ऐ शिफ़ा देने वाले। ऐ सेहेत देने

يَا قَابِضُ يَا بَاسِطُ يَا هَادِيُ يَا مُرْسِلُ يَا مُرْشِدُ يَا مُسَدِّدُ يَا

वाले। ऐ बदला देने वाले। ऐ वफ़ादार। ऐ निगेहबान। ऐ इज़्ज़तवाले। ऐ जबरूत वाले। ऐ किब्राई

مُعْطِيُ يَا مَانِعُ يَا دَافِعُ يَا رَافِعُ يَا بَاقِيُ يَا وَافِيُ يَا خَلَّاقُ يَا وَهَّابُ يَا

वाले। ऐ सलामती और अमान देनेवाले। ऐ एकता। ऐ बेनियाज़। ऐ नूर। ऐ तदबीर करने वाले। ऐ

تَوَّابُ يَا فَتَّاحُ يَا نَفَّاحُ يَا مُرْتَاحُ يَا مَنْ بِيَدِهٖ كُلُّ مِفْتَاحٍ يَا

एक। ऐ अकेले। ऐ पाक। ऐ नासिर। ऐ मोनिस। ऐ उठाने वाले। ऐ वारिस। ऐ इल्म वाले। ऐ

نَفَّاعُ يَا رَؤُفُ يَا عَطُوْفُ يَا كَافِيُ يَا شَافِيُ يَا مُعَافِيُ يَا مُكَافِيُ يَا وَفِيُّ

हिकमत वाले। ऐ ज़ाहिर करने वाले। ऐ बुलंद मक़ाम। ऐ सूरतगर। ऐ सलामती देने वाले। ऐ

يَا مُهَيْمِنُ يَا عَزِيْزُ يَا جَبَّارُ يَا مُتَكَبِّرُ يَا سَلَامُ يَا مُؤْمِنُ يَا اَحَدُ

दोस्त। ऐ क़ाएम। ऐ दाएम। ऐ इल्म वाले। ऐ हिकमत वाले। ऐ स०खी। ऐ पैदा करने वाले। ऐ

يَا صَمَدُ يَا نُوْرُ يَا مُدَبِّرُ يَا فَرْدُ يَا وِتْرُ يَا قُدُّوْسُ يَا نَاصِرُ يَا مُوْنِسُ

नक। ऐ ख़ुश करने वाले। ऐ आदिल। ऐ जुदा करनेवाले। ऐ जज़ा देनेवाले। ऐ शफ़ीक़। ऐ

يَا بَاعِثُ يَا وَارِثُ يَا عَالِمُ يَا حَاكِمُ يَا بَادِئُ يَا مُتَعَالِيْ يَا مُصَوِّرُ

मेहेरबान। ऐ सुन्नेवाले। ऐ ईजाद करनेवाले। ऐ पनाह अता करने वाले। ऐ मददगार। ऐ फैलाने

يَا مُسَلِّمُ يَا مُتَحَبِّبُ يَا قَآءِمُ يَا دَآءِمُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ يَا

वाले। ऐ बख़्शने वाले। ऐ कदीम। ऐ सहल व आसान बनाने वाले। ऐ मारने वाले। ऐ जिलाने

جَوَادُ يَا بَارِءُ يَا بَارُّ يَا سَارُّ يَا عَدْلُ يَا فَاصِلُ يَا دَيَّانُ يَا حَنَّانُ يَا

वाले। ऐ फ़ायदा पहुचाने वाले। ऐ राज़िक। ऐ इक़तिदार वाले। ऐ सबब बनानेवाले। ऐ फ़रयाद

مَنَّانُ يَا سَمِيْعُ يَا بَدِيْعُ يَا خَفِيْرُ يَا مُعِيْنُ يَا نَاشِرُ يَا غَافِرُ يَا قَدِيْمُ

रस। ऐ बेनियाज। ऐ सरमाया बख़्श। ऐ ख़ालिक़। ऐ निगेहबान। ऐ यगाना। ऐ हाज़िर। ऐ जबरूत

يَا مُسَهِّلُ يَا مُيَسِّرُ يَا مُمِيْتُ يَا مُحْيِيْ يَا نَافِعُ يَا رَازِقُ يَا مُقْتَدِرُ يَا

वाले। ऐ रक्षा करनेवाले। ऐ मुस्तहकम। ऐ फ़रयाद रस। ऐ फ़ायदा पहुँचाने वाले। ऐ रोक लेने

مُسَبِّبُ يَا مُغِيْثُ يَا مُغْنِيْ يَا مُقْنِيْ يَا خَالِقُ يَا رَاصِدُ يَا وَاحِدُ يَا

वाले। ऐ वो जो बुलंद हुआ तो सबसे ज़्यादा बुलंद हुआ। और वो बुलंद मंजर व मक़ाम मे ठहरा।

حَاضِرُ يَا جَابِرُ يَا حَافِظُ يَا شَدِيْدُ يَا غِيَاثُ يَا عَاءِدُ يَا قَابِضُ يَا

ऐ वो जो क़रीब हुआ तो बहुत क़रीब हुआ। और दूर हुआ तो बहुत दूर हुआ। पोशीदा राज़ को जान

مَنْ عَلَا فَاسْتَعْلٰى فَكَانَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلٰى يَا مَنْ قَرُبَ فَدَنَا وَ

लिया तो पोशीदा रखा। ऐ वो जिसकी हर तरफ़ तदबीर है। और जिसके हाथ मे तक़गीर है। ऐ वो

بَعُدَ فَنَاٰى وَ عَلِمَ السِّرَّ وَ اَخْفٰى يَا مَنْ اِلَيْهِ التَّدْبِيْرُ وَ لَهٗ

जिसके लिए हर मुश्किल आसान है। ऐ वो जिस चीज़ पर चाहे क़ादिर है। ऐ हवाओं के चलाने

الْمَقَادِيْرُ وَ يَا مَنِ الْعَسِيْرُ عَلَيْهِ سَهْلٌ يَسِيْرٌ يَا مَنْ هُوَ عَلٰى مَا

वाले और सुबह को ज़ाहिर करने वाले। ऐ रूहोंको उठाने वाले। सख़ावत व बा०ख़्शिश वाले। ऐ

يَشَآءُ قَدِيْرٌ يَا مُرْسِلَ الرِّيَاحِ يَا فَالِقَ الْاِصْبَاحِ يَا بَاعِثَ

फ़ौत हो जाने वाले को लौटाने वाले। ऐ मुर्दोंको ज़िंदा करनेवाले। ऐ मुतफ़र्रिक को जमा करने

الْاَرْوَاحِ يَا ذَا الْجُوْدِ وَ السَّمَاحِ يَا رَادَّ مَا قَدْ فَاتَ يَا نَاشِرَ

वाले। ऐ जिसको चाहे बे हिसाब रिज़्क़ अता करनेवाले। ऐ जो चाहे और जैसे चाहे कर लेनेवाले।

الْاَمْوَاتِ يَا جَامِعَ الشَّتَاتِ يَا رَازِقَ مَنْ يَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

ऐ जलालत और बुज़ुर्गावाले। ऐ ज़िंदा व पाईंदा। ऐ ज़िंदा जब कोई ज़िंदा न था। ऐ ज़िंदा। ऐ मुर्दोंको

وَ يَا فَاعِلَ مَا يَشَآءُ كَيْفَ يَشَآءُ وَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ يَا

ज़िन्दा करनेवाले। ऐ ज़िंदा। सिवाए तेरे कोई माबूद नही है। आसमानो और ज़मीन का पैदा

حَیُّ یَا قَیُّوْمُ یَا حَیًّا حِیْنَ لَا حَیَّ یَا حَیُّ یَا مُحْیِیَ الْمَوْتٰی یَا حَیُّ لَا اِلٰهَ

करनेवाला है। ऐ मेरे ख़ुदा मेरे सरदार। दुरूद नाज़ल कर मुहम्मद और आले मुहम्मद पर और

اِلَّا اَنْتَ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَا اِلٰهِیْ وَسَیِّدِیْ صَلِّ عَلٰی

रहेम कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर और बरकत भेज मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। जैसा के

مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّ اٰلَ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ

तूने सलवात बरकत व रहमत नाज़ल की इब्राहीम और आले इब्राहीम पर। बेशक तू साहेबे हम्दो

اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّیْتَ وَبَارَكْتَ وَرَحِمْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَ اٰلِ

बुज़ुर्गी है। अब रहेम कर मेरी ज़िल्लत मेरे फ़ाके मेरे फ़०क्र पर। मेरी तनहाई और मेरे अकेलेपन

اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ وَارْحَمْ ذُلِّیْ وَ فَاقَتِیْ وَ فَقْرِیْ وَ

पर। और अपनी बारगाह मे मेरे ख़ुज़ू पर और मेरे अपने ऊपर एतेमाद पर। और तेरी तरफ़ तजर्ररो

انْفِرَادِیْ وَ وَحْدَتِیْ وَ خُضُوْعِیْ بَیْنَ یَدَیْكَ وَ اعْتِمَادِیْ عَلَیْكَ وَ

व ज़ारी पर। मै तुझसे दुआ करता हूँ। उस व्यक्ति की तरह जो ख़ाजे व ज़लील ख़ाएफ व ख़ाशे।

تَضَرُّعِیْ اِلَیْكَ اَدْعُوْكَ دُعَآءَ الْخَاضِعِ الذَّلِیْلِ الْخَاشِعِ

डरनेवाला परेशान. ज़लील, हकीर और भूका और फ़क़ीर और पनाह चाहने वाले। अपने गुनाह

الْخَآئِفِ الْمُشْفِقِ الْبَآئِسِ الْمَهِیْنِ الْحَقِیْرِ الْجَآئِعِ الْفَقِیْرِ

को क़ुबूल करने वाले। उससे इसतिग़फ़ार करने वाला। अपने ख़ुदा से ज़ारी करने वाला। उस

الْعَاءِذِ الْمُسْتَجِيْرِ الْمُقِرِّ بِذَنْبِهِ الْمُسْتَغْفِرِ مِنْهُ الْمُسْتَكِيْنِ

व्यक्ति की दुआ जिसको उसके एतेमाद ने बलाके हवाले कर दिया। और जिसको उसके दोस्तों ने

لِرَبِّهٖ دُعَآءَ مَنْ اَسْلَمَتْهُ ثِقَتُهٗ وَ رَفَضَتْهُ اَحِبَّتُهٗ وَ عَظُمَتْ

छोड़ दिया। और जिसकी मुसीबत सख्त हो गई हो। उस व्यक्ति की दुआ जो जला हो, महजून,

فَجِيْعَتُهٗ دُعَاءَ حَرِقٍ حَزِيْنٍ ضَعِيْفٍ مَهِيْنٍ بَاءِسٍ مُسْتَكِيْنٍ

कमज़ोर, ज़लील परेशान, बेनवा और तुझसे पनाह चाहने वाला हो। ख़ुदाया मै तुझ से मांगता हूँ

بِكَ مُسْتَجِيْرٍ اَللّٰهُمَّ وَ اَسْءَلُكَ بِاَنَّكَ مَلِيْكٌ وَ اَنَّكَ مَا تَشَآءُ

के तू बादशाह है और तू जो चाहता है वो अम्र मौजूद हो जाता है। और तू जिस चा०rज पर चाहे

مِنْ اَمْرٍ يَكُوْنُ وَ اَنَّكَ عَلٰى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ وَ اَسْءَلُكَ بِحُرْمَةِ

क़ुदरत रखता है। और मै तुझसे सवाल करता हूँ इसी मोहतरम महीने और मोहतरम घर और

هٰذَا الشَّهْرِ الْحَرَامِ وَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ وَ الْبَلَدِ الْحَرَامِ وَ الرُّكْنِ

मोहतरम शहर। और रूक्नो मक़ाम और बड़े मशायर और तेरे नबी मुहम्मद (स) के वास्ते से। ऐ

وَ الْمَقَامِ وَ الْمَشَاعِرِ الْعِظَامِ وَ بِحَقِّ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ

वो ख़ुदा जिसने आदम को शीस अता किया और इब्राहीम को इस्मईल व इसहाक दिये। ऐ वो ख़ुदा

السَّلَامُ يَا مَنْ وَهَبَ لِاٰدَمَ شَيْثًا وَ لِاِبْرَاهِيْمَ اِسْمٰعِيْلَ وَ

जिसने यूसुफ़ को याक़ूब के पास पलटा दिया। ऐ वो जिसने मुसीबत के बाद अय्यूब की तकलीफ़

اِسْحٰقَ وَ يَا مَنْ رَدَّ يُوْسُفَ عَلٰى يَعْقُوْبَ وَ يَا مَنْ كَشَفَ بَعْدَ

को दूर कर दिया। ऐ मूसा को उनकी माँ के पास पलटानेवाले। और ख़िज़र के इल्म को बढ़ाने

الْبَلَآءِ ضُرَّ اَيُّوْبَ يَا رَادَّ مُوْسٰى عَلٰى اُمِّهٖ وَزَاءِدَ الْخِضْرِ فِيْ عِلْمِهٖ

वाले। और ऐ वो ख़ुदा जिसने दाऊद को सुलैमान और ज़करिया को याहया दिया। और मरयम

وَ يَا مَنْ وَهَبَ لِدَاوٗدَ سُلَيْمَانَ وَ لِزَكَرِيَّا يَحْيٰى وَ لِمَرْيَمَ عِيْسٰى يَا

को ईसा दिया। और शुऐब की बेटी की रक्षा करने वाले। और ऐ मूसा की माता के बेटे की परवरिश

حَافِظَ بِنْتِ شُعَيْبٍ وَ يَا كَافِلَ وَلَدِ اُمِّ مُوْسٰى اَسْـَٔلُكَ اَنْ

करनेवाले। मै तुझसे सवाल करता हूँ के दुरूद नाज़िल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर और मेरे

تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ كُلَّهَا وَ تُجِيْرَنِيْ

कुल गुनाहों को बख़श दे व मुझको अपने अज़ाब से बचा ले। और मेरे लिए अपनी रज़ामंदी

مِنْ عَذَابِكَ وَ تُوْجِبَ لِيْ رِضْوَانَكَ وَ اَمَانَكَ وَ اِحْسَانَكَ وَ

अमान, एहसान, बख़शिश, बेहिश्त को लाज़म करदे। और मै तुझसे माँगता हूँ के तू खोलदे मेरी

غُفْرَانَكَ وَ جِنَانَكَ وَ اَسْـَٔلُكَ اَنْ تَفُكَّ عَنِّيْ كُلَّ حَلْقَةٍ بَيْنِيْ

हर उस ज़ंजीर को जो मेरे और मुझको तकलीफ़ देने वाले के दरमियान है। और खोलदे मेरे लिए

وَ بَيْنَ مَنْ يُّؤْذِيْنِيْ وَ تَفْتَحَ لِيْ كُلَّ بَابٍ وَّ تُلَيِّنَ لِيْ كُلَّ صَعْبٍ وَ

हर दरवाज़े को। और हर मुशकिल को आसान करदे और सख़्ती को सहल करदे। और हर बुरा

تُسَهِّلَ لِیْ كُلَّ عَسِیْرٍ وَّ تُخْرِسَ عَنِّیْ كُلَّ نَاطِقٍ بِشَرٍّ وَ تَكُفَّ

कहनेवाले को गूंगा बना दे। और हर ज़ालिम के शर को दूर करदे। और हर दुशमन और हासिद

عَنِّیْ كُلَّ بَاغٍ وَ تَكْبِتَ لِیْ كُلَّ عَدُوٍّ لِیْ وَ حَاسِدٍ وَّ تَمْنَعَ مِنِّیْ كُلَّ

को ज़लील करदे। और हर ज़ालिम को मुझसे रोक दे। और जो मेरे और मेरी हाजत के दरमियान

ظَالِمٍ وَ تَكْفِیَنِیْ كُلَّ عَاءِقٍ یَحُوْلُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ حَاجَتِیْ وَ

हाएल हो और चाहता हो के मेरे और तेरी इताअत के दरमियान हाएल हो जाए और तेरी इबादत

یُحَاوِلُ اَنْ یُّفَرِّقَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ طَاعَتِكَ وَ یُثَبِّطَنِیْ عَنْ عِبَادَتِكَ

से रोक दे सबके मुक़ाबलेमे काफ़ी होजा ऐ वो ज़ात जिसने सरकश देवों को लगाम दी है। और

یَا مَنْ اَلْجَمَ الْجِنَّ الْمُتَمَرِّدِیْنَ وَ قَهَرَ عُتَاةَ الشَّیَاطِیْنِ وَ اَذَلَّ

शैतान गरदन कश को मग़लूब कर दिया है और जाबिरों को जलील कर दिया है। और इक़्तिदार

رِقَابَ الْمُتَجَبِّرِیْنَ وَ رَدَّ كَیْدَ الْمُتَسَلِّطِیْنَ عَنِ

वालों की मक्कारी को कमज़ोरों से दूर कर दिया है। मै तुझ से सवाल करता हूँ। तेरी उसी क़ुदरत

الْمُسْتَضْعَفِیْنَ اَسْءَلُكَ بِقُدْرَتِكَ عَلٰی مَا تَشَآءُ وَ تَسْهِیْلِكَ

के वासते से जो हर शै पर है। और उस हवाले से के तू जो चाहे और जैसे चाहे आसान बना सकता

لِمَا تَشَآءُ كَیْفَ تَشَآءُ اَنْ تَجْعَلَ قَضَآءَ حَاجَتِیْ فِیْمَا تَشَآءُ

है। मेरी हाजत को पूरा करदे जिसको तू चाहता है।

फिर ज़मीन पर सजदा करे और ख़ाक पर दोनों रूख़सारों को रख कर कहे:

اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ فَارْحَمْ ذُلِّیْ وَفَاقَتِیْ وَاجْتِهَادِیْ وَ

ख़ुदाया मैने तेरे लिए सजदा किया और तुझ पर ईमान लाया। अब तू मेरी ज़िल्लत, एहतियाज,

تَضَرُّعِیْ وَمَسْكَنَتِیْ وَفَقْرِیْ اِلَيْكَ يَارَبِّ

कोशिश, ज़ारी, बेनवाई और फ़क़र पर रहम कर ऐ मेरे पर्वर्दिगार।

कोशिश करे के आंखों से आँसू निकल आएँ चाहे एक क़तरा क्यों न हो के यह दुआ की क़ुबूलियत की निशानी है।

पच्चीसवीं रजब

पच्चीस रजब हिजरी 183 में हज़रत इमाम मूसा काज़म (अ) पचपन साल की आयु में बग़दाद में शहीद किए गए लेहाज़ा इस दिन आले मोहम्मद और उनके शियों का ग़म ताज़ा हो जाता है।

सत्ताइस्वीं शब

बेसते पैगंबर की रात है और निहायत मुतबर्रिक रात है। इसमें चंद आमाल हैं। 1. शेख़ ने मिसबाह में हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) से रिवायत की है के रजब में एक ऐसी रात भी है जो हर उस चीज़ से बेहतर है जिस पर सूरज चमकता है। और वह सत्ताईस रजब की रात है। जिसकी सुबह पैग़ंबरे इसलाम की बेसत हुई। मेरे शिओं में से अमल करनेवाले के लिए इस शब में साठ साल के अमल का सवाब लिखा जाता है। किसी ने अर्ज़ किया के इस रात का अमल क्या है? तो फ़रमाया के जब नमाज़े इशा बजा ला चुके और बिसतर पर चला जाए तो आधी रात से क़ब्ल बेदार होकर बारह रकत नमाज़ बजा लाए। हर रकत में सूरह हम्द और छोटे मुफ़स्सल सूरों के जो सूरह मोहम्मद से आख़र क़ुरान तक हैं कोई एक सूरह पढ़े। जब हर दो रकत पर सलाम

के साथ नमाज़ों से फ़ारिग हो जाए तो बैठकर हम्द को सात बार और सूरह फ़लक़ और सूरह नास को सात बार, और सूरह तौहीद, सूरह काफ़ेरून, सूरह कद्र और आयतल कुर्सा को सात बार पढ़े। उसके बाद यह दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ یَکُنْ لَهٗ شَرِیْكٌ

हम्द उस ख़ुदा की है जिसने कोई बेटा नही बनाया और जिसकी बादशाहत मे कोई शरीक नही

فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَکُنْ لَهٗ وَلِیٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ کَبِّرْهُ تَکْبِیْرًا

है। और उसका कोई ऐसा मददगार नही है। जो उसकी इज़्ज़त मे इज़ाफ़ा करे और उसको बुज़ुर्गा

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِمَعَاقِدِ عِزِّكَ عَلٰی اَرْکَانِ عَرْشِكَ

के साथ याद करो। ख़ुदाया मै तुझसे माँगता हूँ तेरी इज़्ज़त की हक़ीक़त के साथ जो तेरे अर्श के

وَمُنْتَهَی الرَّحْمَةِ مِنْ کِتَابِكَ وَبِاسْمِكَ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ

पाए पर है और तेरी किताब के इनतिहाए रहमत के हवाले से। तेरे नाम के वास्ते से जो बहुत बड़ा

الْاَعْظَمِ وَذِکْرِكَ الْاَعْلٰی الْاَعْلٰی الْاَعْلٰی وَبِکَلِمَاتِكَ

और अज़ीम है। और तेरे ज़िक्र के वास्ते से जो बुलंद व बुलंद व बुलंदतर है। ऐ तेरे मुकम्मल

التَّامَّاتِ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِهٖ وَاَنْ تَفْعَلَ بِیْ مَا

कलेमात द्वारा के तू दुरूद नाज़ल फ़रमा मुहम्मद और उनकी आल पर और मरे साथ वही सुलूक

اَنْتَ اَهْلُهٗ

करना के जिसका तू अहल है।

उसके बाद अपनी हाजत तलब करे।
और शब में ग़ुस्ल भी मुस्तहब है। और पंद्रहवीं रजब की रात में जो नमाज़ गुज़र चुकी है वह इस शब में भी पढ़ी जाती है।
2. ज़ियारते हज़रत अमीरूल मोमिनीन (अ) जो इस रात के बेहतरीन आमाल में से है। और इस रात में हज़रत की तीन ज़ियारतें हैं। जो ज़ियारत के बाब में इन्शाअल्लाह आएंगी। वाज़ेह रहे के अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन बतूता जो ओलमाए अहले सुन्नत में हैं और छः सौ साल क़ब्ल गुज़रे हैं। उन्होंने अपने सफर नामे में जो सफ़रनामा इब्ने बतूता के नाम से मश्हूर है, अपना मक्का मोअज़्ज़मा से नजफ़े अशरफ़ वारिद होने का तज़केरह किया है। और रौज़ा और क़ब्रे इमाम अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली ज़िक्र करते हुए कहा है के इस शहर के तमाम लोग राफ़ज़ी हैं और इस रौज़े से बहुत सी करामतें ज़ाहिर होती हैं उनमें से एक यह है के सत्ताइस्वीं रजब की रात जिसको वह लोग लैलतुल महया कहते हैं, इसमें ईराक़ैन, ख़ुरासान, फ़ारस, रूम से मशलूल, मफ़लूज़ और ज़मीनगीर व्यक्तियों को लाते हैं। और उनमें से तक़रीबन तीस चालिस व्यक्ति जमा हो जाते हैं। इशा के बाद उन मुबतेला व्यक्तियों को ज़रीहे मुकद्दस के पास लाकर जमा कर देते हैं। और लोग उनके अच्छे होने और खड़े होने का इंतेज़ार करते हैं। फिर कुछ लोग उनमें से नमाज़ में और बाज़ ज़िक्र और बाज़ तिलावते क़ुरान और बाज़ रोज़े को देखने में मश्ग़ूल रहते हैं। यहाँ तक के आधी रात या दो तिहाई रात गुज़र जाती है। उस वक़्त यह तमाम मरीज़ लोग जो हरकत भी नहीं कर सकते थे सहीह और तंदुरस्त हालत में उठ जाते हैं और उनमें किसी क़िस्म का मर्ज़ नहीं होता है। और कहते हैं: ला एलाह इल्लल्लाहो, मोहम्मदुर रसूलुल्लाह अलीयुन वलीउल्लाह। यह मामला बहुत मश्हूर है लेकिन मैंने खुद उस रात को नहीं देखा है। अलबत्ता मोतबर लोगों से सुना है। और फिर उस मदरसे को देखा जो आं हज़रत का मेहमान ख़ाना है के तीन अपाहिज व्यक्ति जो हरकत करने की क़ुदरत नहीं रखते थे, एक रूम का रहनेवाला था, दूसरा इसफ़हान का और तीसरा ख़ुरासान का मैंने उनसे पूछा के तुम लोग क्यों ठीक नहीं हुए और यहाँ रह गए? तो उन्होंने कहा के सत्ताइसवीं रात तक हम यहाँ नहीं पहुँचे। और अब हम अगले

साल तक रहेंगे। ताके शिफ़ा पाएँ। उस रात में शहर के अक्सर लोग जमा होते हैं और दस दिन तक एक बड़ा बाज़ार लगा रहता है।

लेखक: इस मामले में कोई ताज्जुब नहीं होना चाहिए के जो मोजिज़ात और करामात उन मशाहिदे मुकद्देसा से ज़हूर में आए हैं वह तवातुर को पहुँचे हुए हैं और उन मोजिज़ात का अहसा भी नहीं हो सकता है। और पिछले माहे शव्वाल हिजरी 1343 में हरमे मोतहहरे इमामे ज़ामिन व सामिन हज़रत अली रेज़ा (अ) मे भी तीन औरतों ने शिफ़ा पाई है। जो सब की सब फ़ालज वगैरह की बिना पर अपाहिज हो गई थीं। और तबीब और डाक्टर हज़रात उनके इलाज से आजिज़ थे। यह मोजिज़ात हर व्यक्ति पर इसी तरह वाज़ेह हैं जैसे सूरज का आसमान पर होना मसलन नजफ़े अशरफ़ के दरवाज़ों का अरबों के लिए खुला जाना और यह बात इतनी साफ़ थी के उन औरतों के डाक्टरों ने भी तसलीम की। और अगर हमारा मक़सद इख्तेसार न होता और इस समय नामुनासिब न होता तो हम इसको ज़रूर नक़्ल करते।

और शेख़ हुर्रे आमेली ने अपने अश-आर में बहुत उमदा फरमाया है:

وَمَا بَدَا مِنْ بَرَكَاتِ مَشْهَدِهٖ	فِي كُلِّ يَوْمٍ أَمْسُهُ مِثْلُ غَدِهٖ
उनके रौज़ों की बरकतें दिन ब दिन नुमाया हो रही हैं।	उनके रौज़ों की बरकतें दिन ब दिन नुमाया हो रही हैं।
وَكَشِفَاءِ الْعَمٰى وَالْمَرْضٰى بِهٖ	إِجَابَةُ الدُّعَاءِ فِي أَعْتَابِهٖ
जिस प्रकार माज़ी में था उसी तरह आइंदा रहेगा।	अंधोंको आँखे मिलना और बीमारियों से शिफ़ा।

ये साबित करता है के इन रौज़ों पर दुआएं क़ुबूल होती हैं।

तीन: शेख़ कफ़अमी ने बलदुल अमीन में फ़रमाया है के शबे मबस में यह दुआ भी पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِالتَّجَلِّي الاَعْظَمِ فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ مِنَ

ख़ुदाया मै तुझसे माँगता हूँ सबसे बड़ी तजल्ली के वासते से। इस रात मे इस अज़ीम महीने की

الشَّهْرِ الْمُعَظَّمِ وَالْمُرْسَلِ الْمُكَرَّمِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

और इज़्ज़तवाले मुरसल के वासते से के दुरूद भेज मुहम्मद और आले मुहम्मद पर और हमारे

وَآلِهِ وَاَنْ تَغْفِرَ لَنَا مَا اَنْتَ بِهٖ مِنَّا اَعْلَمُ يَا مَنْ يَعْلَمُ وَلَا

गुनाह बख़्श दे जिसका तू हमसे बेहतर जानने वाला है। ऐ वो जात जो जानती है और हम नही

نَعْلَمُ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ لَيْلَتِنَا هٰذِهِ الَّتِيْ بِشَرَفِ الرِّسَالَةِ

जानते। ख़ुदाया हमको इस रात मे बरकत अता फ़रमा जिसको तूने शर्फे रिसालत से फ़ज़ीलत

فَضَّلْتَهَا وَبِكَرَامَتِكَ اَجْلَلْتَهَا وَبِالْمَحَلِّ الشَّرِيْفِ اَحْلَلْتَهَا

अता की है। और अपनी करामत से इज़्ज़तदार बनाया है। और ०मकामे शर्फ मे उतार दिया है।

اَللّٰهُمَّ فَاِنَّا نَسْاَلُكَ بِالْمَبْعَثِ الشَّرِيْفِ وَالسَّيِّدِ اللَّطِيْفِ

ख़ुदाया मै तुझसे सवाल करता हूँ। मबस शरीफ़, मेहेरबान सरदार, पाकीज़ा उनसुर के वास्ते से

وَالْعُنْصُرِ الْعَفِيْفِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاَنْ تَجْعَلَ

के दुरूद नाज़ल फ़रमा मुहम्मद व आले मुहम्मद पर और हमारे आमाल को इस रात व दूसरी

اَعْمَالَنَا فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَفِيْ سَائِرِ اللَّيَالِيْ مَقْبُوْلَةً وَذُنُوْبَنَا

तमाम रातों मे क़ुबूल कर व हमारे तमाम गुनाहों को बाख़्शदे व हमारी नेकीयों का अच्छा बदला

مَغْفُوْرَةً وَحَسَنَاتِنَا مَشْكُوْرَةً وَسَيِّئَاتِنَا مَسْتُوْرَةً وَقُلُوْبَنَا

दे व हमारी बुराईयों को छुपादे और हमारे दिलोंको हुस्ने कौल से मसरूर करदे। और हमारे रिज़्क़

بِحُسْنِ الْقَوْلِ مَسْرُورَةً وَاَرْزَاقَنَا مِنْ لَدُنْكَ بِالْيُسْرِ

को अपनी जानिब से आसान करदे। ख़ुदाया तू देखता है लेकिन देखा नही जाता है। और तू बुलंद

مَدْرُورَةً اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَرٰى وَلَا تُرٰى وَاَنْتَ بِالْمَنْظَرِ الْاَعْلٰى

तरीन मक़ाम पर है। और तेरी ही तरफ पलटना है। और मुनताहा है। और बेशक तेरे ही क़ब्ज़े

وَاِنَّ اِلَيْكَ الرُّجْعٰى وَالْمُنْتَهٰى وَاِنَّ لَكَ الْمَمَاتَ وَالْمَحْيَا

मे मौतो हयात और दुनिया व आाख़िरत है। ख़ुदाया हम तेरी पनाह चाहते हैं। जलील व रूसवा

وَاِنَّ لَكَ الْاٰخِرَةَ وَالْاُولٰى اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوذُبِكَ اَنْ نَذِلَّ وَنُخْزٰى

होने और जिस बात से तूने रोका है उसके करने से। ख़ुदाया हम तुझसे माँगते हैं जन्नत को तेरी

وَاَنْ نَاْتِيَ مَا عَنْهُ تَنْهٰى اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْاَلُكَ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ

रहमत के वास्ते से। और हम तेरी पनाह चाहते हैं जहन्नम से के तू हमको जहन्नम से बचा ले

وَنَسْتَعِيذُبِكَ مِنَ النَّارِ فَاَعِذْنَا مِنْهَا بِقُدْرَتِكَ وَنَسْاَلُكَ

अपनी क़ुदरत से। और हम तुझसे सवाल करते हैं हूरे ईन का। लेहाज़ा तू अपनी इज़्ज़त से हमे

مِنَ الْحُورِ الْعِينِ فَارْزُقْنَا بِعِزَّتِكَ وَاجْعَلْ اَوْسَعَ اَرْزَاقِنَا

अता कर। और वसी तरीन रोज़ी को हमारे बुढ़ापे के ज़माने मे अता फ़र्मा और बेहतरीन आमाल

عِنْدَ كِبَرِ سِنِّنَا وَاَحْسَنَ اَعْمَالِنَا عِنْدَ اقْتِرَابِ آجَالِنَا

की तौफ़ीक़ मौत के क़रीब अता कर। और अपनी इताअत मे और उस काम मे जो तुझसे क़रीब

وَاَطِلْ فِيْ طَاعَتِكَ وَمَا يُقَرِّبُ اِلَيْكَ وَيُحْظِى عِنْدَكَ وَيُزْلِفُ

बना दे और ख़ुशनसीब करके क़ुरबत अता करदे। हमारे उम्र को लंबी बनादे और हमारी मरेफ़त

لَدَيْكَ اَعْمَارَنَا وَاَحْسِنْ فِيْ جَمِيْعِ اَحْوَالِنَا وَاُمُوْرِنَا مَعْرِفَتَنَا

को अच्छा बना दे। तमाम हालातो उमूर मे। और अपनी किसी एव भी मख़लूक के हवाले न कर

وَلَا تَكِلْنَا اِلٰى اَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَيَمُنَّ عَلَيْنَا وَتَفَضَّلْ عَلَيْنَا

देना के वो हम पर एहसान जताए और हम पर करम कर और आाख़िरत की हाजतों के लिए व

بِجَمِيْعِ حَوَائِجِنَا لِلدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَابْدَا بِاٰبَائِنَا وَاَبْنَائِنَا

जिन चीज़ों का हमने तुझसे सवाल किया उसकी इबतिदा हमारे आबा औलाद व तमाम मोमिन

وَجَمِيْعِ اِخْوَانِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ جَمِيْعِ مَا سَاَلْنَاكَ لِاَنْفُسِنَا يَا

भाईयों से करना। ऐ तमाम रहेम करने वालों मे ज़्यादा रहेम करने वाले। ऐ ख़ुदाया हम तुझसे

اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الْعَظِيْمِ وَمُلْكِكَ

माँगते हैं। तेरे अज़ीम नाम के वास्ते से। और तेरे क़दीम मुल्क के वास्ते से तू दुरूद भेज मुहम्मद

الْقَدِيْمِ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِ مُحَمَّدٍ وَاَنْ تَغْفِرَ لَنَا

आले मुहम्मद पर और हमारे बड़े गुनाहों को बख़्श दे के बेशक बड़े को बड़ा ही बख़्श सकता

الذَّنْبَ الْعَظِيْمَ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الْعَظِيْمَ اِلَّا الْعَظِيْمُ اَللّٰهُمَّ

है। ख़ुदाया ये रजब के इज़्ज़त वाला महीना है जिसके ज़रिए तूने हमको इज़्ज़त दी है। ये पहला

وَهٰذَا رَجَبُ الْمُكَرَّمُ الَّذِیْ اَكْرَمْتَنَا بِهٖ اَوَّلُ اَشْهُرِ الْحُرُمِ

मोहतरम महीना है जिसके ज़रिए उम्मतों के बीच हमको इज़्ज़त दी है। फिर तारीफ़ तेरे लिए है। ऐ

اَكْرَمْتَنَا بِهٖ مِنْ بَیْنِ الْاُمَمِ فَلَكَ الْحَمْدُ یَا ذَا الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ

जूद व करम के मालिक। मै तुझसे इस के द्वारा और तेरे अज़ीम अज़ीम अज़ीम जलील व करीम

فَاَسْاَلُكَ بِهٖ وَبِاسْمِكَ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَعْظَمِ الْاَجَلِّ

नाम द्वारा सवाल करता हूँ। जिसको तूने ख़ल्क किया है। और तेरे साए मे ठहर गया। और तेरे

الْاَكْرَمِ الَّذِیْ خَلَقْتَهٗ فَاسْتَقَرَّ فِیْ ظِلِّكَ فَلَا یَخْرُجُ مِنْكَ اِلٰی

अलावा किसी और की तरफ़ नही गया। के दुरूद नाज़िल कर मुहम्मद और उनके अहले बैत

غَیْرِكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَهْلِ بَیْتِهِ الطَّاهِرِیْنَ وَاَنْ تَجْعَلَنَا

पर और हमको इस माह मे अपनी इताअत पर अमल करने वालों मे और अपनी शफ़ाअत से

مِنَ الْعَامِلِیْنَ فِیْهِ بِطَاعَتِكَ وَالْآمِلِیْنَ فِیْهِ لِشَفَاعَتِكَ

उम्मीद लगाने वालों मे क़रार देदे। ख़ुदाया हमारी हिदायत कर सीधे रास्ते की तरफ़। और हमारी

اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا اِلٰی سَوَاءِ السَّبِیْلِ وَاجْعَلْ مَقِیْلَنَا عِنْدَكَ خَیْرَ

आराम गाह अपने नज़दीक बेहतरीन आराम गाह क़रार देदे। अपने अबदी साए मे और अज़मत

مَقِیْلٍ فِیْ ظِلٍّ ظَلِیْلٍ وَمُلْكٍ جَزِیْلٍ فَاِنَّكَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ

वाले मुल्क मे कयोंके तू हमारे लिए काफ़ी है और बेहतरीन दलील है। ख़ुदाया हमको कामयाब

الْوَكِيلُ اَللّٰهُمَّ اقْلِبْنَا مُفْلِحِيْنَ مُنْجِحِيْنَ غَيْرَ مَغْضُوبٍ

होने वालों मे और नजात पाने वालों मे करार दे। न के उनमे के जिन पर ग़ज़ब हुआ और गुमराहों

عَلَيْنَا وَلَا ضَالِّيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّي

मे। अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करने वाले। ख़ुदा या मै तुझसे सवाल करता हूँ तेरी

اَسْاَلُكَ بِعَزَائِمِ مَغْفِرَتِكَ وَبِوَاجِبِ رَحْمَتِكَ السَّلَامَةَ مِنْ

मग़िफ़रत के हतमी मसाएल और तेरी रहमत के वाजिब के वसीले से। के हर गुनाह से सालिम

كُلِّ اِثْمٍ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ

रखना। और हर नेकी से बहरामंद करना। और जन्नत की कामयाबी अता करना। और जहन्नम से

النَّارِ اَللّٰهُمَّ دَعَاكَ الدَّاعُونَ وَدَعَوْتُكَ وَسَاَلَكَ السَّائِلُونَ

नजात देना। ख़ुदाया तझको दुआ करने वालों ने पुकारा और मैने भी पुकारा। और तुझसे माँगने

وَسَاَلْتُكَ وَطَلَبَ اِلَيْكَ الطَّالِبُونَ وَطَلَبْتُ اِلَيْكَ اَللّٰهُمَّ

वालों ने माँगा व मैने भी माँगा। व तलब करने वालों ने तलब किया व मैने भी तलब किया। के तू

اَنْتَ الثِّقَةُ وَالرَّجَاءُ وَاِلَيْكَ مُنْتَهَى الرَّغْبَةِ فِي الدُّعَاءِ

ही सरमाया ए इतमिनान व उम्मीद है और तेरी ही जानिब दुआ मे रग़बत की इनतिहा है। ख़ुदाया

اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاجْعَلِ الْيَقِيْنَ فِي قَلْبِي وَالنُّورَ

दुरूद नाज़िल कर मुहम्मद व उनकी आल पर। व मेरे दिल मे यक़ीन क़रार देदे। व बसारत मे नूर

فِي بَصَرِي وَالنَّصِيحَةَ فِي صَدْرِي وَذِكْرَكَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ عَلَى

क़रार देदे। व दिल मे नसीहत क़रार देदे। व मेरी ज़बान पर रात दिन अपना ज़िक्र क़रार देदे। व

لِسَانِي وَرِزْقًا وَاسِعًا غَيْرَ مَمْنُونٍ وَلَا مَحْظُورٍ فَارْزُقْنِي وَبَارِكْ

वसी रिज़्क़ जो मक़तू व ममनू न हो वो अता कर दे। व मेरे रिज़्क़ मे बरकत अता कर व मुझको

لِي فِيمَا رَزَقْتَنِي وَاجْعَلْ غِنَايَ فِي نَفْسِي وَرَغْبَتِي فِيمَا عِنْدَكَ

मख़लूक से मुसतगनी बना दे व मुझे रग़ाबत दे हर उस चा०rज की जो तेरे पास है। ऐ सबसे ज़्यादा

फिर सजदे में जाकर पढ़े: بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

रहेम करनेवाले।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي هَدَانَا لِمَعْرِفَتِهِ وَخَصَّنَا بِوِلَايَتِهِ وَوَفَّقَنَا

हम्द उस ख़ुदा की जिसने हमको अपनी मारिफत की हिदायत दी व हमको अपनी विलायत से

सौ बार फिर सजदे से सर उठाकर कहे: لِطَاعَتِهِ شُكْرًا شُكْرًا

मख़सूस किया व हमको अपनी इताअत की तौफ़ीक़ दी। ख़ुदाका शुक्र ख़ुदाका शुक्र, ख़ुदा का शुक्र।

اَللّٰهُمَّ إِنِّي قَصَدْتُكَ بِحَاجَتِي وَاعْتَمَدْتُ عَلَيْكَ بِمَسْأَلَتِي وَتَوَجَّهْتُ

ख़ुदाया मैने तेरा कस्द किया अपनी हाजत के साथ। मैने अपने सवाल मे तुझपर एतेमाद किया

إِلَيْكَ بِأَئِمَّتِي وَسَادَتِي اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِحُبِّهِمْ وَاَوْرِدْنَا مَوْرِدَهُمْ

अपने इमामों और सरदारों के वसीले से तेरी तरफ़ तवज्जो की। ख़ुदाया हमको उनकी मोहब्बतका

وَارْزُقْنَا مُرَافَقَتَهُمْ وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ فِي زُمْرَتِهِمْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

फ़ायदा दे और हमको उनके मक़ाम पर वारिद करना और हमको उनकी दोस्ती नसीब कर और

الرَّاحِمِيْنَ

जन्नत मे उनके गरोह मे दाख़िल कर। अपनी रहमत से ऐ सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

इस दुआ को सय्यद ने रोज़े मबस के लिए भी ज़िक्र किया है:

सत्ताईस रजब

यह चंद ईदों में से एक है और वह दिन है जिस दिन रसूले ख़ुदा (स) मबऊस ब रिसालत हुए। और जिब्रईल उनकी पैगंबरी का हुक्म लेकर नाज़ल हुए। इस दिन के चंद आमाल हैं।

एक: ग़ुस्ल

दो: रोज़ा। और यह दिन साल के उन चार दिनों में शुमार होता है जिनमें रोज़ा रखना ख़ास इम्तियाज़ रखता है के उस दिन का रोज़ा सत्तर साल के रोज़े के बराबर होता है।

तीन: कसरत से सलवात पढ़ना।

चार: ज़ियारते हज़रते रसूले ख़ुदा (स) और अमीरूल मोमिनीन इमाम अली (अ)

पाँच: शेख़ ने मिस्बाह में रय्यान बिन सल्त से रिवायत की है के हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ) जिस ज़माने में बग़दाद में थे, तो पंद्रह रजब और सत्ताईस रजब को रोज़ा रखते थे। और आप (अ) के तमाम ख़ादिम भी रोज़ा रखते थे। और हमको हुक्म देते के बारह रकत नमाज़ पढ़ो। हर रकत में हम्द और सूरह पढ़ें और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हम्द, तौहीद, फ़लक़ और नास चार चार बार पढ़े। इसके बाद चार दफ़ा पढ़े:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नही और अल्लाह सबसे बुजुर्ग है और अल्लाह तआला पाक है। सब

फिर चार बार पढ़े: اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

हम्द ख़ुदाके लिए अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर के सिवा कोई ताक़तो क़ुदरत नही

फिर चार बार पढ़े: اللّٰهُ اللّٰهُ رَبِّيْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

अल्लाह, अल्लाह, मेरा रब है और मै किसी चीज़को उसका शरीक नही बनाता।

لَا اُشْرِكُ بِرَبِّيْ اَحَدًا

किसी को उसका शरीक नही बनाता।

छे: शेख़ ने रिवायत की है जनाब अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह (र) से के इस दिन बारह रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत में हम्द और एक सूरह पढ़े और तशह्हुद और सलाम के बाद हर दो रकत के बाद यह दुआ पढ़े:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ

हम्द उस ख़ुदा के लिए है जिसका कोई बच्चा नही है और जिसकी बादशाहत मे कोई उसका शरीक

وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيرًا يَا عُدَّتِي فِي مُدَّتِي

नही है। और वो अपनी कामिल क़ुदरत से मख़लूक की नुसरत से बे नियाज़ है और उसको अज़मत

يَاصَاحِبِي فِي شِدَّتِي يَا وَلِيِّي فِي نِعْمَتِي يَا غِيَاثِي فِي رَغْبَتِي يَا نَجَاحِي فِي

के साथ याद करो। ऐ मेरे ज़ख़ीरा मेरी उम्र मे ऐ मेरे दोस्त मेरी सख़्ती मे। ऐ मेरे वली मेरी नेमत मे। ऐ

حَاجَتِي يَا حَافِظِي فِي غَيْبَتِي يَا كَافِيِّ فِي وَحْدَتِي يَا اُنْسِي فِي وَحْشَتِي

मेरे दादरस मेरी रग़ाबत मे। ऐ मेरी कामयाबी मेरी हाजत मे। ऐ मेरे मुहाफ़िज मेरी ग़ैबत मे। ऐ मेरी पनाह

اَنْتَ السَّاتِرُ عَوْرَتِي فَلَكَ الْحَمْدُ وَاَنْتَ الْمُقِيلُ عَثْرَتِي فَلَكَ

मेरी तनहाई मे। ऐ मेरे मोनिस मेरी वहशत मे। तू ही मेरे ऐब का छुपाने वाला है। लेहाज़ा तेरे लिए हम्द

الْحَمْدُ وَاَنْتَ الْمُنْعِشُ صَرْعَتِي فَلَكَ الْحَمْدُ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ

है। और तू मेरी लगाज़िशों से दरगुज़र करनेवाला है। लेहाज़ा तेरे लिए हम्द है। और तू मेरे गिरने मे

مُحَمَّدٍ وَاسْتُرْ عَوْرَتِي وَآمِنْ رَوْعَتِي وَاَقِلْنِي عَثْرَتِي وَاصْفَحْ عَنْ

मेरा दस्तगीर है। लेहाज़ा तेरे लिए हम्द है। दुरूद नाज़िल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर और मेरे ऐब

جُرْمِي وَتَجَاوَزْ عَنْ سَيِّئَاتِي فِي اَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ

को छुपादे और ख़ाफ़ से बचा दे और मेरी लगाज़िश को दर गुजर करदे। मेरे जुर्म से चशमपोशी कर।

كَانُوا يُوعَدُونَ

और मेरी बुराईयों से दरगुज़र कर। जन्नत वालों मे जिनका सच्चा वादा उन लोगों से किया गया था।

फिर नमाज़ और दुआओं से फ़ारिग़ होने के बाद सूरह हम्द, तौहीद, फ़लक़, नास, काफ़ेरून और सूरह क़द्र, आयतल कुर्सा को सात बार पढ़े और उसके बाद सात बार पढ़े:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا

ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नही और अल्लाह सबसे बुज़ुर्ग है। अल्लाह तआला पाक है। और अल्लाह के

उसके बाद सात बार पढ़े: بِاللّٰهِ

सिवा कोई क़ुदरत व ताक़त नही है।

اَللّٰهُ اللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا

अल्लाह, अल्लाह, मेरा रब है और मै किसी चीज़ को उसका शरीक नही बनाता।

और फिर जो दुआ चाहे करे:
सात: इक्बाल और मिसबाह के बाज़ नुस्ख़ों में आया है के मुस्तहब है के इस दिन यह दुआ पढे:

یَا مَنْ اَمَرَ بِالْعَفْوِ وَالتَّجَاوُزِ وَضَمَّنَ نَفْسَهُ الْعَفْوَ وَالتَّجَاوُزَ

वो ख़ुदा जिसने माफ़ी और दरगुज़र करने का हुकुम दिया है। और ख़ुद भी माफ़ी और दरगुज़र का ज़ामिन

یَا مَنْ عَفَا وَتَجَاوَزَ اِعْفُ عَنِّیْ وَتَجَاوَزْ یَا كَرِیْمُ اَللّٰهُمَّ وَقَدْ

हुआ है। ऐ वो ख़ुदा जिसने माफ़ किया और दरगुज़र किया अब मुझको भी माफ़ करदे और दरगुज़र करदे। ऐ

اَكْدَى الطَّلَبُ وَاَعْیَتِ الْحِیلَةُ وَالْمَذْهَبُ وَدَرَسَتِ الْاٰمَالُ

करम वाले। ख़ुदाया मेरी तलब सख्त हो गई है। और तदबीर व राह ने थका दिया है। और उम्मीदें नाबूद हो गई

وَانْقَطَعَ الرَّجَاءُ اِلَّا مِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِیكَ لَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ

हैं। और तेरे अलावा सब से आरज़ुएँ मुनकता हो गई हैं। तू अकेला है। तेरा कोई शरीक नही है। ख़ुदाया मैने

اَجِدُ سُبُلَ الْمَطَالِبِ اِلَیْكَ مُشْرَعَةً وَمَنَاهِلَ الرَّجَاءِ لَدَیْكَ

तमाम मतालिब की राह को तेरी तरफ़ ख़ुला पाया और उम्मीद के सर चश्मों को पानी भरा पाया। और दुआ के

مُتْرَعَةً وَاَبْوَابَ الدُّعَاءِ لِمَنْ دَعَاكَ مُفَتَّحَةً وَالِاسْتِعَانَةَ لِمَنِ

दरवाज़ों को उस शख़्स के लिए जो तुझसे दुआ करे खुला पाया। और तेरी मदद उस शख़्स के लिये। जो तुझसे

اسْتَعَانَ بِكَ مُبَاحَةً وَاَعْلَمُ اَنَّكَ لِدَاعِيكَ بِمَوْضِعِ اِجَابَةٍ

मदद माँगे हाज़िर पाई। और मै जानता हूँ के तू हर दुआ करने वाले को मक़ामे क़ुबूलीयत से गुज़ारता है। और

وَلِلصَّارِخِ اِلَيْكَ بِمَرْصَدِ اِغَاثَةٍ وَاَنَّ فِي اللَّهْفِ اِلٰى جُودِكَ

हर फ़रयाद करनेवाले की फ़रयाद रसी को पहुँचता है। और तेरे वजूद की तरफ़ तजररो व ज़ारी मे। और तेरे

وَالضَّمَانِ بِعِدَتِكَ عِوَضًا مِنْ مَنْعِ الْبَاخِلِيْنَ وَمَنْدُوحَةً عَمَّا

वादे के इलतिज़ाम मे मुकम्मल बदला है। ब०खीलों के मना करने का और बेनियाज़ी है मालदारों की सरवत

فِي اَيْدِي الْمُسْتَاثِرِيْنَ وَاَنَّكَ لَا تَحْتَجِبُ عَنْ خَلْقِكَ اِلَّا اَنْ

से। और बेशक तू अपनी मख़लूक से छुपा हुआ नही है मगर ये के उनके आमाल उनके लिए परदा बन जाएँ।

تَحْجُبَهُمُ الْاَعْمَالُ دُونَكَ وَقَدْ عَلِمْتُ اَنَّ اَفْضَلَ زَادِ الرَّاحِلِ

और मैने ये कुछ लिया है के बेहतरीन तोशा तेरी तरफ़ सफ़र करने वाले के लिए व अज़मे मोहकम है जिसके

اِلَيْكَ عَزْمُ اِرَادَةٍ يَخْتَارُكَ بِهَا وَقَدْ نَاجَاكَ بِعَزْمِ الْاِرَادَةِ قَلْبِي

ज़रिए तुझको इख़्तियार करता है। और तुझसे मुनाजात की है। मेरे दिल ने मुसतहकम इरादे के साथ। और मै

وَاَسْاَلُكَ بِكُلِّ دَعْوَةٍ دَعَاكَ بِهَا رَاجٍ بَلَّغْتَهُ اَمَلَهُ اَوْ صَارِخٌ

सवाल करता हूँ तुझसे हर उस दुआ के ज़रिए जिस से तुझ को पुकारा है। उम्मीद करने वालों मे और तूने उनको

اِلَيْكَ اَغَثْتَ صَرْخَتَهُ اَوْ مَلْهُوفٌ مَكْرُوبٌ فَرَّجْتَ كَرْبَهُ اَوْ

उनकी उम्मीद तक पहुँचा दिया है। के तेरी तरफ़ फ़रियाद करने वाले ने और तूने उसकी फ़रयाद को सुना है।

مُذْنِبٌ خَاطِئٌ غَفَرْتَ لَهُ اَوْ مُعَافىً اَتْمَمْتَ نِعْمَتَكَ عَلَيْهِ اَوْ فَقِيرٌ

या हर दर्दमंद, ग़मज़दा ने और तूने उसकी परेशानी को दूर किया है या ख़ता कार गुनाहगार ने और तूने उसको

اَهْدَيْتَ غِنَاكَ اِلَيْهِ وَلِتِلْكَ الدَّعْوَةِ عَلَيْكَ حَقٌّ وَعِنْدَكَ مَنْزِلَةٌ

बख़्श दिया है। या किसी साहेबे आफ़ियत ने दुआ की है तो उस पर नेमतें तमाम करदी हैं। या किसी फ़क़ीर ने

اِلَّا صَلَّيْتَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَقَضَيْتَ حَوَائِجِى حَوَائِجَ الدُّنْيَا

दुआ की तो अपनी दौलत के रूख उसकी तरफ़ मोड़ दिया है। और हर वो दावत जिसका तुझ पर कोई हक हो

وَالآخِرَةِ وَهٰذَا رَجَبٌ الْمُرَجَّبُ الْمُكَرَّمُ الَّذِىْ اَكْرَمْتَنَا بِهٖ اَوَّلُ

या तेरी निगाह मे उसकी कोई मानिज़लत हो। मेरी दुआ है जे मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा।

اَشْهُرِ الْحُرُمِ اَكْرَمْتَنَا بِهٖ مِنْ بَيْنِ الْاُمَمِ يَا ذَا الْجُودِ وَالْكَرَمِ

और मेरी दुनिया व आाख़िरत की हाजतों को पूरा फ़रमा। ख़ुदाया ये रजब बा अज़मत व करामत है। इस से तूने

فَنَسْاَلُكَ بِهٖ وَبِاسْمِكَ الاَعْظَمِ الاَعْظَمِ الاَعْظَمِ الاَجَلِّ

हमे करामत इनायत फ़रमाई। ये पहला मोहतरम महीना है। जो तूने तमाम उमतों के दरमियान हमको इनायत

الاَكْرَمِ الَّذِىْ خَلَقْتَهُ فَاسْتَقَرَّ فِى ظِلِّكَ فَلَا يَخْرُجُ مِنْكَ اِلٰى

किया है। ऐ साहेबे जूद व करम हम तझ से इसी महीने और तेरे अज़ीम तरीन जली तरीन करीम तरीन और

غَيْرِكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاَهْلِ بَيْتِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَتَجْعَلَنَا مِنَ

बुज़ुर्ग तरीन नाम के वास्ते से दुआ कर रहे हैं। वो नाम जिसको तूने ख़ल्क किया है तो उसने तेरे राया ए रहमत मे

الْعَامِلِيْنَ فِيْهِ بِطَاعَتِكَ وَالْآمِلِيْنَ فِيْهِ بِشَفَاعَتِكَ اَللّٰهُمَّ

जगह पाई है। और फिर निकल कर किसी ग़ैर तक नही गया है। तू मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल

وَاهْدِنَا اِلٰى سَوَاءِ السَّبِيْلِ وَاجْعَلْ مَقِيْلَنَا عِنْدَكَ خَيْرَ مَقِيْلٍ

फ़रमा और हमे इस महीने मे अपनी इताअत पर अमल करने वालों और शफ़ाअत के उम्मीद वारों मे क़रार देदे।

فِيْ ظِلٍّ ظَلِيْلٍ فَاِنَّكَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَالسَّلَامُ عَلٰى

ख़ुदाया हमे सीधे रास्ते की हिदायत कर। और हमारी माज़िल को बेह-तरीन मंज़ल क़रार देदे। जो तेरे रहमत के

عِبَادِهِ الْمُصْطَفَيْنَ وَصَلَوَاتُهُ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ اَللّٰهُمَّ وَبَارِكْ

साए मे हो। तू ही हमारे लिए काफ़ी है। और तू ही बेहतरीन निगेहबान है। सलाम हो अल्लाह के मुसतफ़ा बंदों

لَنَا فِيْ يَوْمِنَا هٰذَا الَّذِيْ فَضَّلْتَهُ وَبِكَرَامَتِكَ جَلَّلْتَهُ وَبِالْمَنْزِلِ

पर और उसकी सलवात हो उन सब पर। ख़ुदाया हमे आज के दिन की बरकत इनायत फ़रमा। जिसको तूने

الْعَظِيْمِ الْاَعْلٰى اَنْزَلْتَهُ صَلِّ عَلٰى مَنْ فِيْهِ اِلٰى عِبَادِكَ اَرْسَلْتَهُ

फ़ज़ीलत दी है और अपनी करामत से ज़लील बनाया है। और अपनी बारगाह मे अज़ीम तरीन माज़िल पर क़रार

وَبِالْمَحَلِّ الْكَرِيْمِ اَحْلَلْتَهُ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ صَلَاةً دَائِمَةً تَكُوْنُ

दिया है। सलवात नाज़िल फ़रमा उस बंदे पर जिसको आज के दिन अपने बंदों के दरमियान भेजा है। और मंज़ले

لَكَ شُكْرًا وَلَنَا ذُخْرًا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا وَاخْتِمْ لَنَا

करामत मे जगह इनायात की है। ख़ुदा उनपर दाएमी सलवात नाज़िल कर। जो तेरे लिए शुकर बने और हमारे

بِالسَّعَادَةِ اِلٰى مُنْتَهٰى آجَالِنَا وَقَدْ قَبِلْتَ الْيَسِيرَ مِنْ اَعْمَالِنَا

लिए ज०खीरा बने। हमारे अम्र मे आसानी क़रार दे। और मौत के समय हमारा अंत नेकबख़्ती पर कर। जब

وَبَلَّغْتَنَا بِرَحْمَتِكَ اَفْضَلَ آمَالِنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَصَلَّى

के तूने हमारे मामूली आमाल को क़ुबूल कर लिया हो और अपनी रहमत से आरज़ुओं की बुलंद तरीन मंज़ल

اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तक पहुँचा दिया हो। तू हर शै पर क़ादिर है। और सलवात व सलाम हो तेरा मुहम्मद व आले मुहम्मद पर।

लेखक के अनुसार यह दुआ इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ) ने उस दिन पढ़ी है जब आपको बग़दाद की ओर ले जाया गया। और यह सत्ताइस रजब की तारीख़ थी। लेहाज़ा यह दुआ माहे रजब के ज़०खीरों में से है।

आठ: सय्यद ने इक़बाल में यह दुआ नक़्ल की है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ بِالتَّجَلِّي الاَعْظَمِ...

ऐ ख़ुदा मै तुझसे सवाल करता हूँ सबसे अजीम तज़ल्ली के नाम से...

जिसको कफ़अमी की रिवायत के अनुसार इस शाब के आमाल में नक़्ल किया जा चुका है।

रजब का आख़री दिन।

इस दिन में ग़ुस्ल भी मुस्तहब है और इस दिन का रोज़ा तमाम गुनाहों की बख़शिश का वसीला है। और उस दिन नमाज़े सलमान भी वारिद हुई है।

वर्ग - 2

शाबान

वाज़ेह रहे के माहे शाबान इन्तेहाई मोहतरम महीना है जो मनसूब है हज़रत सय्यदुल अंबिया (स) की तरफ़। आप इस महीने में मुसलसल रोज़ा रखते थे। और उसे माहे रमज़ान से मिला देते थे। और फ़रमाते थे के यह मेरा महीना है। जो व्यक्ति इस माह में एक दिन भी रोज़ा रखेगा बेहिश्त उसके लिए लाज़म होगी। इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत है के जब माहे शाबान आता था तो इमाम ज़ैनुल आबेदिन (अ) अपने असहाब को जमा करके फ़रमाते थे: यह कौन सा महिना है? लोग उत्तर देते: माहे शाबान। तो फ़रमाते के यह माहे शाबान है। इसको रसूले अक्रम (स) ने अपना क़रार दिया है। लेहाज़ा मोहब्बते पैग़म्बर (स) और तकर्रूबे इलाही के लिए इस महीने में रोज़े रखो। क़सम है उस ख़ुदा की जिसके क़ब्ज़े में अली बिन हुसैन (अ) की जान है के मैंने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार इमाम हुसैन (अ) से सुना है और उन्होंने फ़रमाया के मैंने अमीरूल मोमिनीन (अ) से सुना है के जो व्यक्ति भी मोहब्बते पैग़म्बर और तकर्रूबे इलाही के लिए माहे शाबान में रोज़ा रखेगा ख़ुदा उसे अपना महबूब और मुकर्रब बना लेगा। और रोज़े क़यामत करामत अता फ़रमाएगा। और बेहिश्त उसके लिए लाज़म क़रार दे देगा। शेख़ तूसी ने सफ़वान जम्माल के हवाले से बयान किया है: मुझसे इमाम सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के अपने अतराफ़ के लोगों को शाबान के रोज़े पर आमादा करो। मैंने अर्ज़ की: मौला क्या इस रोज़े में कोई फ़ज़ीलत है? फ़रमाया यक़ीनन रसूले अक्रम (स) जब माहे शाबना का चाँद देखते थे तो एक मुनादी के ज़रिए ऐलान कराते थे के मैं अहले मदीना में रसूले अक्रम (स) का नुमाईंदा हूँ। आगाह हो जाओ के हुज़ूर ने फ़रमाया है के माहे शाबान मेरा महीना है। ख़ुदा रहमत करे उस व्यक्ति पर जो इस महीने में रोज़ा रख कर मेरी इम्दाद करे।

इमामे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के अमीरूल मोमिनीन (अ) फ़रमाया करते थे के जब से मैंने उस मुनादी की आवाज़ को सुना है कभी माहे शाबान का

रोज़ा तर्क नहीं किया है। और न आख़री दम तक छोड़ने वाला हूँ। उसके बाद फ़रमाते थे के माहे शाबान और रमज़ान के रोज़े तौबा व मग़फ़ेरत का सामान हैं।

इसमाईल बिन अब्दुल ख़ालिक़ ने नक़्ल किया है के मैं इमामे सादिक़ (अ) की ख़िदमत में था के माहे शाबान के रोज़े का ज़िक्र आ गया। तो हज़रत ने इस सिलसिले में यहाँ तक फ़रमाया के अगर कोई व्यक्ति ख़ूने नाहक का गुनेहगार हो और माहे शाबान में रोज़ा रख कर ख़ुदा की बारगाह में इस्तेग़फ़ार करे तो रोज़ा उसे भी फ़ायदा पहुँचा सकता है।

वाज़ेह रहे के इस मोहतरम महीने के आमाल दो तरह के हैं: कुछ आमाल मुशतरिक हैं और कुछ बाज़ तारीख़ों से मख़सूस हैं।

मुशतरिक आमाल में चंद चीज़ें हैं:

एक: हर दिन सत्तर बार कहे:

दो: हर दिन सत्तर बार कहे: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَ اَسْئَلُهُ التَّوْبَةَ

मै अल्लाह से माफ़ी चाहता हूँ और तौबा तलब करता हूँ।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَ

मै अल्लाह से माफ़ी चाहता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नही है। वह रहमान व रहीम है। ज़िंदा व

اَتُوْبُ اِلَیْهِ.

पाईंदा। और मै उसी से तौबा करता हूँ।

और बाज़ रिवायात में हय्युल क़य्यूम का शब्द रहमानो रहीम से पहले है। और दोनो ही तरह किया जा सकता है। रिवायत से मालूम होता है के माहे शाबान में बेहतरीन दुआ व ज़िक्र इस्तेग़फ़ार है। जो व्यक्ति हर दिन सत्तर बार

इस्तेग़फ़ार करे गोया दूसरे महीनों में सत्तर हज़ार बार इस्तेग़फ़ार किया है।
तीन: इस महीने में सदक़ा दे चाहे आधा ख़ुरमें का दाना। ताके परवरदिगार उसे आतिशे जहन्नम से आज़ाद कर दे। इमाम सादिक़ (अ) से मनक़ूल है के आपसे रजब के रोज़ के फ़ज़ाएल के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया के तुम लोग शाबान के रोज़ से क्यों ग़ाफ़िल हो? रावी ने अर्ज़ किया: फ़रज़न्दे रसूल, माहे शाबान के एक रोज़े की फ़ज़ीलत क्या है? फ़रमाया ख़ुदा क़सम इसका सवाब बेहिश्त है। अर्ज़ की के यब्न रसूलिल्लाह, इस महीने के बेहतरीन आमाल क्या हैं? फ़रमाया सदक़ा और इस्तेग़फ़ार। जो व्यक्ति माहे शाबान में सदक़ा देता है परवरदिगार उस सदक़े को बराबर बढ़ाता रहता है जैसा के ऊँट अपने बच्चे की तरबियत करता रहता है। यहाँ तक के रोज़े क़यामत कोहे ओहद जैसा बनकर उसके सामने आए।
चार: इस पूरे महीने में एक हज़ार बार कहे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही है और हम उसके सिवा किसी की परसतिश नही करते। हम

الْمُشْرِكِيْنَ

उसकी इताअत मे मुख़लिस हैं। चाहे मुशरिकों को नागवार क्यों न हो।

इसका सवाब बेशुमार है। और यह हज़ार साल की इबादत के बराबर है।
पाँच: इस महीने के हर जुमेरात को दो रकत नमाज़ पढ़े और हर रकत में सूरह हम्द के बाद सौ बार सूरह तौहीद पढ़े। सलाम के बाद सौ बार सलवात भेजे। परवरदिगार उसकी तमाम दीनी दुनयवी हाजतों को पूरा करेगा। इसमें रोज़ा भी मुस्तहब है। रिवायत में है के जुमेरात के दिन माहे शाबान में आसमानों को ज़ीनत दी जाती है और मलाएका अर्ज़ करते हैं: ख़ुदाया आज के दिन

रोज़ादारों को बख़्श दे और उनकी दुआओं को क़ुबूल कर ले। रसूले अक्रम (स) से रिवायत है के जो व्यक्ति माहे शाबान में पीर और जुमेरात के दिन रोज़ा रखे उसकी बीस हाजतें दुनिया में और बीस आख़ेरत में पूरी की जाएंगी।
छे: इस महीने में सलवात ब कस्रत पढ़े।
सात: हर रोज़ ज़वाल के समय और शबे 15 शाबान में इस सलवात को पढ़े जो इमाम सज्जाद (अ) से नक़्ल की गई है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ شَجَرَةِ النُّبُوَّةِ، وَمَوضِعِ

ख़ुदाया रहमत भेज मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। जो नबुव्वत के शजर, रिसालत की माज़िल,

الرِّسالَةِ، وَمُخْتَلَفِ الْمَلائِكَةِ وَ مَعْدِنِ الْعِلْمِ، وَ أَهْلِ بَيْتِ

मलाएका के आने जाने की जगह, इलम के मादन, और वही के अहले बैत हैं। ख़ुदाया रहमत

الْوَحْيِ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ الْفُلْكِ الْجارِيَةِ فِي

नाज़ल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। जो इंतिहाई गहराईयों मे चलने वाले सफ़ीना हैं। के जो

اللُّجَجِ الْغامِرَةِ، يَأْمَنُ مَنْ رَكِبَهَا، وَيَغْرَقُ مَنْ تَرَكَهَا، الْمُتَقَدِّمُ

के उन से वाबसता हो गया अमान पा गया। जिसने छोड़ दिया वो डूब गया। जो उनसे आगे बढ़

لَهُمْ مارِقٌ، وَالْمُتَاَخِّرُ عَنْهُمْ زَاهِقٌ، وَ اللَّازِمُ لَهُمْ لَاحِقٌ.

गया वो हद से निकल गया। और जो पीछे रह गया वो हलाक हो गया। जो उन से वाबस्ता हो गया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ الْكَهْفِ الْحَصِيْنِ، وَغِيَاثِ

वही साथ हो गया। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत भेज। जो बहुत मज़बूत पनाहगाह

الْمُضْطَرِّ الْمُسْتَكِيْنِ، وَمَلْجَاَ الْهَارِبِيْنَ وَعِصْمَةِ الْمُعْتَصِمِيْنَ.

मु०ज्तर व परेशानहाल के फ़रयाद रस भागे हुए लोगों की पनाहगाह और हिफ़ाज़त मांगने वालों

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ صَلَاةً كَثِيْرَةً تَكُوْنُ لَهُمْ

के रक्षक हैं। ख़ुदाया रहमत नाज़ल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। बेशुमार जो उनके लिए

رِضًا وَلِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ اَدَاءً وَقَضَاءً بِحَوْلٍ مِنْكَ وَقُوَّةٍ يَا

बाएसे जा हो और उनके हक की अदाएगी का सामान हो। अपनी हुकूमत व ताक़त के सहारे।

رَبَّ الْعَالَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ الطَّيِّبِيْنَ الْاَ

ऐ रब्बुल आलमीन। ख़ुदाया रहमत नाज़ल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। जो पाकीज़ा नेक

بْرَارِ الْاَخْيَارِ الَّذِيْنَ اَوْجَبْتَ حُقُوْقَهُمْ وَ فَرَضْتَ طَاعَتَهُمْ

किरदार और मुनतख़ब बंदे हैं। जिनके हुक़ूक़ को तूने वाजिब करार दिया है। उनकी इताअत और

وَ وِلَايَتَهُمْ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اعْمُرْ قَلْبِيْ

मोहब्बत को फ़र्ज़ किया है। ख़ुदाया रहमत नाज़िल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। और मेरे

بِطَاعَتِكَ وَلَا تُخْزِنِيْ بِمَعْصِيَتِكَ وَارْزُقْنِيْ مُوَاسَاةَ مَنْ قَتَّرْتَ

दिल को उनकी इताअत से मामूर करदे और मुझे उपनी नफ़रमानी से रूसवा न कर। मुझे तौफ़ीक़

عَلَيْهِ مِنْ رِزْقِكَ بِمَا وَسَّعْتَ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ، وَ نَشَرْتَ عَلَيَّ

दे के जिनको तू ने कम रिज़्क़ दिया है मै उनसे हमदर्दा करूँ उस वुसअत द्वारा जो तूने मुझे इनायत

مِنْ عَدْلِكَ، وَ اَحْيَيْتَنِيْ تَحْتَ ظِلِّكَ وَ هٰذَا شَهْرُ نَبِيِّكَ سَيِّدِ

की है और जो तूने मुझपर अपने अद्ल को फ़ैलाया है और मुझे अपने छत्र छायामे ज़िन्दगी दी है।

رُسُلِكَ شَعْبَانُ الَّذِيْ حَفَفْتَهٗ مِنْكَ بِالرَّحْمَةِ وَ الرِّضْوَانِ الَّذِيْ

ख़ुदाया ये तेरे नबी सय्यदुल मुरसलीन का माहीना शाबान है। उसको तूने रहमतो रज़ा मे घेर लिया

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّمَ يَدْاَبُ فِيْ صِيَامِهٖ

है। इसमे रसूले अक्रम (स) पाबंदी से दिन और रातमे नमाज़ो रोज़ा अदा करते थे। इस महीने की

وَ قِيَامِهٖ فِيْ لَيَالِيْهِ وَ اَيَّامِهٖ بُخُوْعًا لَكَ فِيْ اِكْرَامِهٖ وَ اِعْظَامِهٖ اِلٰى

अज़मतो करामत के इज़हार के लिए और तेरी बारगाह मे ख़ुज़ू व ख़ुशूके लिए जब तक ज़िंदा रहे।

مَحَلِّ حِمَامِهٖ اَللّٰهُمَّ فَاَعِنَّا عَلَى الْاِسْتِنَانِ بِسُنَّتِهٖ فِيْهِ، وَ نَيْلِ

ख़ुदाया हमारी मदद कर। हम उनकी सुनन्त पर अमल करें। और उनकी शफ़ात हासिल करें।

الشَّفَاعَةِ لَدَيْهِ اَللّٰهُمَّ وَ اجْعَلْهُ لِيْ شَفِيْعًا مُشَفَّعًا، وَ طَرِيْقًا

ख़ुदा उनहे हमारा शफ़ी मक़बूलुल शफ़ात और अपनी बारगाहमे आने वसीला बनादे। और हमे

اِلَيْكَ مَهْيَعًا وَ اجْعَلْنِيْ لَهٗ مُتَّبِعًا حَتّٰى اَلْقَاكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

उनका पैरू क़रार देदे ताके क़यामतके दिन तुझ से मुलाक़ात करें तो तू हमसे राज़ी रहे व हमारे

عَنِّيْ رَاضِيًا، وَعَنْ ذُنُوْبِيْ غَاضِيًا، قَدْ اَوْجَبْتَ لِيْ مِنْكَ الرَّحْمَةَ وَ

गुनाहों से चश्मपोशी करे। हमारे लिए अपनी रहमतो रज़ा को लाज़म क़रार देदे। और हमे मंज़ले

الرِّضْوَانَ، وَ اَنْزَلْتَنِيْ دَارَ الْقَرَارِ وَ مَحَلَّ الْاَخْيَارِ.

क़रार और महेल्ले इख़्तियार तक पहुँचा दे।

मुनाजाते शाबानिया

आठ: इस मुनाजात को पढ़े जो इबने ख़ालविया से नक़्ल की गई है। और उन्होंने फ़रमाया है के यह मुनाजात अमीरूल मोमिनीन (अ) और उनके फ़रज़न्दान अइम्मए मासूमीन (अ) की है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اسْمَعْ دُعَآئِيْ اِذَا دَعَوْتُكَ وَ

ख़ुदाया रहमत नाज़ल कर मुहम्मद व आले मुहम्मद पर। और जब मै दुआ करूँ तो मेरी दुआ क़ुबूल

اسْمَعْ نِدَآئِيْ اِذَا نَادَيْتُكَ وَ اَقْبِلْ عَلَيَّ اِذَا نَاجَيْتُكَ فَقَدْ هَرَبْتُ

करले। और जब मै पुकारूँ तो मेरी आवाज़ को सुन ले। जब मुनाजात करूँ तो मेरी तरफ़ धयान दे

اِلَيْكَ وَ وَقَفْتُ بَيْنَ يَدَيْكَ مُسْتَكِيْنًا لَّكَ مُتَضَرِّعًا اِلَيْكَ

के मै तेरी तरफ़ भाग आया हूँ। और तेरे ही सामने खड़ा हूँ। फ़क़ीर व मिसकीन हूँ। व फ़रयादी हूँ।

رَاجِيًا لِّمَا لَدَيْكَ ثَوَابِيْ وَ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ تَخْبُرُ حَاجَتِيْ وَ

और तेरे सवाब का उम्मीदवार हूँ। तू मेरे दिल का हाल जानता है। मेरी हाजत से बाख़बर है। मेरे

تَعْرِفُ ضَمِيْرِیْ وَلَا يَخْفٰى عَلَيْكَ اَمْرُ مُنْقَلَبِیْ وَمَثْوَایَ وَمَآ

ज़मीर को पहचानता है। और तुझसे मेरा अंजाम मख़फ़ी नही है। और जो मै कहना चाहता हूँ वो भी

اُرِيْدُ اَنْ اُبْدِئَ بِهٖ مِنْ مَّنْطِقِیْ وَ اَتَفَوَّهُ بِهٖ مِنْ طَلِبَتِیْ وَ اَرْجُوْهُ

तुझे मालूम है। और जो बयान कर रहा हूँ वो भी तू जानता है। और आाफ़ियत के लिए जिस चीज़ का

لِعَاقِبَتِیْ وَ قَدْ جَرَتْ مَقَادِيْرُكَ عَلَیَّ يَا سَيِّدِیْ فِيْمَا يَكُوْنُ

उम्मीदवार हूँ वो भी तेरे इल्म मे है। और इसका फ़ैसला हो चुका है। आख़िर उम्र तक के लिए। मेरे

مِنِّیْ اِلٰى اٰخِرِ عُمُرِیْ مِنْ سَرِيْرَتِیْ وَ عَلَانِيَتِیْ وَ بِيَدِكَ لَا بِيَدِ

ज़ाहिर व बातिन सब के लिए। ज़्यादती व कमी और लाभ व घाटा तेरे अलावा और किसी के हाथ मे

غَيْرِكَ زِيَادَتِیْ وَ نَقْصِیْ وَ نَفْعِیْ وَ ضُرِّیْ اِلٰهِیْ اِنْ حَرَمْتَنِیْ فَمَنْ

नही है। ख़ुदाया अगर तू महरूम करदेगा तो मुझे कौन अता करेगा और अगर तू छोड़ देगा तो कौन

ذَا الَّذِیْ يَرْزُقُنِیْ وَ اِنْ خَذَلْتَنِیْ فَمَنْ ذَا الَّذِیْ يَنْصُرُنِیْ اِلٰهِیْ

मदद करेगा? ख़ुदाया मै तेरे ग़ज़बसे और तेरी नाराज़गी के नाज़िल होने से तेरी ही पनाह चाहता हूँ।

اَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَ حُلُوْلِ سَخَطِكَ اِلٰهِیْ اِنْ كُنْتُ غَيْرَ

मालिक अगर मै तेरी रहमत का अहल नही हूँ। तो तू इस बात का अहल है के अपनी मेहेरबानी से

مُسْتَاْهِلٍ لِّرَحْمَتِكَ فَاَنْتَ اَهْلٌ اَنْ تَجُوْدَ عَلَیَّ بِفَضْلِ سَعَتِكَ

मुझ पर करम करे। ख़ुदाया जैसे के मै तेरे सामने खड़ा हूँ। और मेरे नफ़्स पर हुस्ने तवक्कुल का साया

اِلٰهِیْ كَاَنِّیْ بِنَفْسِیْ وَاقِفَةٌ بَیْنَ یَدَیْكَ وَ قَدْ اَظَلَّهَا حُسْنُ

है। तूने अपनी बात कह दी है और मुझे अपनी माफ़ी से ढाँप लिया है। ख़ुदाया अगर तू माफ़ करदेगा

تَوَكُّلِیْ عَلَیْكَ فَقُلْتَ مَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ تَغَمَّدْتَّنِیْ بِعَفْوِكَ

तो तेरे अलावा इसका अहल कौन होगा? और अगर मेरी मौत क़रीब आ गई और मेरे आमाल ने

اِلٰهِیْ اِنْ عَفَوْتَ فَمَنْ اَوْلٰی مِنْكَ بِذٰلِكَ وَاِنْ كَانَ قَدْ دَنَا اَجَلِیْ

तुझसे क़रीब नही बनाया है तो मै गुनाहों के इक्रर ही को अपना वसीला बाना रहा हूँ। ख़ुदाया मैने

وَلَمْ یُدْنِنِیْ مِنْكَ عَمَلِیْ فَقَدْ جَعَلْتُ الْاِقْرَارَ بِالذَّنْۢبِ اِلَیْكَ

अपने नफ़्स को मोहलत देकर हलाक कर दिया है। अब अगर तू माफ़ न करेदा तो वाए हो मेरे हाल

وَسِیْلَتِیْ اِلٰهِیْ قَدْ جُرْتُ عَلٰی نَفْسِیْ فِی النَّظَرِ لَهَا فَلَهَا الْوَیْلُ

पर। ख़ुदाया ज़िंदगी भर तू तो एहसान करता रहा है। तो अब मरने के बाद इस एहसान को न रोक

اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَهَا اِلٰهِیْ لَمْ یَزَلْ بِرُّكَ عَلَیَّ اَیَّامَ حَیٰوتِیْ فَلَا

देना। भला मै मरने के बाद तेरी निगाहे करम से कैसे मायूस हो सकता हूँ। जब के ज़िनदगी भर तुझसे

تَقْطَعْ بِرَّكَ عَنِّیْ فِیْ مَمَاتِیْ اِلٰهِیْ كَیْفَ اٰیَسُ مِنْ حُسْنِ نَظَرِكَ

सिवाए नेकियों के कुछ नही देखा? ख़ुदाया मेरे साथ वही बरताओ करना जिसका तू अहल है। और

لِیْ بَعْدَ مَمَاتِیْ وَ اَنْتَ لَمْ تُوَلِّنِیْ اِلَّا الْجَمِیْلَ فِیْ حَیٰوتِیْ اِلٰهِیْ تَوَلَّ

अपने फ़ज़्ल से इस बंदे पर मेहेरबानी करना जो गुनहगार है। और जिसको जेहालतों न ढ़ाँप लिया

مِنْ اَمْرِیْ مَآ اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ عُدْ بِفَضْلِكَ عَلٰی مُذْنِبٍ قَدْ غَمَرَهٗ

है। मालिक तूने दुनिया मे मेरे गुनाहों को छुपाया है। तो मै आख़िरत मे उनकी परदा पोशी का उससे

جَهْلُهٗ اِلٰهِیْ قَدْ سَتَرْتَ عَلَیَّ ذُنُوْبًا فِی الدُّنْیَا وَ اَنَا اَحْوَجُ اِلٰی

ज़्यादा मोहताज हूँ। जब तूने अपने नेक बंदों पर ज़ाहिर नही किया है। तो अब क़यामत के दिन मंजरे

سَتْرِهَا عَلَیَّ مِنْكَ فِی الْاُخْرٰی اِلٰهِیْ قَدْ اَحْسَنْتَ اِلَیَّ اِذْ لَمْ

आम पर मुझे रूस्वा न करना। ख़ुदाया तेरे करम ने मेरी उम्मीदों को फैला दिया है। और तेरी माफ़ी

تُظْهِرْهَا لِاَحَدٍ مِّنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِیْنَ فَلَا تَفْضَحْنِیْ یَوْمَ

मेरे अमल से कहीं ज़्यादा बेहतर है। लेहाज़ा मेरे मालिक जिस दिन बंदों के दरमियान फ़ैसला करना

الْقِیَامَةِ عَلٰی رُئُوْسِ الْاَشْهَادِ اِلٰهِیْ جُوْدُكَ بَسَطَ اَمَلِیْ وَ

हमे अपनी मुलाक़ात के शरफ़ से महरूम न करना। लेहाज़ा मेरे उज्र को क़ुबूल कर ले। ख़ुदाया ये

عَفْوُكَ اَفْضَلُ مِنْ عَمَلِیْ اِلٰهِیْ فَسُرَّنِیْ بِلِقَآئِكَ یَوْمَ تَقْضِیْ

मेरी माज़िरत उस बंदे की है जो क़ुबूलियत से बेनियाज़ नही है। लेहाज़ा मेरे उज्र को क़ुबूल करले। ऐ

فِیْهِ بَیْنَ عِبَادِكَ اِلٰهِیْ اعْتِذَارِیْ اِلَیْكَ اعْتِذَارُ مَنْ لَّمْ

वो करीमतरीन मालिक। जिस से हर ख़ताकार माज़रत करता है। ख़ुदाया मेरी हाजतों को पलटाना

یَسْتَغْنِ عَنْ قَبُوْلِ عُذْرِهٖ فَاقْبَلْ عُذْرِیْ یَآ اَكْرَمَ مَنِ اعْتَذَرَ

नही। मेरी उम्मीद को ना उम्मीद न करना और मेरी आरज़ुओं को क़ता न करना। मालिक अगर

اِلَيْهِ الْمُسِيْئُوْنَ اِلٰهِيْ لَا تَرُدَّ حَاجَتِيْ وَ لَا تُخَيِّبْ طَمَعِيْ وَ لَا

तू मुझे ज़लील करना चाहता तो हिदायत न देता। और अगर रूस्वा करना चाहता तो आफ़ियत

تَقْطَعْ مِنْكَ رَجَآئِيْ وَ اَمَلِيْ اِلٰهِيْ لَوْ اَرَدْتَّ هَوَانِيْ لَمْ تَهْدِنِيْ

न देता। मै ये सोंच भी नही सकता हूँ के तू मेरी इस हाजत को रद् कर देगा जिसको मागंने मे सारी

وَ لَوْ اَرَدْتَّ فَضِيْحَتِيْ لَمْ تُعَافِنِيْ اِلٰهِيْ مَآ اَظُنُّكَ تَرُدُّنِيْ فِيْ

ज़िन्दगी गुज़ारी है। मेरे मालिक तेरे लिए दाएमी अबदी सरमदी हम्द है। जिसमे इज़ाफ़ा होता है कमी

حَاجَةٍ قَدْ اَفْنَيْتُ عُمْرِيْ فِيْ طَلَبِهَا مِنْكَ اِلٰهِيْ فَلَكَ الْحَمْدُ

नही होती है। जैसे तू चाहता है। ख़ुदाया अगर तू मेरे जुर्म का मवाख़िजा करेगा तो मै तेरी माफ़ी

اَبَدًا اَبَدًا دَآئِمًا سَرْمَدًا يَزِيْدُ وَلَا يَبِيْدُ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى

का सवाल करूंगा। और अगर तू मेरे गुनाहों की गिरफ़्त कर लेगा तो मै तेरी मग़ाफ़िरत के बारे

اِلٰهِيْ اِنْ اَخَذْتَنِيْ بِجُرْمِيْ اَخَذْتُكَ بِعَفْوِكَ وَ اِنْ اَخَذْتَنِيْ

मे पूछूँगा। और अगर तू मुझे जहन्नम मे दाख़िल कर देगा तो मै अहले जहन्नम से कहूँगा के मै तेरा

بِذُنُوْبِيْ اَخَذْتُكَ بِمَغْفِرَتِكَ وَ اِنْ اَدْخَلْتَنِي النَّارَ اَعْلَمْتُ

चाहनेवाला था। ख़ुदाया अगर तेरी इताअत के सामने मेरा अमल छोटा है तो तेरी करामत के सामने

اَهْلَهَآ اَنِّيْٓ اُحِبُّكَ اِلٰهِيْ اِنْ كَانَ صَغُرَ فِيْ جَنْبِ طَاعَتِكَ عَمَلِيْ

मेरी उम्मीद बहुत बड़ी है। ख़ुदाया मै तेरी बारगाह से नाकाम और महरूम किस तरह जा सकता हूँ?

فَقَدْ كَبُرَ فِيْ جَنْبِ رَجَآئِكَ اَمَلِيْ اِلٰهِيْ كَيْفَ اَنْقَلِبُ مِنْ

जब के मेरा हुस्ने ज़न तेरे करम से यही था के तू मुझे नजात देकर रहमत के साथ मख़सूस कर देगा।

عِنْدِكَ بِالْخَيْبَةِ مَحْرُوْمًا وَ قَدْ كَانَ حُسْنُ ظَنِّيْ بِجُوْدِكَ اَنْ

ख़ुदाया मैने ग़ाफलतों के आलम मे अपनी जिंदगी को गुज़ार दिया है। और तुझसे दूरी के नशे मे

تَقْلِبَنِيْ بِالنَّجَاةِ مَرْحُوْمًا اِلٰهِيْ وَ قَدْ اَفْنَيْتُ عُمْرِيْ فِيْ شِرَّةِ

अपनी जवानी को बरबाद कर दिया है। और एक दिन जब मै तेरी नाराज़गी के रासते पर जा रहा था

السَّهْوِ عَنْكَ وَ اَبْلَيْتُ شَبَابِيْ فِيْ سَكْرَةِ التَّبَاعُدِ مِنْكَ

मुझे होश नही आया। मगर बहरहाल मै तेरा बंदा हूँ। तेरे बंदे का फ़रज़ंद हूँ। तेरे सामने खड़ा हूँ और

اِلٰهِيْ فَلَمْ اَسْتَيْقِظْ اَيَّامَ اغْتِرَارِيْ بِكَ وَ رُكُوْنِيْ اِلٰى سَبِيْلٍ

तेरे ही करम को वसाला बनाए हुए हूँ। ख़ुदाया मै वो बंदा हूँ जो तेरी नरमी से फ़ायदा उठाकर बेहयाई

سَخَطِكَ اِلٰهِيْ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَ ابْنُ عَبْدِكَ قَآئِمٌ بَيْنَ يَدَيْكَ

के ज़रिए तेरा सामना करता था। मगर अब मै हर बुराई से निकल आया हूँ। और तुझसे माफ़ी का

مُتَوَسِّلٌ بِكَرَمِكَ اِلَيْكَ اِلٰهِيْ اَنَا عَبْدٌ اَتَنَصَّلُ اِلَيْكَ مِمَّا

तलबगार हूँ। इस लिए माफ़ी ही तेरे करम की ज़मानत है। ख़ुदाया मेरे पास कोई ऐसी ताक़त नही है

كُنْتُ اُوَاجِهُكَ بِهٖ مِنْ قِلَّةِ اسْتِحْيَآئِيْ مِنْ نَّظَرِكَ وَ اَطْلُبُ

जिसके ज़रिए मै मासियत से निकल आऊँ। मगर उसी समय जब तू मुझे अपनी मुहब्बत के लिए

الْعَفْوَ مِنْكَ اِذِ الْعَفْوُ نَعْتٌ لِكَرَمِكَ اِلٰهِیْ لَمْ یَكُنْ لِیْ حَوْلٌ

बेदार करदे। जैसा तूने चाहा मै हो गया। अब तेरा शुक्र है के तूने अपने करम मे दाख़ल कर लिया है।

فَاَنْتَقِلَ بِهٖ عَنْ مَعْصِیَتِكَ اِلَّا فِیْ وَقْتٍ اَیْقَظْتَنِیْ لِمَحَبَّتِكَ وَ

और मेरे दिल को ग़फ़लत की कसाफ़त से पाक कर दिया है। मालकि मेरी तरफ़ उस बंदे की तरह

كَمَا اَرَدْتَّ اَنْ اَكُوْنَ كُنْتُ فَشَكَرْتُكَ بِاِدْخَالِیْ فِیْ كَرَمِكَ وَ

नज़र कर जिसको तूने पुकारा तो उसने सुन लिया और उसे अपनी राह मे लगाना चाहा तो उसने

لِتَطْهِیْرِ قَلْبِیْ مِنْ اَوْسَاخِ الْغَفْلَةِ عَنْكَ اِلٰهِیْ اُنْظُرْ اِلَیَّ نَظَرَ

इख़तियार कर लिया। ऐ वो क़रीब जो फ़रेब ख़ुर्दा से भी दूर नही होता है। ऐ वो स०खी जो किसी

مَنْ نَادَیْتَهٗ فَاَجَابَكَ وَ اسْتَعْمَلْتَهٗ بِمَعُوْنَتِكَ فَاَطَاعَكَ یَا

उम्मीदवार के सवाल मे कंजूसी नही करता है। ऐ मेरे मालिक मुझे वो दिल देदे जिसका शौक तुझसे

قَرِیْبًا لَّا یَبْعُدُ عَنِ الْمُغْتَرِّ بِهٖ وَیَا جَوَادًا لَا یَبْخَلُ عَمَّنْ رَجَا

क़रीबतर करदे। और वो ज़बान देदे जिसकी सदाक़त तेरी बारगाह तक पहुँचादे। वो निगाह देदे जो

ثَوَابَهٗ اِلٰهِیْ هَبْ لِیْ قَلْبًا یُّدْنِیْهِ مِنْكَ شَوْقُهٗ وَلِسَانًا یُّرْفَعُهٗ

तुझसे क़रीबतर बनादे। ख़ुदाया जो तेरे ज़रिए मारूफ़ होता है वो मजहूल नही होता है। और जो तेरी

اِلَیْكَ صِدْقُهٗ وَ نَظَرًا یُّقَرِّبُهٗ مِنْكَ حَقُّهٗ اِلٰهِیْ اِنَّ مَنْ تَعَرَّفَ

पनाह ले लेता है वो लावारिस नही होता है। जिसकी तरफ़ तू मुतवज्ञे हो जाए वो रंजीदा नही होता है।

بِكَ غَيْرُ مَجْهُوْلٍ وَّ مَنْ لاَذَبِكَ غَيْرُ مَخْذُوْلٍ وَ مَنْ اَقْبَلْتَ

मालिक जो तेरे सहारे चले उसे रौश्नी मिल जाती है। और जो तेरी पनाह लेले उसे पनाह मिल जाती

عَلَيْهِ غَيْرُ مَمْلُوْكٍ اِلٰهِیْ اِنَّ مَنِ انْتَهَجَ بِكَ لَمُسْتَنِيْرٌ وَّاِنَّ مَنِ

है। अब मै तेरी पनाह मे आया हूँ। लेहाज़ा अपनी रहमत से नउम्मीद न करना और अपनी राफ़्त मे

اعْتَصَمَ بِكَ لَمُسْتَجِيْرٌ وَ قَدْ لُذْتُ بِكَ يَا اِلٰهِیْ فَلاَ تُخَيِّبْ

किसी चा०rज को हाएल न करना। ख़ुदाया मुझे अपने चाहने वालों मे उनकी माज़िल पर ख़ड़ा करदे

ظَنِّیْ مِنْ رَحْمَتِكَ وَلاَ تَحْجُبْنِیْ عَنْ رَّافَتِكَ اِلٰهِیْ اَقِمْنِیْ فِیْ

जो मोहब्ब्त मे इज़ाफ़े के उम्मीदवार हैं। ख़ुदाया मुझे मुसलसल अपने ज़िक्र का शौक दे। और मेरी

اَهْلِ وِلاَيَتِكَ مَقَامَ مَنْ رَجَا الزِّيَادَةَ مِنْ مَحَبَّتِكَ اِلٰهِیْ وَ

हिम्मत को अपने बड़े नामों और पवित्र स्थान मे कामयाबी के निशात मे क़रार देदे। ख़ुदाया तुझे तेरी

اَلْهِمْنِیْ وَلَهًا بِذِكْرِكَ اِلٰی ذِكْرِكَ وَ اجْعَلْ هِمَّتِیْ فِیْ رَوْحِ

क़सम के मुझे अहले इताअत की मंज़ल से और अपनी रिज़ा के नेकतरीन मक़ाम से मिला दे के मै

نَجَاحِ اَسْمَآئِكَ وَمَحَلِّ قُدْسِكَ اِلٰهِیْ بِكَ عَلَيْكَ اِلَّا اَلْحَقْتَنِیْ

न अपने आप से किसी बला को टाल सकता हूँ और न उसे कोई फ़ायदा पहुँचा सकता हूँ। ख़ुदाया

بِمَحَلِّ اَهْلِ طَاعَتِكَ وَالْمَثْوَی الصَّالِحِ مِنْ مَرْضَاتِكَ فَاِنِّیْ

मै तेरा बंदा। कमज़ोर व पापी हूँ। और तेरा ग़ुलाम ऐबदार हूँ। लेहाज़ा मुझे उन लोगों मे क़रार न देना

لَا اَقْدِرُ لِنَفْسِیْ دَفْعًا وَّ لَا اَمْلِكُ لَهَا نَفْعًا اِلٰهِیْ اَنَا عَبْدُكَ

जिनसे तू अपना मूह मोड़ ले। और जिनकी ग़ा०फ़ुत तेरी माफ़ी की राह मे हाएल हो जाए। ख़ुदाया

الضَّعِیْفُ الْمُذْنِبُ وَ مَمْلُوْكُكَ الْمُنِیْبُ فَلَا تَجْعَلْنِیْ مِمَّنْ

मुझे अपनी तरफ़ मुकम्मल तवज्जो इनायात कर। और मेरे दिलकी निगाहों को अपनी तरफ़ देखने

صَرَفْتَ عَنْهُ وَجْهَكَ وَ حَجَبَهٗ سَهْوُهٗ عَنْ عَفْوِكَ اِلٰهِیْ هَبْ لِیْ

की रौश्नी से नूरानी बना दे। ताके दिल की निगाहें हिजाबे नूर को चाक करके उस महल व मादने

كَمَالَ الْاِنْقِطَاعِ اِلَیْكَ وَ اَنِرْ اَبْصَارَ قُلُوْبِنَا بِضِیَآءِ نَظَرِهَا

अज़मत तक पहुच जाएं। और हमारी रूहें तेरे मक़ामे इज़्ज़त व कुद्स से वाबस्ता हो जाएं। ख़ुदाया

اِلَیْكَ حَتّٰی تَخْرِقَ اَبْصَارُ الْقُلُوْبِ حُجُبَ النُّوْرِ فَتَصِلَ اِلٰی

मुझे उन लोगों मे क़रार दे जिनको तूने पकारा तो उनहोंने लब्बैक कही और जिनको देख लिया तो

مَعْدِنِ الْعَظَمَةِ وَ تَصِیْرَ اَرْوَاحُنَا مُعَلَّقَةً بِعِزِّ قُدْسِكَ اِلٰهِیْ

तेरे जलाल से बेहोश हो गए। तूने उनसे ख़ामोशी से बातें कीं और उनहोंने अलल एलान तेरे लिए

وَ اجْعَلْنِیْ مِمَّنْ نَادَیْتَهٗ فَاَجَابَكَ وَ لَاحَظْتَهٗ فَصَعِقَ لِجَلَالِكَ

अमल किया। ख़ुदाया हमने अपने हुस्ने जन पर मायूसी को मुसल्लत नही किया। और न मेरी उम्मीदें

فَنَاجَیْتَهٗ سِرًّا وَ عَمِلَ لَكَ جَهْرًا اِلٰهِیْ لَمْ اُسَلِّطْ عَلٰی حُسْنِ

तेरे करम से क़ता हुई। ख़ुदाया अगर खताओं ने तेरी बारगाह मे गिरा दिया है। तो अब हुस्ने तवक्कुल

ظَنِّیْ قُنُوْطَ الْاِیَاسِ وَ لَا انْقَطَعَ رَجَآئِیْ مِنْ جَمِیْلِ کَرَمِكَ

की बिना पर मुझसे दरगुज़र कर। मालिक अगर मेरे गुनाहों ने तेरे मक़ामे लुत्फ़ से गिरा दिया है। तो

اِلٰهِیْ اِنْ کَانَتِ الْخَطَایَا قَدْ اَسْقَطَتْنِیْ لَدَیْكَ فَاصْفَحْ عَنِّیْ

तेरी मेहेरबानी व करम ने मुझे होशियार कर दिया है। मालिक अगर मुझे ग़फ़लत ने तेरी मुलाक़ात

بِحُسْنِ تَوَکُّلِیْ عَلَیْكَ اِلٰهِیْ اِنْ حَطَّتْنِیْ الذُّنُوْبُ مِنْ مَکَارِمِ

की तय्यारी से सुला दिया है तो तेरे अहसानात की मारिफ़त ने मुझे बेदार कर दिया है। मालिक अगर

لُطْفِكَ فَقَدْ نَبَّهَنِیْ الْیَقِیْنُ اِلٰی کَرَمِ عَطْفِكَ اِلٰهِیْ اِنْ اَنَا

तेरे अज़ीम इक़ाब ने मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाया है। तो तेरे अज़ीम सवाब ने जन्नत की दावत दी

مَتَّنِیْ الْغَفْلَةُ عَنِ الْاِسْتِعْدَادِ لِلِقَآئِكَ فَقَدْ نَبَّهَتْنِیْ الْمَعْرِفَةُ

है। अब मै तुझही से उम्मीदवार हूँ तो तुझही से दुआ करता हूँ। और तेरी ही तरफ़ रग़बत करता हूँ।

بِکَرَمِ الْاٰئِكَ اِلٰهِیْ اِنْ دَعَانِیْ اِلَی النَّارِ عَظِیْمُ عِقَابِكَ فَقَدْ

और मेरा मुतालेबा यही है के मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल फ़रमा और उन लोगों मे

دَعَانِیْ اِلَی الْجَنَّةِ جَزِیْلُ ثَوَابِكَ اِلٰهِیْ فَلَكَ اَسْئَلُ وَ اِلَیْكَ

क़रार दे जो हमेशाँ तेरा ज़िक्र करें। तेरे अहद को न तोड़ें। तेरे शुक्र से ग़ाफ़ल न हों और तेरे हुक्म

اَبْتَهِلُ وَ اَرْغَبُ وَاَسْئَلُكَ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ

को हलका न समझें। ख़ुदाया मुझे अपने रौशन तरीन नूरे इज़्ज़तो जलालत से मिला दे। ताके मै

اَنْ تَجْعَلَنِیْ مِمَّنْ یُّدِیْمُ ذِکْرَکَ وَلَا یَنْقُضُ عَهْدَکَ وَلَا یَغْفُلُ

तेरा आरिफ़ हो जाऊँ और तेरे ग़ैर से मुनहरिफ़ हो जाऊँ। सिर्फ़ तुझसे डरता रहूँ और लरज़ता रहूँ।

عَنْ شُکْرِکَ وَلَا یَسْتَخِفُّ بِاَمْرِکَ اِلٰهِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِنُوْرِ عِزِّکَ

ऐ साहेबे जलालो इक्राम ख़ुदा रहमत नाज़ल करे मुहम्मद रसूलि ल्लाह और उनकी आले ताय्यबीन

الْاَبْهَجِ فَاَکُوْنَ لَکَ عَارِفًا وَ عَنْ سِوَاکَ مُنْحَرِفًا وَّ مِنْکَ

पर। और बेशुमार सलाम उनपर। यह उन जलीलुल क़द्र मुनाजातों में से है जो अइम्म-ए-मासूमीन

خَآئِفًا مُّرَاقِبًا یَاذَا الْجَلَالِ وَ الْاِکْرَامِ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

(अ) से नक़्ल की गई हैं और बुलंद तरीन मज़ामीन पर मुश्तिमल हैं। अगर इंसान हुज़ूरे क़ल्ब के साथ

وَّ اٰلِهِ الطَّاهِرِیْنَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا.

मुनाजात करे तो इन्तेहाई बेहतर है।

शाबान के महीने के मख़सूस आमाल

शाबान की पहली शब

इक़्बाल में बहुत सी नमाज़ों का ज़िक्र किया गया है। जिनमें से एक बारह रकत नमाज़ है जिसमे हर रकत में सूरह हम्द एक बार और ग्यारह बार सूरह तौहीद है।

पहली शाबान

इस दिन के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है के इमाम सादिक़ (अ) से रिवायत है के जो व्यक्ति माहे शाबान की पहली तारीख़ को रोज़ा रखेगा बेहिश्त उसके

लिए लाज़म है।
सय्यद बिन ताऊस ने रसूले अक्रम (स) से बेशुमार सवाब नक़्ल किया है। माहे शाबान के शुरू के तीन रोज़ों के लिए और इसकी रातों में दो रकत नमाज़ के लिए जिसमें हर रकत में सूरह हम्द और ग्यारह बार सूरह तौहीद है।
तफ़सीरे इमाम अस्करी (अ) में माहे शाबान और उसके पहले दिन की फ़ज़ीलत के बारे में मुफ़स्सल रिवायत है। जिसका तरजुमा हमारे उस्ताद, सिक़तुल इसलाम नूरी ने कलमे तय्यबा के अंत में नक़्ल किया है। रिवायत बहुत तवील है। और यहाँ इसकी गुंजाईश नहीं है। लेकिन उसका ख़ुलासा यह है के अमीरूल मोमिनीन (अ) माहे शाबान की पहली तारीख़ को मस्जिद में कुछ लोगों के पास से गुज़रे जो कज़ा व कद्र के बारे में बात कर रहे थे और बुलंद आवाज़ से बहेस कर रहे थे। हज़रत ने सलाम किया। उन लोगों ने जवाब दिया और ताज़ीम के लिए खड़े हो गए और हज़रत को बैठने की दावत दी। आपने कोई तवज्जो नहीं फ़रमाई और फ़रमाया के अए वह लोगों जो एसी चीज़ में बहेस करते हो जिसका कोई फ़ाएदा नहीं है। क्या तुम्हें नहीं मालूक है के अल्लाह के एसे बंदे भी हैं जिन्हे ख़ाफ़े ख़ुदा ने ख़ामोश कर दिया है हालांके वह बोलने से आजिज़ नहीं हैं। बल्के वह अज़मते ख़ुदा का तसव्वुर करते हैं तो उनकी ज़बाने गूंगी हो जाती हैं। दिल बेचैन हो जाते हैं। अक़्लें मबहूत हो जाती हैं अज़मतो जलालो किब्रीयाईए ख़ुदा की वजेह से। उसके बाद जब वह होश में आते हैं तो ख़ुदा की ओर मुड़ के पाकीज़ा अमल अंजाम देते हैं। अपने नफ़्स को ख़ताकार समझते हैं हालांके वह ख़ताकार नहीं होते मगर वह ख़ुदा के लिए मुख्तसर आमाल पर राज़ी नहीं होते हैं। और अपने अमल को ज़्यादा नहीं समझते हैं। मुसलसल अमल करते रहते हैं। जब उनको देखोगे तो हालते इबादत में लरज़ा नज़र अएंगे। तुम लोग कहाँ हो के इन बातों में अपना समय बरबाद कर रहे हो? क्या तुम्हें नहीं मालूम के होशियार तरीन इंसान वही है जिसका बोलना कम और सबसे जाहिल वही है जो बेकार की बातें करता है। अय ताज़ा अमल करने वालों आज शाबान की पहली तारीख़ है। परवरदिगार ने इसका नाम शाबान इस लिए रखा है के इसमें नेकियां फैल जाती हैं और नेकियों के दरवाज़े खुल जाते हैं। लेहाज़ा तुम उन नेकियों को

हासिल करो और इबलीस भी अपने शर और बलाओं को फैला देता है। लेहाज़ा कोशिश करो के उसकी गुमराही में मुब्तेला न हो और एसा न हो के इबलीस के रास्तों से जुड़ जाओ। और नेकियों से महरूम रह जाओ। आज माहे शाबान की पहली तारीख़ है। इसके ख़ैर के शोबों में नमाज़, रोज़ा, ज़कात, अम्र बिल मारूफ़, नही अनिल मुनकार, वालेदैन, रिश्तेदारों और पडोसियों के साथ नेकी। उसकी इसलाह, ग़रीब और मिसकीनों का सदक़ा वग़ैरा शामिल है। देखो इन बातों मे बहेस न करो जिनकी तुमसे मांग नहीं की गई है। बल्के बहस करने से रोका गया है। के तुम राज़े ख़ुदा को नहीं समझ सकते हो। और कज़ा व कदर में ज़्यादा बहेस करोगे तो बरबाद हो जाओगे। अगर तुम्हें मालूम होता के परवरदिगार ने अपने इबादत गुज़ार बंदो के लिए आज के दिन क्या सवाब रखा है तो तुम यक़ीनन अपने को इन बहसों से दूर रखते। और बेहतरीन अमल शुरू कर देते जो ख़ुदा ने तुमसे चाहा है। लोगों ने पूछा ऐ अमीरूल मोमिनीन (अ) वह क्या है जो ख़ुदा ने चाहा है? और इबादत गुज़ारों के लिए मोहय्या किया है? तो हज़रत ने उस लश्कर का क़िस्सा बताया जिसको रसूले अक्रम (स) ने कुफ़्फ़ार से जेहाद करने को भेजा। और उस पर दुश्मनों ने रात के समय हमला कर दिया। रात भी एकदम अंधेरी थी। मुसलमान सो रहे थे सिवाए ज़ैद बिन हारेसा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, क़तादा बिन नोमान और क़ैस बिन आसिम मिन्क़री के। और यह वह व्यक्ति थे जो नमाज़ और तिलावते क़ुरान में मशग़ूल थे। दुश्मनों ने मुसलमानों पर तीर बरसाना शुरू कर दिए जबके मुसलमान दुश्मनों को अंधेरे में देख भी नहीं सकते छे। के अपने को बचा सकें। क़रीब था के लश्कर हलाक हो जाए के अचानक उन व्यक्तियों के चेहरे से एसा नूर निकला के मुसलमानों के लश्कर में रौश्नी फैल गई और उनमे ताक़त पैदा हो गई। तलवार खींच कर मैदन में आ गए और दुश्मनों को तहे तेग कर दिया और कैदी भी बना लिया। जब पलट के आए और रसूले अक्रम (स) से वाक्या बयान किया तो आपने फ़रमाया के यह नूर तुम्हारे उन भाईयों का नूर था जिन्होंने शाबान की पहली तारीख़ को अमल किया। उसके बाद हर एक ने अपने अमल का ज़िक्र किया यहाँ तक के फ़रमाया जब रोज़े अव्वले शाबान होता है तो इबलीस अपने लश्करों को ज़मीन में चारो ओर फैला

देता है। और कहता है के कोशिश करो के बंदगाने ख़ुदा को अपनी गिरफ्त में ले लो। और दूसरी तरफ़ परवरदिगार अपने मलाएका को ज़मीन और अतराफे ज़मीन में भेज देता है। और उन्हें हुक्म देता है के मेरे बंदो को बचाओ और उन्हें नेकियों की ओर रग़बत दो। जो लोग मान लेते हैं वही लोग नेकबख्त होते हैं और जो लोग सरकशी करते हैं वह इबलीस की फ़ौज में शामिल हो जाते हैं। ख़ुदावंदे आलम शाबान की पहली तारीख़ को हुक्म देता है के जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाएं और तूबा का पेड़ अपनी शाख़ों को लोगों पर फैला दे। और परवरदिगार का मुनादी आवाज़ देता है के ऐ बंदगाने ख़ुदा मैं तूबा के पेड़ की शा॰खें हूँ। लेहाज़ा उनसे वाबस्ता हो जाओ। ताके तुम्हें जन्नत तक पहुँचा दें। और देखो दूसरी तरफ़ ज़क़्क़ूम के पेड़ की शाख़े हैं। होशियार रहना के यह कहीं तुम्हें जहन्नम तक न पहुँचा दें। रसूले अक्रम (स) ने फ़रमाया के कसम उस ज़ात की जिसने मुझे रसूल बनाया के जो व्यक्ति उस दिन नेकी के दरवाज़े में दाख़ल हुआ गोया तूबा के पेड़ की शाख़ से वाबस्ता हो गया। जो उसे खींच कर बेहिश्त तक ले जाएगी। और जो व्यक्ति बुराई के किसी दरवाज़े में दाख़ल हो गया गोया ज़क़्क़ूम के पेड़ की शाख़ से जुड़ गया। और वह उसे जहन्नम की तरफ़ ले जाएगी। उसके बाद रसूले ख़ुदा (स) ने फ़रमाया के जिस व्यक्ति ने उस दिन खुदा के लिए कोई मुस्तहब्बी नमाज़ पढ़ी वह गोया उस पेड़ से जुड़ गया और जिस व्यक्ति ने उस रोज़ कोई रोज़ा रखा वो भी उस पेड़ से वाबस्ता हो गया। और जिस व्यक्ति ने पती पतनी के बीच सुलह कराई या बाप बेटे या अज़ीज़ों में या पड़ोस के मर्दो ज़न में या अजनबी मर्द व औरात में सुलह कराई वह भी उस पेड़ से जुड़ गया। और जिस व्यक्ति ने किसी की परेशानी में कमी कर दी वह भी उस पेड़ से जुड़ गया। और जिस व्यक्ति ने अपने हिसाब में गौर किया और देखा किसी पुराने कर्ज़ को जिसका तलबगार उससे मायूस हो चुका है और फिर उसे अदा कर दिया तो वह भी उस पेड़ से लिपट गया। उसे जिस व्यक्ति ने किसी यतीम की क़िफ़ालत की वह भी उस पेड से लिपट गया। और जिस व्यक्ति ने किसी नादान को मोमिन की आबरू से बाज़ रखा और जिस व्यक्ति ने क़ुरआन या उसके कुछ हिस्से को पढ़ लिया वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति ने अल्लाह को

याद किया या उसकी नेमतों को शुमार करके शुक्र किया वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति ने किसी मरीज़ की अयादत की वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति ने माता पिता या उनमें से किसी एक के साथ नेकी की वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति ने किसी को ग़ज़बनाक किया हो और आज उसको राज़ी करले वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जो जनाज़े की तशी करे वह भी उस पेड़ से लटक गया। और जो किसी मुसीबत ज़दा को तसल्ली दे वह भी इस पेड़ से लटक गया। और जो आज के दिन किसी कारे ख़ैर को अंजाम दे वह भी उस पेड से लटक गया। उसके बाद पैगंबरे इसलाम ने फ़रमाया के क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझको हक़ के साथ मबऊस किया है के जिस व्यक्ति ने शर या किसी गुनाह को आज के दिन किया वह ज़क़्क़ूम पेड़ की किसी न किसी शाख़ से लटक गया। और वह उसे जहन्नम की ओर ले जानेवाली है।

क़सम है उस ज़ात की जिसने हक़ के साथ मुझको पैग़ंबर बनाया है जिस व्यक्ति ने इस दिन अपनी वाजिब नमाज़ में कोताही की और उसको ज़ाया कर दिया वह ज़क़्क़ूम के पेड की शाख़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति के पास कोई कमज़ोर फ़क़ीर आया और उसने उसकी हालत को जानते हुए और देखते हुए के वह उसकी हालत के बदलने पर बग़ैर किसी ज़ाती नुक़सान के क़ादिर है और दूसरा कोई यह काम करनेवाला नहीं है, उसको छोड दे और उसका हाथ न थामे तो वह भी ज़क़्क़ूम के पेड़ की शाख़ से लटक गया। और जिस व्यक्ति से कोई ग़लतकार इंसान कोई उज़्र करे और यह उसको उसकी बुराई से ज़्यादा सज़ा दे दे। और उसके उज़्र को क़ुबूल न करे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति पती पतनी के बीच या बाप और औलाद के बीच या रिश्तेदारों के बीच या पड़ोसियों के बीच या दोस्तों के बीच या दो बहनों के बीच जुदाई डाल दे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति किसी तंगदस्त पर उसकी हालत को जानते हुए सख़ती करे और उसके मसाएब में इज़ाफा करे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जिस व्यक्ति पर क़र्ज़ा हो और वह इसका इन्कार कर के ज़्यादती करे और कोशिश करे के कर्ज़ को बातिल करदे वह भी ज़क़्क़ूम के पेड़ से लटक गया। और जो

व्यक्ति किसी यतीम पर ज़ुल्म करेगा तकलीफ़ दे या उसके माल को बरबाद कर दे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति किसी मोमिन की इज़्ज़त को बरबाद करे और लोगों को उस पर आमादा करे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति इस प्रकार गाना गाए के उसके गाने से लोग गुनाहों पर आमादा हों वह भी शाख़ से लटक गया। और जो व्यक्ति बैठकर जंगों में अपने बुरे सुलूक को शुमार करे और बंदो पर अपने ज़ुल्मो सितम को याद कर के फ़ःख्र करे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जिसका पड़ोसी बीमार हो और वह उसे मामूली समझते हुए अयादत न करे वह भी शाखे ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जिसका पड़ोसी मर गया और उसने नमाज़े जनाज़ा की मशायत न की उसको ज़लील समझते हुए वह भी शाखे ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति मुसीबत ज़दा को ज़लील कहते हुए उससे मूंह फेर ले और उसपर ज़ुल्म करे वह भी ज़क़्क़ूम के पेड़ से लटक गया। जो व्यक्ति माता पिता या उनमें से किसी एक का आक़ हो गया वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। और जो व्यक्ति माँ बाप का आक़ रहा हो और उन्हें क़ादिर होने के बावजूद ख़ुश न करे वह भी शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया। इसी प्रकार कोई व्यक्ति भी अगर कोई बुराई करे तो वह शाख़े ज़क़्क़ूम से लटक गया।

क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझको हक़ के साथ भेजा है के तूबा के पेड की शाखों से लटक जाने वाले जन्नत की ओर बुलंद होते हैं।

यह कहकर आपने अपनी निगाह आसमान की जानिब की और कुछ मुसकुराए और फिर निगाह ज़मीन पर डाली और पेशानी पर आसारे नाराज़गी नुमाया हो गए और असहाब को देख कर फ़रमाया: क़सम है उस ज़ात की जिसने मोहम्मद को हक़ के साथ भेजा है के मैंने तूबा के पेड को बुलंद होते हुए देखा है और उन लोगों को जन्नत की ओर बुलंद करते देखा है जो उसकी एक शाख़ या कई शाखों से अपनी इताअत के लेहाज़ से लिपटे हुए थे। चुनानचे जब मैंने ज़ैद बिन हारिसा को उसकी कई शाख़ों से लिपटा हुआ देखा के वह शाखें उसे जन्नत के आला इल्लीईन की ओर ले जा रही हैं तो हंस पड़ा और ख़ुश हो गया और फिर मैंने ज़मीन की ओर निगाह की तो क़सम है उस ज़ात

की जिसने मुझको हक के साथ भेजा है के मैंने ज़क़्क़ूम के पेड़ को देखा के उसकी शाखें नीचे की ओर जा रही है और उन लोगों को भी देखा जो उसकी एक शाख या कई शाखों से अपनी नाफ़रमानी के कारण चिमटे हुए थे और वह उन्हें जहन्नम की ओर ले जा रही थी। और मैंने देखा के कुछ लोग एक शाख़ या कई शाख़ों से अपनी नाफ़रमानी के कारण चिमटे हुए थे और वह उन्हें जहन्नम की ओर ले जा रही थी। और मैंने देखा के कुछ लोग एक शाख़ से और कुछ लोग दो शाख़ों या चंद शाख़ों से लिपटे हैं और मैंने बाज़ मुनाफ़िक़ों को देखा के ज़्यादा शाख़ों से लटके हुए हैं। और वह उन्हें जहन्नम के अंतिम तबक़े की ओर ले जा रही हैं। इस वजह से मैं उदास हो गया और मेरा चेहरा उदास हो गया और पेशानी पर शिकन आ गई।

तीसरी शाबान

इन्तेहाई मुबारक दिन है। शेख़ ने मिसबाह में फ़रमाया के इस दिन इमाम हुसैन बिन अली (अ) की विलादत हुई और क़ासिम बिन अली हमदानी वकीले इमाम हसन असकरी (अ) की तरफ़ तौक़ी शरीफ़ आई है के जुमेरात के दिन तीसरी शाबान इमामे हुसैन (अ) की विलादत हुई है। लेहाज़ा इस तारीख़ को रोज़ा रखो और इस दुआ को पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِحَقِّ الۡمَوۡلُوۡدِ فِیۡ هٰذَا الۡیَوۡمِ الۡمَوۡعُوۡدِ

ख़ुदाया मै सवाल करता हूँ उसके वास्ते से जो आज की तारीख़ मे पैदा हुआ है और जिसकी

بِشَهَادَتِهٖ قَبۡلَ اسۡتِهۡلَالِهٖ وَ وِلَادَتِهٖ بَكَتۡهُ السَّمَآءُ وَ مَنۡ

विलादत से पहले उसकी शहादत का वादा लिया है। उसपर आसमान और अहले आसमान।

فِیۡهَا وَ الۡاَرۡضُ وَمَنۡ عَلَیۡهَا وَلَمَّا یَطَاۡ لَاَبَتَیۡهَا قَتِیۡلِ الۡعَبۡرَةِ

ज़मीन और अहले ज़मीन रोए हैं। हालांके अभी उसने ज़मीन पर पैर भी नही रखे थे। वो कुश्ते

وَ سَيِّدِ الْاُسْرَةِ الْمَمْدُوْدِ بِالنُّصْرَةِ يَوْمَ الْكَرَّةِ الْمُعَرَّضِ

गिरया है और सारे ख़ानदान का सरदार है। और रजत मे उसकी नुसरत का वादा किया गया है।

مِنْ قَتْلِهٖ اَنَّ الْاَئِمَّةَ مِنْ نَسْلِهٖ وَ الشِّفَآءَ فِيْ تُرْبَتِهٖ وَ الْفَوْزَ

और उसकी शहादत का इनाम ये है के इमामत उसकी नस्ल मे होगी। और उसकी ख़ाक मे शिफ़ा

مَعَهٗ فِيْ اَوْبَتِهٖ وَ الْاَوْصِيَآءَ مِنْ عِتْرَتِهٖ بَعْدَ قَآئِمِهِمْ وَ غَيْبَتِهٖ

होगी। और उसके साथ वापसी मे कामयाबी होगी। और औसिया उसकी इतरत मे होंगे। हज़रते

حَتّٰى يُدْرِكُوْا الْاَوْتَارَ وَ يَثْاَرُوا الثَّارَ وَ يُرْضُوا الْجَبَّارَ وَ

क़ायम व उनकी ग़ैबत के बाद। यहाँ तक के उसके ख़ून का बदला लेंगे। और ख़ुदा को राज़ी कर

يَكُوْنُوْا خَيْرَ اَنْصَارٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مَعَ اخْتِلَافِ اللَّيْلِ

लें व उसके बेहतरीन अन्सार मे शुमार हों। अल्लाह की रहमत उनकी शामिले हाल रहे। रोज़ व

وَ النَّهَارِ اَللّٰهُمَّ فَبِحَقِّهِمْ اِلَيْكَ اَتَوَسَّلُ وَاَسْئَلُ سُؤَالَ

शब की आमदो रफ़्त के साथ। ख़ुदाया मै उनही के हक़ को वसीला क़रार देता हूँ। और तुझसे

مُقْتَرِفٍ مُعْتَرِفٍ مُسِيْٓءٍ اِلٰى نَفْسِهٖ مِمَّا فَرَّطَ فِيْ يَوْمِهٖ وَ اَمْسِهٖ

उस गुनेहगार की तरह विन्ती करता हूँ जिसने अपने आप पर ज़्यादती की है। उस कोताही की

يَسْئَلُكَ الْعِصْمَةَ اِلٰى مَحَلِّ رَمْسِهٖ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ

बिना पर जो कल भी हुई है व आज भी है। अब ज़िन्दगी भर के लिए तेरी हिफ़ाज़त का तलबगार

عِتْرَتِهٖ وَاحْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ وَبَوِّئْنَا مَعَهٗ دَارَ الْكَرَامَةِ وَمَحَلَّ

है। ख़ुदाया मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़ल कर और हमे उनके जुम्रे मे महशूर कर।

الْاِقَامَةِ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا اَكْرَمْتَنَا بِمَعْرِفَتِهٖ فَاَكْرِمْنَا بِزُلْفَتِهٖ

और उनके साथ दारूल करामत और महले इक़ामत मे जगह देदे। ख़ुदाया जिस तरह तूने उनकी

وَارْزُقْنَا مُرَافَقَتَهٗ وَسَابِقَتَهٗ وَاجْعَلْنَا مِمَّنْ يُّسَلِّمُ لِاَمْرِهٖ وَ

मारेफ़त का शरफ़ इनायत किया है। और उनकी क़ुर्बत भी इनायत करदे। और उनकी साथ

يُكْثِرُ الصَّلٰوةَ عَلَيْهِ عِنْدَ ذِكْرِهٖ وَعَلٰى جَمِيْعِ اَوْصِيَآئِهٖ وَاَهْلِ

इनायत कर। हमे उन लोगों मे क़रार दे। जो उनके हुक्म के माननेवाले हों। और उनके ज़िक्र

اَصْفِيَآئِهِ الْمَمْدُوْدِيْنَ مِنْكَ بِالْعَدَدِ الْاِثْنٰى عَشَرَ النُّجُوْمِ

पर मुसलसल सलवात पढ़ते हों। उन पर और उनके तमाम औसिया और चुनिंदा व्यक्तियों पर

الزُّهَرِ وَ الْحُجَجِ عَلٰى جَمِيْعِ الْبَشَرِ اَللّٰهُمَّ وَهَبْ لَنَا فِيْ هٰذَا

जिनकी तेरी ओर से मदद की गई है। जो बारह व्यक्ति हैं। चमकते हुए सितारों की तरह। और

الْيَوْمِ خَيْرَ مَوْهِبَةٍ وَاَنْجِحْ لَنَا فِيْهِ كُلَّ طَلَبَةٍ كَمَا وَهَبْتَ

तमाम बंदों पर अल्लाह की हुज्जत। ख़ुदाया आज के दिन हमे बेहतरीन अतिया दे। और हमारी सब

الْحُسَيْنَ لِمُحَمَّدٍ جَدِّهٖ وَعَادَ فُطْرُسَ بِمَهْدِهٖ فَنَحْنُ عَآئِذُوْنَ

माँगों को पूरा करदे। जिस तरह तूने मुहम्मद को हुसैन अता किया है। और जिस प्रकार हुसैन के

بِقَبْرِهٖ مِنْهُمْ بَعْدِهٖ نَشْهَدُ تُرْبَتَهٗ وَ تَنْتَظِرُ اَوْبَتَهٗ اٰمِيْنَ رَبَّ

झूले के तुफ़ैल मे फ़ित्रूस को पनाह दी है। हम उनकी क़बर की पनाह मे उनकी तुरबत पर हाज़री

الْعَالَمِيْنَ.

देते हैं। और उनकी रजत का इंतेज़ार कर रहे हैं। आमिन ऐ रब्बल आलमीन।

उसके बाद दुआ इमामे हुसैन (अ) पढ़े जिसको हज़रत ने रोज़े आशूरा नरग़ए आदा में घिर जाने के बाद पढ़ा था।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ مُتَعَالِي الْمَكَانِ عَظِيْمُ الْجَبَرُوْتِ شَدِيْدُ الْمِحَالِ

ख़ुदाया तेरी मंजिल बुलंद, तेरी क़ुद्रत अज़ीम, तू मख़लूक़ात से बेनियाज़, तेरी किब्रियाई वसी, तू

غَنِيٌّ عَنِ الْخَلَائِقِ عَرِيضُ الْكِبْرِيَاءِ قَادِرٌ عَلٰى مَا تَشَاءُ قَرِيبُ

हर शै पर क़ादिर, तेरी रहमत क़रीब, तेरा वादा सच्चा, तेरी नेमत कामिल और तेरा इनाम हसीन है।

الرَّحْمَةِ صَادِقُ الْوَعْدِ سَابِغُ النِّعْمَةِ حَسَنُ الْبَلَاءِ قَرِيبٌ اِذَا

तुझे पुकारा जाता है तो तू क़रीब है। मख़लूक़ात पर मोहीत है। तौबा करनेवालों की तौबा क़ुबूल

دُعِيتَ مُحِيطٌ بِمَا خَلَقْتَ قَابِلُ التَّوْبَةِ لِمَنْ تَابَ اِلَيْكَ قَادِرٌ

करता है। जो चाहे वो कर सकता है। जिसे चाहे पकड़ सकता है। शुक्रिया अदा किया जाए तो

عَلٰى مَا اَرَدْتَ وَمُدْرِكٌ مَا طَلَبْتَ وَشَكُورٌ اِذَا شُكِرْتَ وَذَكُورٌ

क़ुबूल करता है। याद किया जाए तो याद करता है। ख़ुदाया मै तुझसे ब हालते एहतियाज दुआ

اِذَا ذُكِرْتَ اَدْعُوكَ مُحْتَاجًا وَاَرْغَبُ اِلَيْكَ فَقِيرًا وَاَفْزَعُ اِلَيْكَ

करता हूँ। और फ़क़ीर बनकर तेरी बारगाह मे आया हूँ। ख़ाफ़ज़दा होकर तेरी तरफ मुतावज्ञे हूँ।

خَائِفًا وَاَبْكِي اِلَيْكَ مَكْرُوبًا وَاَسْتَعِينُ بِكَ ضَعِيفًا وَاَتَوَكَّلُ

दर्दो रंज से रो रहा हूँ। कमज़ोरी मे तेरी मदद चाहता हूँ। और किफ़ायत के लिए तुझही पर भरोसा

عَلَيْكَ كَافِيًا اُحْكُمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ فَاِنَّهُمْ غَرُّونَا

करता हूँ। मेरे और इस क़ौम के बीच फ़ैसला करदे। उनहोंने मुझे धोका दिया है। फ़रेब से काम

وَخَدَعُونَا وَخَذَلُونَا وَغَدَرُوا بِنَا وَقَتَلُونَا وَنَحْنُ عِتْرَةُ نَبِيِّكَ وَوَلَدُ

लिया है। मुझे छोड़ दिया है। मेरे साथ ग़द्दारी की और मुझे क़त्ल कर रहे हैं। हालाँके हम तेरे नबी

حَبِيبِكَ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الَّذِي اصْطَفَيْتَهُ بِالرِّسَالَةِ وَائْتَمَنْتَهُ

की इत्रत हैं। और तेरे हबीब हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के फ़रजंद हैं जिनको तूने रिसालत

عَلٰى وَحْيِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا فَرَجًا وَمَخْرَجًا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

के लिए मुंताख़िब किया। और वही का अमीन बनाया। ख़ुदाया अब तूही हमे कशायशो वुसअत

الرَّاحِمِينَ

इनायत कर अपनी रहमते ख़ास से। ऐ रहेम करनेवलों मे सबसे ज़्यादा रहेम करनेवाले।

इमाम सादिक़ (अ) ने इस दुआ को तीसरी माहे शाबान की दुआओं में शुमार किया है।

तेरहवीं रात

रौशन रातों में पहली रात है। उसकी नमाज़ की तरकीब माहे रजब के आमाल में गुज़र चुकी है (13,14,15 शबें)

पंद्रहवीं शाबान

इन्तेहाई मुबारक रात है। इसके बारे में इमामे सादिक़ (अ) से रिवायत है के इमाम बाक़िर (अ) से इस रात के फ़ज़ाएल के बारे में पूछा गया तो आप (अ) ने फ़रमाया के यह रात शबे क़द्र के बाद तमाम रातों से अफ़ज़ल है। परवरदिगार इस रात में अपना फ़ज़्लो करम इनायत करता है और बंदों को अपने करम से माफ़ कर देता है। कोशिश करो के इस रात में ख़ुदा का तक़र्रूब हासिल करो। यह वह रात है जिसके बारे में परवरदिगार ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है के अपने साईलों को अपनी बारगाह से ख़ाली हाथ वापस नहीं करेगा जब तक के किसी मासियत का सवाल न करें। यह वह रात है जिसे परवरदिगारे आलम ने हमारे लिए इसी प्रकार क़रार दिया है जैसे शबे क़द्र को पैग़म्बर के लिए। लेहाज़ा इस रात में दुआ व सनाए परवरदिगार की कोशिश करो।

इस रात की बरकातों में अिज़म तरीन बरकत यह है के इस रात में सुलताने अस्र हज़रत इमामे ज़माना (अ) की विलादत ब सआदत 255 हिज्र में हुई है। इस रात में चंद आमाल यह हैं:

एक: ग़ुस्ल। जो गुनाहों को माफ़ कराता है।

दो: नमाज़, दुआ और इस्तेग़फ़ार के साथ शब्बेदारी जैसा के इमामे सज्जाद (अ) करते थे। और रिवायत में है के इस रात में शब्बेदारी करनेवाले का दिल क़यामत के दिन मुर्दा नहीं हो सकता है।

तीन: ज़ियारते इमाम हुसैन (अ) जो इस रात के बेहतरीन आमाल में है और गुनाहों की बख़शिश का ज़रिया है। जो व्यक्ति चाहता है के एक लाख चौबीस हज़ार पैगंबरों से मुसाफ़ेहा करे उसे चाहिए के इस रात इमाम हुसैन (अ) की ज़ियारत करे। और कम से कम ज़ियारत यह है के छत पर जा कर दाहिने बाएं देखकर, सर आसमान की ओर बुलंद करे और कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

सलाम हो आप पर ऐ अबा अब्दुल्लाह। सलाम हो आप पर व अल्लाह की रहमत और बरकत।

जो व्यक्ति जहाँ भी चाहे है इसी प्रकार से हज़रत की ज़ियारत कर सकता है और उम्मीद है के उसे हज उमरे का सवाब दिया जाएगा। हम ज़ियारत के भाग में इस रात की मख़सूस ज़ियारत का भी ज़िक्र करेंगे।
चार: यह दुआ पढ़े जिसको शेख़ तूसी और सय्यद बिन ताऊस ने नक़्ल किया है और जो इमामे अस्र (अ.त.फ.श.) की ज़ियारत के बराबर है।

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ لَيْلَتِنَا هٰذِهٖ وَ مَوْلُوْدِهَا وَ حُجَّتِكَ وَمَوْعُوْدِهَا

ख़ुदाया आज की रात और उसके मौलूद के हक का वास्ता। तेरी हुज्जत और इस रात के मऊद का

اَلَّتِیْ قَرَنْتَ اِلٰی فَضْلِهَا فَضْلاً فَتَمَّتْ كَلِمَتُكَ صِدْقًا

वास्ता जिसकी फ़ज़ीलतों मे तूने मुसलसल इज़ाफ़ा किया है। यहाँ तक के तेरा कलमा सदाक़त

وَ عَدْلاً لاَ مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِكَ وَلاَ مُعَقِّبَ لِاٰيَاتِكَ نُوْرُكَ

व अदालत के साथ मुकम्मल हो गया। और अब तेरे कलमे को कोई बदल नही सकता। और

اَلْمُتَاَلِّقُ وَ ضِيَآؤُكَ الْمُشْرِقُ وَ الْعَلَمُ النُّوْرُ فِیْ طَخْيَآءِ

कोई तेरी आयात की ताक़ीब नही कर सकता है। तेरा नूर रोज़े रौशन तेरी जिया दरख़शंदा तेरा

اَلدَّيْجُوْرِ الْغَآئِبُ الْمَسْتُوْرُ جَلَّ مَوْلِدُهٗ وَ كَرُمَ مَحْتِدُهٗ

परचम अंधेरी रातों मे रौश्नी देने वाला। निगाहों से ग़ाएब और पसे परदा है। जिसकी विलादत

وَ الْمَلٰٓئِكَةُ شُهَّدُهٗ وَ اللّٰهُ نَاصِرُهٗ وَ مُؤَيِّدُهٗ اِذَا اٰنَ مِيْعَادُهٗ

जलील और जिसकी असल अज़ीम है। मलाएका उसके गवाह। अल्लाह उसका मददगार और

وَ الْمَلَآئِكَهُ اَمْدَادُهٗ سَيْفُ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا يَنْبُوْ وَ نُوْرُهٗ

ताईद करनेवाला है। जब उसका मोअय्यन समय आ जाए। और मलाएका उसके मददगार हों।

الَّذِیْ لَا يَخْبُوْ وَ ذُوالْحِلْمِ الَّذِیْ لَا يَصْبُوْ مَدَارُ الدَّهْرِ وَ

वो अल्लाह की वो तलवार है जो चूकती नही। वो नूर है जो बुझनेवाला नही है। वो होशवाला है जो

نَوَامِيْسُ الْعَصْرِ وَ وُلَاةُ الْاَمْرِ وَ الْمُنَزَّلُ عَلَيْهِمْ مَا يَتَنَزَّلُ

बहकने वाला नही है। ज़माने का दारो मदार हर दौर के नामूस का जिम्मेदार। वली ए अम्र जिसपर

فِیْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَ اَصْحَابُ الْحَشْرِ وَ النَّشْرِ تَرَاجِمَةَ وَحْيِهٖ وَ

शबे क़द्र मे नाज़ल होते हैं। साहेबाने हश्र न नश्र। वही के तरजुमान। अम्रो नही के ज़िम्मेदार हैं।

وُلَاةُ اَمْرِهٖ وَ نَهْيِهٖ اَللّٰهُمَّ فَصَلِّ عَلٰی خَاتِمِهِمْ وَ قَآئِمِهِمُ

ख़ुदाया अपने इन बंदों के ख़ातम और क़ायम पर रहमत नाज़िल कर जिसको आलमीन की

الْمَسْتُوْرِ عَنْ عَوَالِمِهِمْ وَ اَدْرِكْ بِنَا اَيَّامَهٗ وَ ظُهُوْرَهٗ وَ

निगाहों से छुपा के रखा है। मालिक हमे उनके ज़हूर के दौरान और उनके क़याम तक बाक़ी

قِيَامَهٗ وَاجْعَلْنَا مِنْ اَنْصَارِهٖ وَاقْرِنْ ثَارَنَا بِثَارِهٖ وَا كْتُبْنَا

रखना। और उनके अन्सार के क़रार देना। हमारे बदला लेने को उनके बदला लेने से मिला देना।

فِیْ اَعْوَانِہٖ وَ اَحْیِنَا فِیْ دَوْلَتِہٖ نَاعِمِیْنَ وَ بِصُحْبَتِہٖ غَانِمِیْنَ

और हमे उनके मददगारों और मुख़लिसीन मे लिख लेना। और उनकी हुकूमत मे सुकून के साथ

وَ بِحَقِّہٖ قَآئِمِیْنَ وَ مِنَ السُّوْءِ سَالِمِیْنَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ وَ

ज़िंदा रखना ताके उनकी सोहबत का शरफ़ हासिल कर सकें। और उनके हक को अदा कर

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَ صَلَوَاتُہٗ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتَمِ

सकें। और हर बुराई से महफ़ूज़ रह सकें। या अरहमर राहे मीन। हम्द उस अल्लाह के लिए जो

النَّبِیِّیْنَ وَ الْمُرْسَلِیْنَ وَ عَلٰی اَھْلِ بَیْتِہِ الصَّادِقِیْنَ وَ

रब्बुल आलमीन है। सलवात हमारे आक़ा मुहम्मद ख़ातिमुन नबीईन व मुरसलीन और उनके

عِتْرَتِہِ النَّاطِقِیْنَ وَالْعَنْ جَمِیْعَ الظّٰالِمِیْنَ وَاحْکُمْ بَیْنَنَا

अहलेबैते सादिक़ीन पर और उनकी इतरते नातिक़ीन पर। और लानत हो तमाम ज़ालिमीन पर।

وَ بَیْنَھُمْ یَا اَحْکَمَ الْحَاکِمِیْنَ.

ख़ुदाया हमारे और उन ज़ालिमों के बीच तू ही फ़ैसला करना के तू बेहतरीन फ़ैसला करनेवाला है।

पाँच: शेख़ तूसी ने इस्माईल बिन फ़ज़्ल हाशमी से रिवायत की है के इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) ने शबे नीमे शाबान के लिए मुझे यह दुआ तालीम की है:

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ الْخَالِقُ الرَّازِقُ

ख़ुदाया तू हई, क़य्यूम, अली, अज़ीम, ख़ालिक, राज़िक, ज़िंदगी बख़्श, मौत देने वाले, ईजाद

الْمُحْيِي الْمُمِيتُ الْبَدِيءُ الْبَدِيعُ لَكَ الْجَلَالُ وَلَكَ الْفَضْلُ

करनेवाला, साहेबे जलाल, साहेबे फ़ज़्ल, साहेबे हम्द, साहेबे एहसान जूद व करम, साहेबे अम्र,

وَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الْمَنُّ وَلَكَ الْجُودُ وَلَكَ الْكَرَمُ وَلَكَ الْأَمْرُ

साहेबे बुज़ुर्गा है। और तेरे लिए ही शुक्र है। तेरा कोई शरीक नही है। ऐ ख़ुदा ए वाहिद व अहद।

وَلَكَ الْمَجْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ يَا وَاحِدُ يَا

बेनियाज़ जिसका कोई बाप है न बेटा, न कोई कफ़ू न हमसर। मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत

اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ

नाज़ल फ़रमा। मुझे माफ करदे। मुझपर मेहेरबानी कर। मेरे मोहिम्मात मे काफ़ी होजा। मेरे क़र्ज़

صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَاغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاكْفِنِي مَا اَهَمَّنِي

को अदा करदे। मेरे रिज़्क़ मे वुसअत इनायत कर। इसलिए के तू आजकी रात तमाम मोहकम

وَاقْضِ دَيْنِي وَوَسِّعْ عَلَيَّ فِي رِزْقِي فَاِنَّكَ فِي هٰذِهِ اللَّيْلَةِ كُلَّ اَمْرٍ

उमूर का फ़ैसला करता है। और जिसको चाहता उसको अता कर देता है। मुझे भी अता करदे।

حَكِيمٍ تَفْرُقُ وَمَنْ تَشَاءُ مِنْ خَلْقِكَ تَرْزُقُ فَارْزُقْنِي وَاَنْتَ

इस लिए के तू बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। तूने ख़ुद कहा है। और तू बेहतरीन कहनेवाला है के

خَيْرُ الرَّازِقِينَ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَاَنْتَ خَيْرُ الْقَائِلِينَ النَّاطِقِينَ:

मेरे फ़ज़्ल का सवाल करो। अब मै तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ। मैने तेरा इरादा किया है। और

﴿وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ﴾ فَمِنْ فَضْلِكَ أَسْأَلُ وَإِيَّاكَ قَصَدْتُ

तेरे फ़रज़ंदे रसूल पर एतेमाद किया है। अब तुझसे उम्मीदवार हूँ के मझपर रहमत नाज़ल कर।

وَابْنَ نَبِيِّكَ اعْتَمَدْتُ وَلَكَ رَجَوْتُ فَارْحَمْنِي يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

ऐ रहेम करने वलों मे सबसे ज़्यादा रहेम करने वाले।

छे: इस रात में उस दुआ को पढ़े जो रसूले अक्रम (स) से नक़्ल की गई है।

اَللّٰهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا يَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ

ख़ुदाया हमे अपने ख़ाफ़ से वो हिस्सा अता कर जो हमारे और मासियत के आड़े आए। और

مَعْصِيَتِكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ رِضْوَانَكَ وَمِنَ

अपनी इताअत का वो हिस्सा अता कर जो तेरी रज़ा तक पहुचा दे और अपने यक़ीन मे से वो

الْيَقِينِ مَا يَهُونُ عَلَيْنَا بِهِ مُصِيبَاتُ الدُّنْيَا اَللّٰهُمَّ اَمْتِعْنَا

हिस्सा अता कर जो दुनिया की मुसीबतों को आसान करदे। ख़ुदाया हमे हमारी समाअत, बसारत

بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ

न क़ुव्वत से बहरावर रखना। जब तक ज़िंदा रखना। और फ़िर उसको हमारी विरासत क़रार दे

مِنَّا وَاجْعَلْ ثَارَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا وَلَا

देना। हमारा बदला उन लोगों से लेना जिनहों ने हमपर ज़ुल्म किया व हमारे दुश्मनों के मुक़ाबिल

تَجْعَلُ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا

मे हमारी मदद करना। हमारे दीन मे कोई मुसीबत न आने पाए और दुनिया हमारी आख़री आरज़ू

مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَا يَرْحَمُنَا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

न बन्ने पाए और हमारे इल्म की इन्तिहा न क़रार पाए। हमपर किसी ऐसे व्यकति को मुसल्लत न

الرَّاحِمِيْنَ

कर देना जो मेहेरबानी न जानता हो। अपने रहमो करम से ऐ बेहतरीन रहम करनेवाले।

यह दुआ इन्तेहाई जामे और कामिल है। उसके दूसरे वक्तों में भी पढ़ा जा सकता है। अवालीउल ल्याली से नक़्ल किया है के रसूले अक्रम (स) इस दूआ को हंमेशा पढ़ा करते थे।

सात: हर रोज़ की सलवात जो ज़वाल के समय पढ़ी जाती है उसे भी पढ़े।

आठ: दुआए कुमैल पढ़े के इसका वुरूद भी इसी शब में हुआ है।

नौ: सौ बार ये कहे ताके परवरदिगार उसके गुनाहों को माफ़ कर दे और उसकी हाजतों को पूरा कर दे:

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

अल्लाह तआला पाक है। व तारीफ़ ख़ुदा के लिए है व ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नही व खुदा सबसे बड़ा है।

दस: शेख़ ने मिसबाह में अबू य¿ा से फ़ज़ीलते नीमए शाबान के ज़ैल में नक़्ल किया है के मैंने इमामे सादिक़ (अ) से अर्ज़ किया के इस शब में बेहतरीन दुआ क्या है? फ़रमाया के नमाज़े इशा के बाद दो रकत नमाज़ पढ़े। पहली रकत में सूरह हम्द और सूरह काफ़ेरून और दूसरी रकत में सूरह हम्द और सूरह तौहीद। सलाम के बाद तैंतीस बार: सुबहान अल्लाह; तैंतीस बार: अल हमदो लिल्लाह; चौंतीस बार अल्लाहो अकबर। फिर ये दुआ पढ़े:

يَا مَنْ اِلَيْهِ مَلْجَأُ الْعِبَادِ فِي الْمُهِمَّاتِ وَ اِلَيْهِ يَفْزَعُ الْخَلْقُ فِي

ऐ वो जात जिसकी तरफ़ कठिनाईयों मे बंदों की पनाह है। और जिसकी तरफ़ मख़लूक़ात मसाएब

الْمُلِمَّاتِ يَا عَالِمَ الْجَهْرِ وَ الْخَفِيَّاتِ وَ يَا مَنْ لاَ تَخْفٰى عَلَيْهِ خَوَاطِرُ

मे फ़रयाद करती हैं। ऐ ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले। ऐ वो जिसपर दिलों के ख़यालात और

الْاَوْهَامِ وَ تَصَرُّفُ الْخَطَرَاتِ يَا رَبَّ الْخَلاَئِقِ وَ الْبَرِيَّاتِ يَا مَنْ بِيَدِهِ

ख़यालों के तसर्रुफ़ात छुपे नही हैं। ऐ तमाम मख़लूक़ात के पर्वर्दिगार। ऐ वो जिसके हाथों मे ज़मीनो

مَلَكُوْتُ الْاَرَضِيْنَ وَ السَّمٰوَاتِ اَنْتَ اللهُ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ اَمُتُّ

आसमान की कुल हुकूमत है। तू वो ख़ुदा है जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। मै तुझ से ला

اِلَيْكَ بِلاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ فَيَا لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اَنْتَ اجْعَلْنِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ

इलाहा इल्ललाह द्वारा पनाह चाता हूँ। ऐ वो ख़ुदा जिसके अलावा कोई ख़ुदा नही है। मुझे आज की

مِمَّنْ نَظَرْتَ اِلَيْهِ فَرَحِمْتَهٗ وَ سَمِعْتَ دُعَآئَهٗ فَاَجَبْتَهٗ وَ عَلِمْتَ

रात उन लोगों मे क़रार देदे जिनपर तूने निगाहे रहमत की है। और जिनकी दुआओं को सुनकर

اسْتِقَالَتَهٗ فَاَقَلْتَهٗ وَ تَجَاوَزْتَ عَنْ سَالِفِ خَطِيْئَتِهٖ وَ عَظِيْمِ

क़ुबूल किया है। जिनकी ग़लतियों को माफ़ किया है। जिनकी ख़ताओं और गुनाहों को टाल दिया

جَرِيْرَتِهٖ فَقَدِ اسْتَجَرْتُ بِكَ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَ لَجَاْتُ اِلَيْكَ فِيْ سَتْرِ عُيُوْبِيْ

है। मै भी अपने गुनाहों मे तेरी पनाह चाहता हूँ। और अपने उयूब की परदापोशी मे तेरी तरफ़

اَللّٰهُمَّ فَجُدْ عَلَيَّ بِكَرَمِكَ وَ فَضْلِكَ وَاحْطُطْ خَطَايَايَ بِحِلْمِكَ

मुलतजी हूँ। ख़ुदाया अपने फ़ज़्ल व करम से मेरे ऊपर एसान कर। और अपने हिल्म व अफ़ू से

وَ عَفْوِكَ وَ تَغَمَّدْنِيْ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ بِسَابِغِ كَرَامَتِكَ وَاجْعَلْنِيْ

मेरी ख़ता को माफ़ करदे। आजकी रात मुझे अपनी मुकम्मल करामत मे ढ़ाँप ले और उन बंदों मे

فِيْهَا مِنْ اَوْلِيَآئِكَ الَّذِيْنَ اجْتَبَيْتَهُمْ لِطَاعَتِكَ وَاخْتَرْتَهُمْ

क़रार देदे जिनको तूने इताअत के लिए चुन लिया है और इबादत के लिए चुन लिया है। और अपने

لِعِبَادَتِكَ وَجَعَلْتَهُمْ خَالِصَتَكَ وَ صَفْوَتَكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِمَّنْ

सच्चे बंदों मे क़रार दिया है। ख़ुदाया मुझे उनमे क़रार देदे जो नेकबख्त हों। और जिन का हिस्सा

سَعَدَ جَدُّهٗ وَ تَوَفَّرَ مِنَ الْخَيْرَاتِ حَظُّهٗ وَاجْعَلْنِيْ مِمَّنْ سَلِمَ فَنَعِمَ

नेकियों मे वाफ़र हो। और जिनको सलामती के साथ नेमत मिली। और कामयाबी के साथ मुनाफ़े

وَ فَازَ فَغَنِمَ وَاكْفِنِيْ شَرَّ مَا اَسْلَفْتُ وَاعْصِمْنِيْ مِنَ الْاِزْدِيَادِ

हासिल हुए। मुझे पिछले आमाल के शर से महफ़ूज़ रखना। और मासियतों मे इज़ाफ़े से रोके

فِيْ مَعْصِيَتِكَ وَ حَبِّبْ اِلَيَّ طَاعَتَكَ وَ مَا يُقَرِّبُنِيْ مِنْكَ وَ يُزْلِفُنِيْ

रखना। मेरे लिए अपनी इताअत और तक़रर्रूब के आमाल को महबूब बना दे। ख़ुदाया हर भागने

عِنْدَكَ سَيِّدِيْ اِلَيْكَ يَلْجَأُ الْهَارِبُ وَ مِنْكَ يَلْتَمِسُ الطَّالِبُ وَ

वाला तेरी पनाह चाहता है और हर तलबगार तुझसे इलतिमास करता है। और हर तौबा करने

عَلٰى كَرَمِكَ يُعَوِّلُ الْمُسْتَقِيْلُ التَّائِبُ اَدَّبْتَ عِبَادَكَ بِالتَّكَرُّمِ

वाला तेरे करम पर भरोसा करता है। के तूने अपने बंदोंको करम सिखाया है तो तू सबसे ज़्यादा

وَاَنْتَ اَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ وَاَمَرْتَ بِالْعَفْوِ عِبَادَكَ وَاَنْتَ الْغَفُوْرُ

करम करने वाले है। तूने अपने बंदों को माफ़ी का हुक्म दिया है। तू तो ग़फ्फूर व रहीम है। ख़ुदाया

الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ فَلَا تَحْرِمْنِىْ مَا رَجَوْتُ مِنْ كَرَمِكَ وَلَا تُؤْيِسْنِىْ

मै तेरे जिस करम की उम्मीद रखता हूँ। उस से महरूम न करना। और जो नेमतें चाहता हूँ। उन

مِنْ سَابِغِ نِعَمِكَ وَلَا تُخَيِّبْنِىْ مِنْ جَزِيْلِ قِسَمِكَ فِىْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ

से मायूस न करना। और आज की रात जो अहले ताअत का बेहतरीन हिस्सा है उससे नाउम्मीद

لِاَهْلِ طَاعَتِكَ وَ اجْعَلْنِىْ فِىْ جُنَّةٍ مِنْ شِرَارِ بَرِيَّتِكَ رَبِّ اِنْ لَمْ

न करना। बदतरीन बंदों के शर से अपनी पनाह मे रखना। ख़ुदाया अगर मै इसका अहल नही हूँ।

اَكُنْ مِنْ اَهْلِ ذٰلِكَ فَاَنْتَ اَهْلُ الْكَرَمِ وَ الْعَفْوِ وَ الْمَغْفِرَةِ وَجُدْ

तू तो अहले करमो अफ़ू मग़ाफ़िरत है। अब मुझपर वो करम कर जिसक तू अहल है। वो नही

عَلَىَّ بِمَا اَنْتَ اَهْلُهٗ لَا بِمَا اَسْتَحِقُّهٗ فَقَدْ حَسُنَ ظَنِّىْ بِكَ وَ تَحَقَّقَ

जिसका मै हक़दार हूँ। मै तुझसे हुस्ने ज़न रखता हूँ। और मेरी उम्मीद तेरी ही ज़ात से है। मेरा नफ़्स

رَجَآئِىْ لَكَ وَ عَلِقَتْ نَفْسِىْ بِكَرَمِكَ فَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّحِمِيْنَ وَ اَكْرَمُ

तेरे करम से वाबस्ता है के तू बेहतरीन रहमकरने वाला और ऐ बेहतरीन करम करने वाला है।

اَلْاَكْرَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ وَاخْصُصْنِيْ مِنْ كَرَمِكَ بِجَزِيْلِ قِسَمِكَ وَاَعُوْذُ

ख़ुदाया अपने करम के बेहतरीन हिस्से से मुझको मख़सूस करदे। और मै तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी

بِعَفْوِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاغْفِرْ لِيَ الذَّنْبَ الَّذِيْ يَحْبِسُ عَلَيَّ الْخُلُقَ

की पनाह मे आया हूँ। लेहाज़ा मेरे गुनाहों को माफ़ करदे जो अख़लाक को बिगाड़ें और रिज़्क़ को

وَ يُضَيِّقُ عَلَيَّ الرِّزْقَ حَتّٰى اَقُوْمَ بِصَالِحِ رِضَاكَ وَ اَنْعَمَ بِجَزِيْلِ

तंग बना दें। ताके मै तेरी रज़ा के लिए नेक काम कर सकूँ। और तेरी अताओं से बेहरावर हो सकूँ।

عَطَآئِكَ وَ اَسْعَدَ بِسَابِغِ نَعْمَآئِكَ فَقَدْ لُذْتُ بِحَرَمِكَ وَ تَعَرَّضْتُ

तेरी मुकम्मल नेमतों से नेक बख्त हो सकूँ। मै तेरे हरम की पनाहगाह मे तेरे करम का तलबगार

لِكَرَمِكَ وَاسْتَعَذْتُ بِعَفْوِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَبِحِلْمِكَ مِنْ غَضَبِكَ

हूँ। तेरे अज़ाब के मुक़ाबले मे तेरी माफ़ी का तालिब हूँ। और तेरे गज़ब के मुक़ाबले मे तेरा हिल्म

فَجُدْ بِهَا سَئَلْتُكَ وَ اَنِلْ مَا الْتَمَسْتُ مِنْكَ اَسْئَلُكَ بِكَ لَا بِشَيْءٍ

चाहता हूँ। ख़ुदाया जो माँग रहा हूँ वो देदे। और जिसकी इल्तेमास कर रहा हूँ। वो अता करदे। मै

هُوَ اَعْظَمُ مِنْكَ.

तुझसे तेरे ही वसीले से सवाल करता हूँ। न किसी ऐसे के वसीले से जो तुझसे बालातर हो।

उसके बाद सजदे में जाए और बीस बार कहे: يَارَبِّ सात बार: يَااَللّٰهُ फिर सात बार: لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ उसके बाद दस बार: مَاشَآءَاللّٰهُ उसके बाद दस बार: لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तेंजाह ीनपअ रकढ़प तावलस रप (अ) दमम्होम लेआ ोदमम्होम रफि रऔ ।रेक बलत
ीभ बत ीगोंह रबारब के तारतक़ के शरीब तेंजाह ीकसउ रगअ मसक़ ीक ादख़ु ।ागरक ारपू बस से मरक ोलज़फ़ नेपअ रागदरिवरप
ीभ आदु हय में बश सइ के है ायामरफ़ ने ीमअफ़क रऔ ीसतू ख़शे :हरायग :ढ़ेप

اِلٰهِی تَعَرَّضَ لَکَ فِی هٰذَا اللَّیْلِ الْمُتَعَرِّضُونَ وَقَصَدَکَ

ख़ुदाया आज की रात तमाम तलबगारों ने तुझसे तलब किया है। तमाम मुरीदों ने तेरा इरादा

الْقَاصِدُونَ وَاَمَّلَ فَضْلَکَ وَمَعْرُوفَکَ الطَّالِبُونَ وَلَکَ فِی هٰذَا

किया है। और तमाम साएलों ने तेरे फ़ज़्ल व करम से उमम्मीद रखी है। आज की रात तेरी तरफ़

اللَّیْلِ نَفَحَاتٌ وَجَوَائِزُ وَعَطَایَا وَمَوَاهِبُ تَمُنُّ بِهَا عَلٰی مَنْ تَشَاءُ

से अलताफ़ हैं, जाएजे हैं, अताया हैं, इनामात हैं। तू जिनको चाहता है दे देता है। और जिन पर

مِنْ عِبَادِکَ وَتَمْنَعُهَا مَنْ لَمْ تَسْبِقْ لَهُ الْعِنَایَةُ مِنْکَ وَهَا اَنَا ذَا

तेरी इनायत नही है। उनहें मना कर देता है। मै तो तेरा बंद ए हकीर व फ़क़ीर और तेरे फ़ज़्ल व

عُبَیْدُکَ الْفَقِیرُ اِلَیْکَ الْمُؤَمِّلُ فَضْلَکَ وَمَعْرُوفَکَ فَاِنْ کُنْتَ

करम का उम्मीदवार हूँ। ख़ुदाया आज की रात अगर तूने किसी बंदे पर फ़ज़्ल किया है और अगर

یَا مَوْلَایَ تَفَضَّلْتَ فِی هٰذِهِ اللَّیْلَةِ عَلٰی اَحَدٍ مِنْ خَلْقِکَ وَعُدْتَ

किसी बंदे पर कोई मेहेरबानी की है। तो मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत फ़ाज़ल फ़रमा। जो

عَلَيْهِ بِعَائِدَةٍ مِنْ عَطْفِكَ فَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ الطَّيِّبِيْنَ

तेरे तय्यब व ताहिर मुंताख़िब व फ़ाज़िल बंदे हैं। और मुझ पर अपने फ़ज़्ल व करम से मेहेरबानी

الطَّاهِرِيْنَ الْخَيِّرِيْنَ الْفَاضِلِيْنَ وَجُدْ عَلَيَّ بِطَوْلِكَ وَمَعْرُوفِكَ يَا رَبَّ

कर देना। ऐ आलमीन के पालने वाले अल्लाह की रहमत हो हज़रत मुहम्मद ख़ातिमुन नबीईन पर

الْعَالَمِيْنَ وَصَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَآلِهِ الطَّاهِرِيْنَ

और उनकी आले ताहिरीन पर। और सलाम हो बेशुमार उन सब पर। अल्लाह हम्द के लाएक़

وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا اِنَّ اللّٰهَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَدْعُوكَ كَمَا اَمَرْتَ

भी है और मजीद भी है। ख़ुदाया मै तुझसे वैसे ही दुआ करता हूँ जैसे तूने हुक्म दिया तो तू ऐसेही

فَاسْتَجِبْ لِي كَمَا وَعَدْتَ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

क़ुबूल करलेना जैसे तूने वादा किया है। के तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नही करता है।

यह वह दुआ है जो सहर के समय नमाज़े शफ्अ के बाद भी पढ़ी जाती है।
बारह: नमाज़े शब की और नमाज़े शफ्अ की हर दो रकत के बाद और नमाज़े वत्र के बाद वह दुआएं पढें जो शेख़ो सय्यद ने नक़्ल की हैं।
तेरह: वह सजदे और दुआएं बजा लाए जो रसूले अक्रम (स) से मनक़ूल हैं। जिनमें से एक रिवायत वह है जो शेख़ ने हम्माद बिन ईसा से अबान बिन तग़लब के वास्ते से नक़्ल की है के इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ) ने फ़रमाया के जब नीमए शाबन की रात आई तो रसूले अक्रम (स) हुजरए आयशा में गये। आधी रात के बाद आप उठे और इबादत में मशग़ूल हो गए। उसके बाद आयशा की आँख खुली तो देखा के पैंगमबर हुजरे में मौजूद नहीं हैं। ख़याल पैदा हुआ के शायद किसी और ज़ौजा के पास चले गए हैं। लेहाज़ा चादर संभाल

कर तलाश में निकल पड़ी और सब पत्नियों के कमरों में ढूंढा तो देखा के हज़रत सजदे में हैं। और चादर जैसे ज़मीन से चिपकी हुई हो। देखा के आप सजदे में हैं और कह रहे हैं:

سَجَدَلَكَ سَوَادِیْ وَخَیَالِیْ وَ اٰمَنَ بِكَ فُؤَادِیْ هٰذِهٖ یَدَایَ

ऐ अल्लाह तेरी बारगाह मे मेरा वुजूद मेरा ख़याल सजदा रेज़ है। मेरा दिल तेरी आस्था रखता है।

وَمَا جَنَیْتُهٗ عَلٰی نَفْسِیْ یَا عَظِیْمُ تُرْجٰی لِكُلِّ عَظِیْمٍ اِغْفِرْ

ये मेरे दोनो हाथ व उनके आमाल हैं। जो मैने अंजाम दिये हैं। तू ख़ुदा ए अज़ीम है। हर अज़ीम के

لِیَ الْعَظِیْمَ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذَّنْبَ الْعَظِیْمَ اِلَّا الرَّبُّ

लिए तुझसे ही उम्मीद की जती है। मेरे अज़ीम गुनाहों को माफ़ करदे। इस लिए के अज़ीम गुनाहों

उसके बाद हज़रत ने सर उठाया और दोबारा सजदे में गए। तो आयशा ने सुना के कह रहे हैं:

الْعَظِیْمُ.

को सिवाय ख़ुदाए अज़ीम के कोई माफ़ नही कर सकता है।

اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِیْ اَضَآئَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرَضُوْنَ

ख़ुदाया मै तेरे नूरे ज़ात से पनाह चाहता हूँ। जिस्से ज़मीनो आसमान रौशन हैं। और अंधेरे

وَانْكَشَفَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَ صَلَحَ عَلَیْهِ اَمْرُ الْاَوَّلِیْنَ وَ الْاٰخِرِیْنَ

छट गए हैं। और अव्वलीन व आाख़िरिन के उमूर की इसलाह हुई है। के अचानक तेरा

مِنْ فُجَاْةِ نَقِمَتِكَ وَمِنْ تَحْوِیْلِ عَافِیَتِكَ وَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ

अज़ाब नाज़िल न हो जाए। और ये आफ़ियत पलट न जाए। ये नेमतें जाएल न हो जाएं।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ قَلْبًا تَقِیًّا نَقِیًّا وَمِنَ الشِّرْكِ بَرِیْٓـئًا لاَ کَافِرًا وَلاَ

ख़ुदाया मुझे वो दिल दे जो ख़ाफ़जदा पाकीज़ा और शिर्क से बरी हो। न काफ़िर हो न शक़ी

شَقِیًّا۔

हो।

फिर हज़रत ने दोनों रूखसार ख़ाक पर रखे और यह दुआ की:

عَفَّرْتُ وَجْھِی فِی التُّرَابِ وَحُقَّ لِی اَنْ اَسْجُدَلَكَ.

मै अपने चेहरे को ख़ाक पर रखे हुए हूँ। और ये मेरा फ़र्ज़ है के मै तुझको सजदा करूँ।

उसके बाद जब रसूले अक्रम (स) ने उठना चाहा तो आयशा दौड़ कर अपने बिस्तर पर चली गई। आप तशरीफ़ लाए और देखा के सो रही हैं। फ़रमाया यह क्या तरीका है? क्या तुम्हें मालूम नहीं है के यह कौनसी रात है? यह शाबान की पंद्रहवीं शब है। इसमें रोज़ी बाँटी जाती है। ज़िदगियां लिखी जाती हैं और हज में जानेवालों का फ़ैसला होता है। ख़ुदा की क़सम आज की रात परवरदिगारे आलम इस कसरत से बंदो को मा॰फ करता है जो कबीला बनी कलब के बकरीयों के बालों से भी ज्यादा है। और ख़ुदा मलाएका को आसमान से ज़मीन की तऱफ ऩाजल करता है।

चौदह: नमाज़े ज़ाफरे तय्यार अदा करे जैसा के शेख़ ने इमामे ऱजा (अ) से न॰क्ल किया है।

पंद्रह: आज की शब की नमा॰जों को बजा लाए जो बहुत ज्यादा हैं। जिनमें से एक नम़ाज वह है जिसकी रिवायत अबू या सिनानी ने इमामे ज़ाफरे साद्कि (अ) से ऩक्ल की है। और उन दोनों बुज़ुर्गवारों ने तीस बुज़ुर्ग व्यक्तियों से रिवायत ऩक्ल की है।

जब नीमए शाबान आए तो चार रकत नमाज़ अदा करे और हर रकत में सूरह हम्द के बाद सौ बार सूरह तौहीद पढ़े। नमाज़ के बाद कहे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اِلَیْكَ فَقِیْرٌ وَمِنْ عَذَابِكَ خَائِفٌ مُسْتَجِیْرٌ اَللّٰهُمَّ

ख़ुदाया मै तेरा ही फ़क़ीर हूँ और तेरे अज़ाब से डरता हूँ। मालिक मेरे नाम को बदल न देना। और

لَا تُبَدِّلِ اسْمِیْ وَلَا تُغَیِّرْ جِسْمِیْ وَلَا تَجْهَدْ بَلَائِیْ وَلَا تُشْمِتْ

मेरे जिस्म को दिगरगूँ न कर देना। मेरी बालाओं को सख्त न कर देना और मेरे दुश्मनो को ताने

بِیْ اَعْدَائِیْ اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ بِرَحْمَتِكَ مِنْ

का माक़ा न देना। ख़ुदाया मै तेरे अज़ाब से तेरी माफ़ी की पनाह चाहता हूँ। और तेरे इक़ाब से

عَذَابِكَ وَاَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ جَلَّ

तेरी रहमत का सहाता चाहता हूँ। तेरी नाराज़गी से तेरी रिज़ा और तुझसे तेरी ही पनाह चाहता हूँ।

ثَنَاؤُكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِكَ وَفَوْقَ مَا یَقُوْلُ

तेरी सना जलील है। जिस तरह तूने अपनी तारीफ़ की है और उससे बालातर है जो तमाम तारीफ़

الْقَائِلُوْنَ

करनेवाले करते हैं।

वाज़ेह रहे के इस रात में सौ रकत नमाज़ की भी बेहद फ़ज़ीलत वारिद हुई है जिसमें हर रकत में सूरह हम्द के बाद दस बार सूरह तौहीद पढ़ा जाए। और माहे रजब के आमाल में उस छे रकत नमाज़ का तरीक़ा भी बयान किया जा चुका है। जिसमें सूरह हम्द, यासीन, सूरह मुल्क और तौहीद पढ़ा जाता है।

पंद्रह शाबान का दिन

बेहतरीन ईद का दिन है जो हज़रत इमामे अस्र (अ) का दिन है। और इस

दिन में हर ज़मान और हर मकान में हज़रत की ज़ियारत और आपके ज़ुहूर के लिए दुआ मुस्तहब है। ख़ुसूसियत के सामर्रह और सरदाब में यह दुआ की जाए। के आप का ज़ुहूर यक़ीनी है और आपकी हुकूमत भी क़तई। आप ही वह हैं जो ज़ुल्मो जौर से भरी हुई दुनिया को अद्लो इन्साफ़ से भर देंगे।

शाबान के बाक़ी आमाल

इमामे रज़ा (अ) से नक़्ल किया गया है के जो व्यक्ति भी शाबान के आाख़िर में तीन दिन रोज़ा रख कर उसे माहे रमज़ान से मिला दे उसको दो महीने का सवाब मिल जाएगा।

अबु सल्त हरवी ने रिवायत की है के शाबान के आख़री जुमा में इमामे रज़ा (अ) की ख़िदमत में हाज़र हुआ। तो आप ने फ़रमाया के अबू सल्त माहे शाबान का ज़्यादा हिस्सा गुज़र गया है। अब यह आख़री जुमा है। लेहाज़ा जो कोताहियाँ हो गई हैं उनकी तलाफ़ी करो और वह काम करो जो मुफ़ीद है। दुआ और इस्तेग़फ़ार करो। तिलावते क़ुरआन करो गुनाहों से तौबा करो ताके जब माहे मुबारक आए तो बिल्कुल पाक साफ़ रहो और ख़बरदार तुम्हारी गर्दन पर किसी की अमानत और कोई हक न रह जाए मगर यह के अदा करदो और ख़बरदार दिल में किसी का कीना न रहे। और अगर कोई गुनाह किया है तो उससे तौबा करो और उसे तर्क कर दो। वह ख़ुदा है उसी पर भरोसा करो और हर हाल में उसी पर तवक्कुल करो और इस दुआ को मुसलसल पढ़ते रहो। यक़ीनन इस महीने में परवरदिगार बेशुमार बंदों को आतेशि जहन्नम से आज़ाद करता है:

اَللّٰهُمَّ اِنْ لَمْ تَكُنْ غَفَرْتَ لَنَا فِيْمَا مَضٰى مِنْ شَعْبَانَ فَاغْفِرْ لَنَا

ख़ुदाया अगर तूने शाबान के महीने के पिछले दिनों मे हमे माफ़ नही किया है तो इन बाक़ी दिनों

فِيْمَا بَقِيَ مِنْهُ.

मे हमे बख़्श दे।

शाबान की आख़री शब

हुरमेत माहे रमज़ान के लिए शेख़ तूसी ने हारिस बिन मुग़ीरा नज़री से रिवायत की है के इमामे सादिक़ (अ) शबे आाख़िरे शाबान और शबे अव्वले रमज़ान इस दुआ को पढ़ा करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الشَّهْرَ الْمُبَارَكَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ وَ جُعِلَ

ख़ुदाया ये वो मुबारक महीना है जिसमे क़रआन भेजा गया है। और जिसे लोगों के लिए हिदायत बनाया गया

هُدًی لِلنَّاسِ وَ بَیِّنَاتٍ مِنَ الْهُدٰی وَ الْفُرْقَانِ قَدْ حَضَرَ فَسَلِّمْنَا

है। और जिसमे हिदायत की निशानियाँ क़रार दी गई हैं। अब ये महीना आ गया है। हमे इसमे सलामत रखना

فِیْهِ وَ سَلِّمْهُ لَنَا وَ تَسَلَّمْهُ مِنَّا فِیْ یُسْرٍ مِنْكَ وَ عَافِیَةٍ یَا مَنْ اَخَذَ

और इसे हमारे लिए सलामती क़रार देना। सहूलत व आसानी के साथ तू हमारे आमाल को क़ुबूल कर लेना।

الْقَلِیْلَ وَ شَكَرَ الْكَثِیْرَ اِقْبَلْ مِنِّی الْیَسِیْرَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ

ऐ वो जो मुख़तसर आमाल को लेलेता है और कसीर पर शुक्रिया अदा करता है। हमारे हक़ीर आमाल को

تَجْعَلَ لِیْ اِلٰی كُلِّ خَیْرٍ سَبِیْلاً وَ مِنْ كُلِّ مَا لاَ تُحِبُّ مَانِعًا یَا اَرْحَمَ

क़ुबूल करले। ख़ुदाया मै तुझसे विन्ती करता हूँ के मेरे लिए हर ख़ैर का रास्ता बना दे। और हर शर के लिए

الرَّاحِمِیْنَ یَا مَنْ عَفَا عَنِّیْ وَ عَمَّا خَلَوْتُ بِهٖ مِنَ السَّیِّئَاتِ یَا مَنْ

हर बुराई के लिए एक रूकावट क़रार देदे। के तू सब से ज़्यादा मेहेरबान है। ऐ वो जिसने मुझे माफ़ किया है

لَمْ يُؤَاخِذْنِيْ بِارْتِكَابِ الْمَعَاصِيْ عَفْوَكَ عَفْوَكَ يَا كَرِيْمُ اِلٰهِيْ وَ

और मेरी उन बुराईयों को माफ़ किया है जो मैने एकांत मे की हैं। और मासीयतों मे पड़ने की सज़ा नही दी

عَظْتَنِيْ فَلَمْ اَتَّعِظْ وَزَجَرْتَنِيْ عَنْ مَحَارِمَكَ فَلَمْ اَنْزَجِرْ فَمَا عُذْرِيْ

है। ख़ुदाया माफ़ करदे माफ़ करदे। ऐ करीम मुझे माफ़ करदे। मालिक तूने मुझे नसीहत की तो मैने क़ुबूल

فَاعْفُ عَنِّيْ يَا كَرِيْمُ عَفْوَكَ عَفْوَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الرَّاحَةَ

न की और गुनाहों से रोका तो मै रूका नही। अब मेरा बहाना कया है? अब तू ही माफ़ करदे। ऐ करीम तेरी

عِنْدَ الْمَوْتِ وَ الْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ عَظُمَ الذَّنْبُ مِنْ عَبْدِكَ

माफ़ी तेरी माफ़ी चाहता हूँ। ख़ुदाया मै तुझसे मौत के समय राहत और हिसब के समय माफ़ी माँगता हूँ। तेरे

فَلْيَحْسُنِ التَّجَاوُزُ مِنْ عِنْدِكَ يَا اَهْلَ التَّقْوٰى وَيَا اَهْلَ الْمَغْفِرَةِ

बंदे के गुनाह बहुत बड़े हैं। लेहाज़ा तेरी माफ़ी भी हसीन होनी चाहिए। ऐ तक़वा वाले ऐ मग़िफ़रत वाले तेरी

عَفْوَكَ عَفْوَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَبْدُكَ بْنُ عَبْدِكَ بْنُ اَمَتِكَ ضَعِيْفٌ

माफ़ी तेरी माफ़ी चाहता हूँ। ख़ुदाया मै तेरा बंदा तेरे बंदे का बेटा और तेरी कनीज़ का बेटा हूँ। कमज़ोर हूँ तेरी

فَقِيْرٌ اِلٰى رَحْمَتِكَ وَ اَنْتَ مُنْزِلُ الْغِنٰى وَ الْبَرَكَةِ عَلَى الْعِبَادِ قَاهِرٌ

रहमत का मोहताज हूँ। तू बेनियाज़ है और बरकत भेजने वाला है। बंदों पर ताक़त व ग़ल्बा रखनेवाला है।

مُقْتَدِرٌ اَحْصَيْتَ اَعْمَالَهُمْ وَ قَسَمْتَ اَرْزَاقَهُمْ وَ جَعَلْتَهُمْ مُخْتَلِفَةً

तूने उनके आमाल का हिसाब कर लिया है और रोज़ी को बांट दिया है उनके लिए मुख़तलिफ़ रंग व ज़बाने

اَلْسِنَتُهُمْ وَاَلْوَانُهُمْ خَلْقًا مِنْ بَعْدِ خَلْقٍ وَلَا يَعْلَمُ الْعِبَادُ عِلْمَكَ

बनाई हैं। मुसलसल ख़ल्क किया है। तेरे बंदों के पास तेरा इल्म नही है और तेरे बंदों के इख़्तियार मे तेरा

وَلَا يَقْدِرُ الْعِبَادُ قَدْرَكَ وَ كُلُّنَا فَقِيْرٌ اِلٰى رَحْمَتِكَ فَلَا تَصْرِفْ عَنِّىْ

फ़ैसला नही है। हम सब तेरी रहमत के फ़क़ीर हैं। लेहाजा अपने रूख़ को हमसे मोड़ न लेना। हमे अमल मे,

وَجْهَكَ وَاجْعَلْنِىْ مِنْ صَالِحِىْ خَلْقِكَ فِى الْعَمَلِ وَ الْاَمَلِ وَ الْقَضَآءِ

उम्मीद मे, क़ज़ा व क़दर मे अपने नेक बंदों मे क़रार दे देना। ख़ुदाया ज़िंदा रखना तो बेहतरीन हयात के साथ।

وَ الْقَدَرِ اَللّٰهُمَّ اَبْقِنِىْ خَيْرَ الْبَقَآءِ وَ اَفْنِنِىْ خَيْرَ الْفَنَآءِ عَلٰى مُوَالَاتِهٖ

और उठा लेना तो बेहतरीन मौत के साथ। अपने औलिया की मोहब्ब्त और अपने दुश्मनों की दुश्मनी पर

اَوْلِيَآءِكَ وَ مُعَادَاةِ اَعْدَآئِكَ وَ الرَّغْبَةِ اِلَيْكَ وَ الرَّهْبَةِ مِنْكَ وَ

अपनी बारगाह की रग़बत और अपने जलाल का भय। ख़ुज़ू, वफ़ा, जज़बा ए तसलीम, अपनी किताब की

الْخُشُوْعِ وَ الْوَفَآءِ وَ التَّسْلِيْمِ لَكَ وَ التَّصْدِيْقِ بِكِتَابِكَ وَ اتِّبَاعِ

तसदीक और अपने रसूल की सुन्नत की पैरवी की तौफ़ीक़ इनायत कर। ख़ुदाया जो मेरे दिल मे शक, रैब,

سُنَّةِ رَسُوْلِكَ اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ فِىْ قَلْبِىْ مِنْ شَكٍّ اَوْ رِسْبَةٍ اَوْ جُحُوْدٍ اَوْ

इन्कार, मायूसी, गुरूर, अकड़, तकब्बुर, रियाकारी, ख़ुद नुमाई, इख़्तिलाफ़, निफ़ाक़, कुफ़्र, फ़िस्क, इसयान,

قُنُوْطٍ اَوْ فَرَحٍ اَوْ بَذَخٍ اَوْ بَطَرٍ اَوْ خُيَلَآءَ اَوْ رِيَآءٍ اَوْ سُمْعَةٍ اَوْ شِقَاقٍ

हर बुराई या कोई न पसंदीदा चीज़ हो तो मै तुझ से इलतिजा करता हूँ के उसकी जगह पर अपने वादे का

اَوْ نِفَاقٍ اَوْ كُفْرٍ اَوْ فُسُوْقٍ اَوْعِصْيَانٍ اَوْ عَظَمَةٍ اَوْ شَيْءٍ لَا تُحِبُّ

ईमान अपने अहद की वफ़ा अपने क़ज़ा व क़दर की रिज़ा दुनिया मे ज़ोहोद, आख़िरत की रग़बत, सुकून,

فَاَسْئَلُكَ يَارَبِّ اَنْ تُبَدِّلَنِيْ مَكَانَهٗ اِيْمَانًا بِوَعْدِكَ وَوَفَآءً بِعَهْدِكَ

इतमेनान और ख़ालिस तौबा इनायत कर। के मै ये सब तुझही से माँग रहा हूँ। ऐ रब्बुल आलमीन। ख़ुदाया

وَ رِضًا بِقَضَآئِكَ وَ زُهْدًا فِي الدُّنْيَا وَ رَغْبَةً فِيْمَا عِنْدَكَ وَ اَثَرَةً وَ

तेरे हिल्म की बिना पर तेरी मासियत की जाती है और तेरे जूद व करम की बिना पर तेरी इताअत की जाती

طُمَاْنِيْنَةً وَتَوْبَةً نَصُوْحًا اَسْئَلُكَ ذٰلِكَ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ اِلٰهِيْ اَنْتَ

है। और तू वैसे बरताओ करता है जैसे कोई मासियत की ही नही गई है। हालाँके मै बंदे गुनेहगार और जिन

مِنْ حِلْمِكَ تُعْطٰى وَمِنْ كَرَمِكَ وَجُوْدِكَ تُطَاعُ فَكَاَنَّكَ لَمْ تُعْصَ

लोगों ने मासियत नही की है सब तेरी ही ज़मीन के रहनेवाले हैं। लेहाज़ा अपने फ़ज़्ल से हम पर जूद व करम

وَ اَنَا وَمَنْ لَمْ يَعْصِكَ سُكَّانُ اَرْضِكَ فَكُنْ عَلَيْنَا بِالْفَضْلِ جَوَادًا

कर। और अपनी नेकियाँ मुसलसल इनायत कर। ऐ बेहतरीन रहेम करनेवाले। अल्लाह रहमत भेजे मुहम्मद

وَ بِالْخَيْرِ عَوَّادًا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ صَلٰوةً

और उनकी आल पर दाएमी सलवात जिसका कोई शुमार न हो सके जिसका कोई अदद न हो। और जिसकी

دَآئِمَةً لَا تُحْصٰى وَلَا تَعُدُّ وَلَا يَقْدِرُ قَدْرَهَا غَيْرُكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

मिक़दार कोई तै न कर सके। ऐ सबसे ज़्यादा मेहेरबानी करनेवाले।